

SHUKR KE FAZAIL (HINDI)

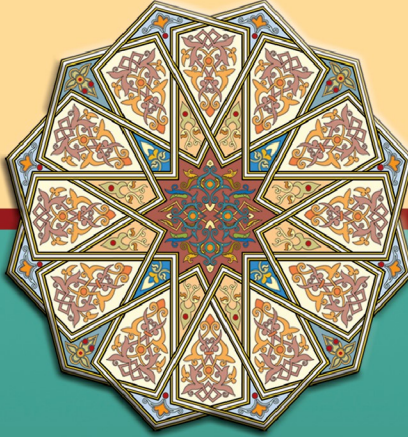


शुक्र की अहमियत और फ़वाइद पर मुश्तमिल 204 बिवायात
व हिकायात का मदनी गुलदस्ता

الشُّكْرُ لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ

तर्जमा बनाम

शुक्र के फ़ज़ाइल



-: मुअलिफ़ :-

इमाम अबू बक्र अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद करशी
अल मा'रुफ़ इमाम इब्ने अबी दुन्या

رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ

(मुतवफ़्फ़ा 281 हिजरी)



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा
 मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अन्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़
 लीजिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
 عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर
 अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले।

(سُطَّرَفَ ج ١ ص ٤٠ دار الفکر بیروت)

नोट : अब्बल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना
 व बक़ीअ व मरिफ़रत
 13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.



कियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : सब से ज़ियादा हसरत
 कियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ
 मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म
 हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने
 न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)।

(تاریخ دمشق لابن عساکر ج ٥١ ص ١٣٨ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में
 आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुज़अ फ़रमाइये।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "शुक्र के फ़ज़ाइल"

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

हुरूफ़ की पहचान

फ = ف	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = س	ठ = ٹ	ट = ت	थ = ث	त = ت
ह = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڈھ	ड़ = ڈ	र = ر	ज़ = ز
ज़ = جھ	स = س	श = ش	स = س	ज़ = ز
फ़ = فھ	ग़ = غ	अ = ا	ज़ = جھ	त = ت
घ = گھ	ग = گ	ख = خ	क = ک	क़ = ق
ह = ح	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = عی	इ = ا	ऐ = اے	ए = اے	य = ی

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

शुक्र की अहम्मियत और फ़वाइद पर मुश्तमिल 204 रिवायात व
हिकायात का मदनी गुलदस्ता

الشُّكْرُ لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ

तर्जमा बनाम

शुक्र के फ़ज़ाइल

-: मुअल्लिफ़ :-

इमाम अबू बक्र अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद करशी अल मा 'रूफ़

رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ

(मुतवफ़्फ़ा 281 हि.)

-: पेशकश :-

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा 'वते इस्लामी)

शो 'बए तराजिमे कुतुब

-: नाशिर :-

मक्तबतुल मदीना

الصلوة والسلام على سيد المرسلين يا محمد يا حبيب الله
وعلى آلِهِ واصحابِهِ باحسان

- नाम किताब : الشُّكْرُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ
 तर्जमा बनाम : शुक्र के फ़ज़ाइल
 मुअल्लिफ़ : इमाम अबू बक्र अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद
 عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ
 मुतर्जिमीन : मदनी उलमा (शो 'बए तराजिमे कुतुब)
 सिने त्बाअत : रबीउल अब्वल 1445 हि., अक्टूबर 2023 ई.

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 18 सफ़रुल मुजफ़्फ़र 1431 हि. हवाला नम्बर : 167

الحمد لله رب العلمين والصلوة والسلام على سيد المرسلين وعلى اله واصحابه اجمعين

तस्दीक़ की जाती है कि किताब “الشُّكْرُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ” के तर्जमे

“शुक्र के फ़ज़ाइल” (उर्दू)

(मतबूआ मक्ताबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे मतालिबो मफ़ाहिम के ए'तिबार से मक्दूर भर मुलाहज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लतियों का जिम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिस तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल

(दा'वते इस्लामी)

03-02-2010

E-mail : hind.printing92@gmail.com

मदनी इल्तिजा : किसी और को यह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	सफ़्हा	मज़ामीन	सफ़्हा
इस किताब को पढ़ने की निधयतें	5	कौन सी ने'मत मुसीबत व आज़माइश है ?	28
अल मदीनतुल इल्मिय्या का तआरुफ़	6	अल्लाह ﷻ की महबूबत पाने का एक ज़रीआ	28
पहले इसे पढ़ लीजिये !	8	अल्लाह ﷻ बन्दे को अपनी ने'मतें याद दिलाएगा	29
तआरुफ़े मुसनिफ़	14	बारगाहे खुदावन्दी में हाज़िरी.....	30
हिस्साए अब्वल		एक ने'मत सब नेकियां ले जाएगी	30
ने'मत की हिफ़ाज़त का नुस्खा	20	किसी ने'मत का शुक्र अदा न कर सकूंगा	30
ने'मतों का एहतिराम किया करो	20	शैतान शुक्र में रुकवट डालता है	31
ने'मतों में ज़ियादती का बाइस	21	ने'मतें महफूज़ करने का ज़रीआ	31
दुआए शुक्र	21	शुक्र, सब्र से ज़ियादा महबूब है	31
सय्यिदुना दावूद عليه الصلوة والسلام की मुनाजात	22	येह शाकिरीन का तरीका नहीं	32
सय्यिदुना मूसा عليه الصلوة والسلام की मुनाजात	22	इमाम औज़ाई رحمه الله का रिक्कत अगेज बयान	32
﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ﴾ कहने की बरकत	23	ना फ़रमानी के बा वुजूद ने'मतें	34
बहुत बड़ी ने'मत	23	अल्लाह ﷻ की तरफ़ से ढील	34
शुक्र के उम्दा अल्फ़ाज़	24	ज़िक्रे ने'मत भी शुक्र है	34
सय्यिदुना हसन बसरी رحمه الله का अन्दाज़े शुक्र	24	दुन्या व आख़िरत की भलाई	34
सय्यिदुना आदम عليه الصلوة والسلام का शुक्र	25	तोता बोलने लगा/मैंडक की तस्बीह	35
बैतुल ख़ला से निकलने पर शुक्रे इलाही	25	सय्यिदुना दावूद عليه الصلوة والسلام की तस्बीह	36
नूह عليه السلام को अब्दन शकूर कहने की वज्ह	26	शुक्र गुज़ार से सरकार عسى الله تعالى عليه وسلم का प्यार	36
खाने के बा'द की एक दुआ	26	ज़िक्रे इलाही भी शुक्र है	37
दुआए मुस्तफ़ा عسى الله تعالى عليه وسلم	27	दो ने'मतें	38
नाशुकी बाइसे अज़ाब है	27	अदाए शुक्र का एक तरीका	38
ने'मत और शुक्र का तअल्लुक	28	अली बिन हुसैन رضي الله تعالى عنهما की दुआ	38
गुनाहों को छोड़ देना भी शुक्र है	28	ऐ इब्ने आदम	39

मज़ामीन	सफ़्हा	मज़ामीन	सफ़्हा
बारगाहे खुदावन्दी ﷺ मे इल्लित्जाएं	40	हर वक़्त नमाज़ पढ़ने वाला घराना	52
सुब्द किस ह़ाल में की ?	40	नया लिबास पहनने की दुआ और इस की फ़ज़ीलत	52
करमे इलाही और हिल्लमे इलाही	41	शुक्र गुज़ार बख़्शा गया	53
रब्बे करीम ﷺ की करम नवाज़ियां	41	शुक्र और अफ़िज़्यत दोनों का सुवाल करो	53
बख़्शिश के बहाने	41	अफ़िज़्यत की अ़लामत	53
रिज़क़ का ज़िम्मा	42	तीन ने'मतें	54
ने'मतों का इज़हार रब ﷺ को पसन्द है	42	ने'मत के ज़रीए ना फ़रमानी न की जाए	54
इज़हारे ने'मत में तकब्बुर हो न इस्राफ़	43	शुक्र के मुतअल्लिक़ चन्द अश़अर	55
खुदा ﷺ का प्यारा बन्दा और ना पसन्दीदा बन्दा	44	ऐ काश ! हालते शुक्र में मौत नसीब हो जाए	55
मुसीबत पर हम्द व शुक्र करना चाहिये	44	एक आ'राबी का अन्दाज़े शुक्र	56
ने'मत में फ़ौरी इज़ाफ़ा चाहिये तो....	45	येह ने'मत का कैसा बदला है ?	56
आधा ईमान	45	बुख़ार से शिफ़ा की दुआ	56
ने'मत का ज़िक्र भी शुक्र है	46	हलाक़त से बचाने वाले आ'माल	57
शुक्र नुक्सान से बचाता है	46	ने'मत में हुज्जत और तावान भी है	57
नाशुक्रो से ने'मत अज़ाब बन जाती है	46	जन्नतियों और जहन्नमियों के तसब्बुर ने रुला दिया	58
ऐसे शुक्र गुज़ार भी होते हैं	46	ने'मतों की क़द्र जानना चाहो तो.....!	58
इन्सान बड़ा ना शुक्रा है	47	उस का इल्म कम और अज़ाब क़रीब है	58
ने'मत का चर्चा करना भी शुक्र है	47	मैं तुम से येही चाहता था	59
शुक्र और अफ़िज़्यत	48	ज़ाहिर और छुपी ने'मतें	59
शुक्र गुज़ार कुली	48	अफ़ज़ल तरीन ने'मत	60
सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ﷺ का अ़मल	49	हाए रे हुस्नो जमाल !	60
जिन्नात का तिलावत सुन कर जवाब देना	49	येह ने'मतें और सख़ावतें कितनी अज़ीम हैं !	61
पानी पीने के बा'द की दुआ	50	शुक्र बजा लाओ, ने'मतें पाओ	61
ज़ोहद इख़्तियार करने वाले की इस्लाह	51	शुक्र गुज़ार की हिक़ायत	62
मदनी आक़ा صلى الله عليه وسلم की इबादत	51	एक शाकी की इस्लाह का अनोखा अन्दाज़	62

मजामीन	सफ़्हा	मजामीन	सफ़्हा
अफ़ज़ल दुआ और जि़क्र/शुक्र की मन्त	63	खुशी पर सजदए शुक्र सुन्नत है	77
मुकम्मल हम्द	64	खुश ख़बरी देने वाले को चादर अता फ़रमा दी	78
हर ने'मत का शुक्र अदा हो जाए	64	जालिम की मौत पर सजदए शुक्र	78
जिन की महब्बत खुदा आम करे	65	दुरूदो सलाम पढ़ने वाले पर रहमत व सलामती	78
हिस्राए दुवुम		दरवाज़ा खटखटा कर ने'मत की पहचान कराएगा	79
एक निहायत उम्दा दुआ	66	बे सब्रे को नसीहत	79
ख़लीफ़ए अब्वल की दुआ	67	शुक्र पर आमादा करने का बेहतरीन अन्दाज़	79
शुक्र, ने'मत से अफ़ज़ल है	67	रहमत पर यकीन हो तो ऐसा हो.....	80
दुन्या क्यूं पसन्द नहीं ?	68	ईमान, अब्बाह <small>عَبْدُ اللَّهِ</small> की अज़ीम ने'मत है	81
दुन्या से हिफ़ाज़त पर भी शुक्र चाहिये	68	सब से बड़ा करीम	81
रात भर ने'मतों का ही तज़क़िरा रहा	69	बिन्ते बहलूल <small>عليه السلام</small> के दिल की ख़्वाहिश	82
मगर शुक्र रोक लिया	69	इजतिमाअ की बरकात	82
इस्तियद-राज की वज़ाहत	70	मेरे बन्दे को जन्मते अद्न में दाख़िल कर दो	82
ना शुक्र ने हलाक कर डाला	70	पचास साला इबादत और रग का सुकून	83
आईना देखने की एक दुआ	71	सब से छोटी ने'मत	83
इस्लाम एक ने'मत है	71	अफ़ज़ल तरीन शुक्र कौन सा है ?	84
छुपी हुई सलतनत	71	मैं सिर्फ़ इतना जानता हूँ कि.....	84
अहमद बिन मूसा <small>عليه السلام</small> के अशआर	71	जिस को हो सब्र का मज़ा बे सब्री से वोह.....	84
शुक्राने में गुलाम आज़ाद कर दिया	72	आफ़िय्यत की दुआ ब कसरत करें	85
कौन सी ने'मत अफ़ज़ल है ?	72	पिछले साल की बातें	85
आ'जाए जिस्मानी का शुक्र क्या है ?	74	रहमते आलम <small>عليه السلام</small> की एक दुआ	86
सथ्यिदुना नजाशी <small>عليه السلام</small> का अन्दाज़े शुक्र	75	पूरी ने'मत क्या चीज़ है ?	87
मुसीबत में ने'मत का तसव्वुर	76	आफ़िय्यत की दुआ मांगते रहो	87
नुज़ूले मुसीबत का सबब	77	खाने के हि़साब से बचने का तरीक़ा	89
रब की अता, बन्दे की इल्लिजा	77	ने'मत, इज़ज़त और आफ़िय्यत	89

मजामीन	सफ़्हा	मजामीन	सफ़्हा
ख़ैर अता फ़रमाने और शर दूर करने पर शुक्र	90	बरोज़े कियामत रहमान <small>عَزَّ وَجَلَّ</small> के मुकर्रबिन	101
उमूरे दुन्या में कम मतबे वाले को देखा करो	91	मुसीबत ज़दा को देख कर पढ़ने की दुआ	101
दौराने सफ़र तुलूए फ़ज़्र के वक़्त की दुआएं	91	जिस्म और रिज़क जैसी अज़ीम ने'मतों का शुक्र	102
जो दोस्त खुशी का बाइस न बने उसे....	91	शुक्र करने और न करने वालों का अन्जाम	102
बनी आदम के मा'जूर होने की वज्ह	92	महज़ खाना, पीना और पहनना ही ने'मत नहीं	103
दिन भर का शुक्र अदा करने वाले कलिमात	92	दोनों में से अफ़ज़ल ने'मत कौन सी है ?	103
ज़ालिम तौबा के बा'द शुक्र करे तो.....	93	पानी की ने'मत पर शुक्र लाज़िम है	104
तीन मदनी नसीहतें	93	काश ! मैं तेरी तरह होता	104
खाना खाने से पहले की एक दुआ	94	एक दाना का मक्तूब	105
खाना खाने के बा'द की दो दुआएं	95	इब्ने सम्माक <small>عَبْدُ رَحْمَةِ اللَّهِ الْوَرَّاقُ</small> का मक्तूब	105
सब से बड़ी तीन ने'मतें	96	एक गोशा नशीन की हिक्कयत	106
शुक्र ने'मतें बढ़ाता है	96	ईद किस के लिये ?	107
शुक्रानए मा'रिफ़्त	96	उस की फ़राख़ ने'मतों का शुक्र अदा करो	109
ने'मत पर हम्दो सना शुक्रानए ने'मत है	97	सथ्यिदुना हसन बसरी <small>رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ</small> के कलिमाते शुक्र	109
शेरों ने कोई नुक़सान न पहुंचाया	97	ने'मतों की मा'रिफ़्त से कासिर	110
आईना देखने की एक दुआ	99	साबिरो शाकिर कौन ?	111
बुरी अ़ादतों से नजात पर शुक्र	99	जन्नत में घर	111
एक क़दम पुल सिरात पर हो तो दूसरा जन्नत में	100	हर फ़े'ल का शुक्र	112
आंखें बन्द कर ले	100	हर काम के बा'द <small>اللَّحْمَدُ لِلَّهِ</small> कहते	112
<small>ظَهْرَةَ وَبَاطِنَةَ</small> से सुराद	100	शुक्रानए ने'मत में ना फ़रमानी न की जाए	113
जहन्मियों पर भी एहसान	101	माख़िज़ो मराजेअ	114



أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

“शुक्र अद्दा कीजिये” के 11 हुरूप की निश्चत से इस किताब को पढ़ने की “11 नियतें”

फ़रमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ :

“يَا نَبِيَّ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِنْ عَمَلِهِ”
बेहतर है।” (المعجم الكبير للطبرانی، الحديث: ٥٩٤٢، ج ٦، ص ١٨٥)

दो मदनी फूल :-

- ﴿1﴾ बिगैर अच्छी नियत के किसी भी अमले खैर का सवाब नहीं मिलता ।
- ﴿2﴾ जितनी अच्छी नियतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा ।

﴿1﴾ हर बार हम्द व ﴿2﴾ सलात और ﴿3﴾ तअव्वुज व
﴿4﴾ तस्मिय्या से आगाज़ करूंगा (इसी सफ़हे पर ऊपर दी हुई दो
अरबी इबारात पढ़ लेने से चारों नियतों पर अमल हो जाएगा)
﴿5﴾ रज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुतालआ
करूंगा । ﴿6﴾ हत्तल वस्अ इस का बा वुजू और क़िब्ला रू मुतालआ
करूंगा । ﴿7﴾ जहां जहां “**अल्लाह**” का नामे पाक आएगा वहां
عَزَّوَجَلَّ और ﴿8﴾ जहां जहां “**शरकार**” का इस्मे मुबारक आएगा वहां
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पढ़ूंगा । ﴿9﴾ दूसरों को **येह किताब** पढ़ने की
तरगीब दिलाऊंगा । ﴿10﴾ इस हदीसे पाक **‘تَهَادُوا تَحَابُّوا’** एक दूसरे को
तोहफ़त दो आपस में महब्वत बढ़ेगी । (مؤطا امام مالك، ج ٢، ص ٤٠٧، الحديث: ١٧٣١)
पर अमल की नियत से (एक या हस्वे तौफीक़) येह किताब ख़रीद
कर दूसरों को तोहफ़तन दूंगा । ﴿11﴾ किताबत वगैरा में शरई ग़लती
मिली तो नाशिरीन को तहरीरी तौर पर मुत्तलअ करूंगा ।

(मुसन्निफ़ या नाशिरीन वगैरा को किताबों की अग़लात सिर्फ़ ज़बानी

बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
 اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अल मदीनतुल इल्मिया

अज़: शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा
 मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अज़्ज़ार कादिरी रज़वी ज़ियाई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهِ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

तब्तीगे कुरआनो सुन्नत की गैर सियासी तहरीक “दा'वते इस्लामी” नेकी की दा'वत, इहयाए सुन्नत और इशाअते इल्मे शरीअत को दुन्या भर में आ़म करने का अज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअद्दिद मजालिस का क़ियाम अमल में लाया गया है जिन में से एक मजालिस “अल मदीनतुल इल्मिया” भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़लमा व मुफ़्तयाने किराम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इल्मी, तहक़ीकी और इशाअती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए जैल छे शो'बे हैं :

- | | |
|-----------------------------|-------------------------|
| ﴿1﴾ शो'बए कुतुबे आ'ला हज़रत | ﴿2﴾ शो'बए तराजुमे कुतुब |
| ﴿3﴾ शो'बए दर्सी कुतुब | ﴿4﴾ शो'बए इस्लाही कुतुब |
| ﴿5﴾ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब | ﴿6﴾ शो'बए तख़रीज |

“अल मदीनतुल इल्मिया” की अव्वलीन तरजीह सरकारे आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अज़ीमुल बरकत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत,

माहिये बिदअत, आलिमे शरीअत, पीरे तरीक़त, बाइसे ख़ैरो बरकत, हज़रते अल्लामा मौलाना अलहाज़ अल हाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां माया तसानीफ़ को अंसरे हाज़िर के तकाज़ों के मुताबिक़ हत्तल वसअ सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तहकीकी और इशाअती मदनी काम में हर मुमकिन तआवुन फ़रमाएं और मजलिस की तरफ़ से शाएअ होने वाली कुतुब का खुद भी मुतालआ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरगीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ “दा'वते इस्लामी” की तमाम मजालिस ब शुमूल “अल मदीनतुल इल्मिय्या” को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़ी अता फ़रमाए और हमारे हर अमले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बकीअ में मदफ़न और जन्नतुल फिरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

أَصْبَحْنَا بِحَبَابِ النَّبِيِّ الْأَوْمَيْنِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ



रमजानुल मुबारक 1425 हि.



पहले इसे पढ़ लीजिये !

खुदाए अहकमुल हाकिमीन جَلَّ جَلَالُهُ की बे शुमार ने'मतें सारी काइनात के ज़र्रे ज़र्रे पर बारिश के क़तरों की गिनती से बढ़ कर, दरख़्तों के पत्तों से ज़ियादा, दुन्या भर के पानी के क़तरों से भी ज़ियादा, रैत के ज़र्रे से ज़ियादा, हर लम्हा हर घड़ी बिन मांगे तुफ़ानी बारिशों से तेज़तर बरस रही हैं। जिन को शुमार करने का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता और इस का ए'लान खुद खुदाए हन्नानो मन्नान عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे कलाम कुरआने पाक में इस तरह फ़रमाया है :

وَإِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تَحْصُوهَا (ب १६, النحل: १८)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर
अब्बाह की ने'मतें गिनो तो उन्हें
शुमार न कर सकोगे।

फिर इस काइनात में जो शरफ़ व फ़ज़ीलत इन्सान को हासिल है, इस से पता चलता है कि बन्दा किसी भी वक़्त, किसी भी लम्हे, किसी भी हालत में बल्कि किसी भी सूरत में अपने ख़ालिको मालिक عَزَّوَجَلَّ की बेहद व बे शुमार ने'मतों से बे तअल्लुक नहीं हो सकता। इस का अन्दाज़ा महज़ एक लुक़्मे से लगाया जा सकता है जो न सिर्फ़ खुद एक ने'मत है बल्कि इस के दामन में बेहद व बे हिसाब ने'मतें मौजूद हैं। किन किन मराहिल से गुज़र कर वोह लुक़्मा इस क़ाबिल बनता है कि उस से ग़िज़ा हासिल हो सके। इन पर गौर कीजिये !

लुक़्मा दो चीज़ों का मजमूआ है, रोटी और सालन, रोटी बनती है आटे से, आटा बनता है गन्दुम से। और सालन सब्ज़ी और गोशत से तय्यार होता है। जिन जानवरों के गोशत से सालन बनाया जाता है उन की नश्वो नुमा घास वगैरा से होती है। सब्ज़ी और घास की पैदावार ज़मीन से होती है। अल मुख़्तसर रोटी और सालन का हुसूल ज़रई पैदावार पर मौकूफ़ है और ज़रई पैदावार में

ज़मीन और आस्मान का बड़ा दख़ल है क्यूंकि अनाज और सब्ज़ियों और इन के ज़ाइकों के लिये सूरज की हरारत....चांद की किरनों.... हवाओं....बादलों....बारिशों....दरयाओं....और समन्दरों की ज़रूरत है....समन्दरों से बुख़ारात उठते हैं....बादल बनते हैं....इन से बारिश बरसती है....वोह खेतियों को सैराब करती है....खेतियां पक कर तय्यार होती हैं....फिर इन्हें काटा जाता है....और हेवी मशीनरी से गन्दुम को छिल्के से अ़लाहिदा किया जाता है....फिर इसे पीसने के लिये ट्रकों वगैरा के ज़रीए चक्कियों और फ़्लोर मिलज़ तक पहुंचाया जाता है....और गन्दुम पीसने के लिये लोहे की मशीनों और सालन पकाने के लिये बरतनों नीज़ ईंधन की ज़रूरत पड़ती है....खुदाए मेहरबान ﷻ ने ज़मीन में लोहे के मा'दिनय्यात रखे....ईंधन के हुसूल के लिये ज़मीन में कोइला रखा....कुदरती गैस और तेल पैदा किया....जंगलात में दरख़्त उगाए। अल ग़रज़ ! ज़मीनो आस्मान, चांद व सूरज, सितारे व बादल, समन्दर व दरया, बारिश व हवाएं, और अनाज व सब्ज़ियां सब चीज़ें उस एक लुक़्मे की तय्यारी में अपना अपना किरदार अदा कर रही हैं। अगर इन में से एक चीज़ भी न हो तो ज़रई पैदावार बन्द हो जाए। फिर बन्दा उस लुक़्मे को मुंह में रखता है तो उस से लुत्फ़ अन्दोज़ी के लिये ज़बान में ज़ाइके की हिंस पैदा फ़रमाई। ज़बान में एक ऐसा लुअ़ाब रखा जो उस को हज़्म करने में मुअ़ाविन होता है। उसे चबाने के लिये दांत बनाए।

फिर लुक़्मे को हल्क़ से उतारने के बा'द बन्दे का इख़्तियार ख़त्म....अब उस को हज़्म करना जिस्मानी आ'ज़ा का काम है....मे'दा लुक़्मे को पीसता है....जिगर उस से ख़ून बनाता है फुज़्ला अंतडियों और मसाने में चला जाता है और यूं उस लुक़्मे से इन्सान के जिस्मानी आ'ज़ा की नश्वो नुमा होती है। आंख, नाक, कान, हाथ और पैर सब

को इसी से ग़िज़ाइयत मिलती है....इसी से चर्बी बनती है....इसी से गोशत बनता है....इसी से हड्डियां बनती हैं....इसी से खून बनता है और इन्सान ज़िन्दा रहता है ।

इस क़दर ने'मतों के हुजूम का तकाज़ा है कि बन्दे की हर साअत, हर सांस रब तआला के लिये सर्फ़ हो, खाए तो रब तआला के लिये....पिये तो रब तआला के लिये....चले तो रब तआला के लिये....देखे तो रब तआला के लिये....सुने तो रब तआला के लिये....बोले तो रब तआला के लिये....सोए तो रब तआला के लिये अल गरज़ ! उस का जीना और मरना अपने करीम रब तआला के लिये हो ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यह तो एक लुक़्मे की बात थी । इस के इलावा भी बे शुमार ने'मतें हैं । इन में कसीर ने'मतें बिन मांगे अता हुई हैं तो कुछ त़लब करने पर बख़्शी गई हैं । एक तरफ़ ज़ाहिरी ने'मतें हैं तो दूसरी तरफ़ बातिनी ने'मतों का एक त़वील सिलसिला है । गोया बन्दा उस की ने'मतों के समन्दर में हर वक़्त गोताज़न रहता है । उपर निगाह उठाए तो उसी की ने'मतों के दिलकश नज़ारे हैं....नीचे देखे तो उसी की ने'मतों के जाल बिछे हैं....दाएं देखे तो उसी की ने'मतें....बाएं देखे तो उसी की ने'मतें....आगे देखे तो उसी की ने'मतें....पीछे मुड़ कर नज़र करें तो उसी की ने'मतें....हत्ता कि खुद यह देखना भी उसी की ने'मत....चले तो चलना ने'मत....बैठे तो बैठना ने'मत....खाए तो खाना ने'मत....पिये तो पीना ने'मत....सोए तो सोना ने'मत....जागे तो जागना ने'मत....बोले तो बोलना ने'मत....सुने तो सुनना ने'मत....पहने तो पहनना ने'मत....लिखे तो लिखना ने'मत....पढ़े तो पढ़ना ने'मत....समझे तो समझना ने'मत और जिस ने'मत की नाशुक़ी की जाए वोह अज़ाब और आफ़त है, चुनान्चे,

﴿1﴾ हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَبْرَى फ़रमाते हैं : “बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब तक चाहता है अपनी ने'मत से

लोगों को फ़ाइदा पहुंचाता रहता है और जब उस की नाशुकी की जाती है तो वोह उसी को उन के लिये अज़ाब बना देता है ।”

﴿2﴾ अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अली क़र्रमैल्लैह तैआल व ज़हेदुल क़र्रिम ने अहले हम्दान में से एक शख्स से इरशाद फ़रमाया : “बेशक ने’मत का तअल्लुक़ शुक्र के साथ है और शुक्र का तअल्लुक़ ने’मतों की ज़ियादती के साथ है, येह दोनों एक दूसरे को लाज़िम हैं । पस **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की तरफ़ से ने’मतों की ज़ियादती उस वक़्त तक नहीं रुकती जब तक कि बन्दे की तरफ़ से शुक्र न रुक जाए ।”

बन्दे पर वाजिब है कि ने’मतों पर खुदाए बुजुर्ग व बरतर का शुक्र अदा करता रहे । चुनान्चे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** इरशाद फ़रमाता है :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُلُوا مِن
طِبَابِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَاشْكُرُوا
لِلَّهِ إِن كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿١٧٢﴾

(ब २, अल-बक़रः १७२)

तर्जमए कन्जुल ईमान : ऐ ईमान
वालो खाओ हमारी दी हुई सुथरी चीज़ें
और **अल्लाह** का एहसान मानो
अगर तुम उसी को पूजते हो ।

सदरुल अफ़ज़िल हज़रते अल्लामा मुफ़्ती सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي** इस की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : “इस आयत से मा’लूम हुवा कि **अल्लाह** तआला की ने’मतों पर शुक्र वाजिब है ।” तफ़्सीरे बैज़ावी में इस के तहत लिखा है कि “इबादत बिगैर शुक्र के मुकम्मल नहीं होती ।” और तफ़्सीरे कबीर में फ़रमाया कि “शुक्र तमाम इबादतों की अस्ल है ।” एक और मक़ाम पर **अल्लाह** रब्बुल आलमीन का इरशाद है :

وَاشْكُرُوا لِي وَلَا تَكْفُرُونِ ﴿١٥٢﴾ तफ़्सीरे ख़ाज़िन में इस का मा’ना येह बयान किया गया है कि “मेरी इताअत कर के मेरा शुक्र अदा करो और मेरी ना फ़रमानी कर के नाशुके मत बनो ।” बेशक जिस ने

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** की इताअत की उस ने उस का शुक्र अदा किया और

जिस ने ना फ़रमानी की उस ने उस की ना शुक्र की। तफ़्सीरे इब्ने कसीर में हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ से मन्कूल है कि “जो बन्दा **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता है **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उस का ज़िक्र करता है और जो उस का शुक्र करता है उसे वोह और अता फ़रमाता है और जो उस की ना शुक्र करेगा उसे वोह अज़ाब में मुब्तला फ़रमाएगा।”

प्यारे इस्लामी भाइयो ! शुक्र आ'ला दर्जे की इबादत है...शुक्र की तौफ़ीक़ अज़ीम सआदत है...शुक्र में ने'मतों की हिफ़ाज़त है...शुक्र ही ने'मतों में बाइसे ज़ियादत है...शुक्र **اَللّٰهُ** वालों की आदत है...शुक्र रब **عَزَّوَجَلَّ** की इताअत है...शुक्र ज़रीअए बकाए ने'मत है...शुक्र तर्के मा'सिय्यत है...शुक्र मा'रिफ़ते ने'मत है...जब कि...ना शुक्री बाइसे हलाकत...और ने'मतों में रुकावट है। तो आइये इन तमाम बातों नीज़...शुक्र की हकीक़त...शुक्र करने में अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام का अन्दाज़...सहाबए किराम और औलियाए उज्जाम رَضَوْنَا اللّٰهَ تَعَالَى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِينَ का तरीक़ए शुक्र...शुक्र के फ़वाइद...शुक्र गुज़ारों की कुछ हिकायात और ना शुक्री के नुक़सानात वग़ैरा जानने के लिये पेशे नज़र किताब “**शुक्र के फ़ज़ाइल**” (जो **التَّشْكُرُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** (مطبوعه: دار ابن كثير بيروت - ١٤٠٧هـ/ ١٩٨٧ء) का मुतालआ कीजिये और इस किताब को भी ने'मत जानते हुवे इस के शुक्राने में “**दा'वते इस्लामी**” के इशाअती इदारे “**मक्तबतुल मदीना**” से हदिय्यतन हासिल कर के दूसरे इस्लामी भाइयों तक पहुंचाइये और शुक्र गुज़ारों को मिलने वाले इन्आमात के हक़दारों में शामिल हो जाइये।

इस तर्जमे में जो भी खूबियां हैं वोह यकीनन **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ और उस के **پ्यारे हबीब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهِ وَسَلَّمَ की अताओं, **औलियाए किराम** رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की इनायतों और शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू

बिलाल मुहम्मद इत्यास अन्तार क़ादिरि رَضِيَ اللهُ عَنْهُمُ الْعَالِيَهُ की पुर खुलूस दुआओं का नतीजा है और जो ख़ामियां हैं उन में हमारी कोताह फ़हमी का दख़ल है।

तर्जमा करते हुवे दर्जे जैल उमूर का खुसूसी तौर पर ख़याल रखा गया है :

❁....सलीस और बा मुहावरा तर्जमा किया गया है ताकि कम पढ़े लिखे इस्लामी भाई भी समझ सकें।

❁....आयाते मुबारका का तर्जमा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के तर्जमाए कुरआन "कन्ज़ुल ईमान" से लिया गया है।

❁....आयाते मुबारका के हवाले नीज़ हत्तल मक्दूर अहादीस व अक्वाल वग़ैरा की तख़रीज का एहतिमाम किया गया है।

❁....बा'ज मक़ामात पर मुफ़ीद और ज़रूरी हवाशी का इल्तिज़ाम किया गया है।

❁....मुशिकल अल्फ़ाज़ पर ए'राब लगाने की सई की गई है।

❁....मुशिकल अल्फ़ाज़ के मअानी हिलालैन या'नी ब्रेकेट (....) में लिखने का एहतिमाम किया गया है।

❁....अलामाते तरक़ीम (रुमूजे अवक़ाफ़) का भी ख़याल रखा गया है।

اَللّٰهُ की बारगाह में दुआ है कि हमें "अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश" करने के लिये मदनी इन्ज़ामात पर अमल और मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक्की अता फ़रमाए।

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

शो'बए तराजिमे कुतुब (मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)



तअ़ारुफ़े मुसन्निफ़

नाम व नसब :

आप का नामे नामी इस्मे गिरामी अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन उबैद बिन सुफ़यान बिन कैस अल करशी है। आप की कुन्यत अबू बक्र है और इब्ने अबी दुन्या के नाम से मशहूर हैं।

विलादते बा सअ़ादत :

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ 208 हिजरी को बग़दाद में पैदा हुवे।

असातिज़ा किराम :

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने कसीर उ़लमा से इक़तिसाबे फ़ैज़ किया। इमाम ज़हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं हमारे शैख़ ने अपनी किताब में इन के असातिज़ा के अस्मा जम्अ किये हैं, वोह तक़रीबन 190 है।⁽¹⁾

इमाम इब्ने हज़र अस्क़लानी قَدَسَ سِرُّهُ التُّورَانِي ने तक़रीबन 18 असातिज़ा के अस्मा नक़ल किये हैं और फ़रमाया कि इन के असातिज़ा बहुत ज़ियादा हैं।⁽²⁾ जिन में से इमाम बुख़ारी, इमाम अबू दावूद सजिस्तानी, अहमद बिन इब्राहीम, अहमद बिन हातिम, अहमद बिन मुहम्मद बिन अय्यूब, इब्राहीम बिन अब्दुल्लाह हरवी, दावूद बिन रशीद, हसन बिन हम्माद, अबू उबैदा बिन फुज़ैल बिन अयाज़, इब्राहीम बिन मुहम्मद बिन अरअ़रा, अहमद बिन इमरान अहनसी (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ) वग़ैरा के अस्माए गिरामी मा'रूफ़ हैं।

तलामिज़ा :

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के तलामिज़ा की बड़ी ता'दाद है। जिन्हों ने आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के वसीअ़ इल्म से वाफ़िर हिस्सा पाया।

①.....اعلام النبلاء، ج ١٠، ص ٦٩٤. ②.....تهذيب التهذيب، ج ٤، ص ٤٧٣.

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के अकाबिर तलामिज़ा में से कुछ के नाम यह हैं : इमाम हारिस बिन अबू उसामा, यह आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के असातिज़ा में से हैं लेकिन इन्होंने भी आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से रिवायात ली हैं। इब्ने अबी हातिम, अहमद बिन मुहम्मद, अबू बक्र अहमद बिन सुलैमान, अबू अली बिन खुज़ैमा, अबुल अब्बास बिन अक़दह, अब्दुल्लाह बिन इस्माईल बिन बर्रह, अबू बक्र बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह शाफ़ेई, अबू बक्र अहमद बिन मरवान दीनवरी, अबुल हसन अहमद बिन मुहम्मद बिन उमर नैशापूरी, और मुहम्मद बिन ख़लफ़ वकीअ (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ) इन के इलावा भी बहुत लोगों ने आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के उलूम से फ़ैज़ पाया है। इमाम ज़हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने तक़रीबन 26 तलामिज़ा के नाम ज़िक्र किये हैं।⁽¹⁾ और इमाम इब्ने हज़र अस्क़लानी قُدْسُ سِرُّهُ التُّورَانِي ने 17 के नाम ज़िक्र किये हैं।⁽²⁾

इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने बा'ज शहज़ादों को भी पढ़ाया है जैसा कि इमामे ख़तीब बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने एक हिक़ायत बयान की, कि “अबू ज़र कासिम बिन मुहम्मद बयान करते हैं कि मुझे इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने बताया कि एक दिन अब्बासी ख़लीफ़ा मुवफ़फ़ि बिल्लाह हाथ में तख़्ती लिये अपने दादा मुवफ़फ़ि बिल्लाह के पास आया। दादा ने देखा तो पूछा : “येह तेरे हाथ में तख़्ती क्यूं है ?” उस ने जवाब दिया : “मेरे ख़ादिम का इन्तिक़ाल हो गया है और उस की मद्रसे आने जाने की तक्लीफ़ से ख़लासी हो गई है।” मुवफ़फ़ि ने कहा : ऐसी बात न कहो। एक मरतबा ख़लीफ़ा रशीद ने हुक्म दिया था कि “उस की अवलाद की तख़्त्रियां हर पीर और जुमा'रात के दिन उसे पेश की जाएं।” चुनान्चे,

①.....اعلام النبلاء، ج ١، ص ٦٩٦. ②.....تهذيب التهذيب، ج ٤، ص ٤٧٣.

वोह उस पर पेश की जाती रहीं एक दिन उस ने अपने बेटे से कहा कि “तेरे ख़ादिम को क्या हुवा वोह तुम्हारी तख़्ती नहीं लाया ?” बेटे ने कहा : “वोह इन्तिक़ाल कर गया है और उसे मद्रसे आने जाने की तक्लीफ़ से ख़लासी मिल गई है” । रशीद ने कहा : “गोया मौत की तक्लीफ़ तुम पर मद्रसे से आसान है ?” बेटे ने कहा : “जी हां !” तो रशीद ने उस को कहा कि “फिर तुम मद्रसा छोड दो ।”

फिर जब **मुक्तफ़ी** दोबारा अपने दादा से मिला तो उस ने पूछा कि “तेरी अपने उस्ताद से महब्वत क्यूं कर है ?” **मुक्तफ़ी** ने जवाब दिया : “मैं क्यूं उन से महब्वत न करूं जब कि मेरी ज़बान पर सब से पहले ज़िक्रुल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** जारी करने वाले वोही तो हैं । और वोह ऐसे शख्स हैं कि अगर आप के साथ हों तो जब आप हंसना चाहें तो वोह आप को हंसा दें और जब आप रोना चाहें तो वोह आप को रुला दें । मुवफ़फ़क़ ने कहा : उन को मेरे पास ले कर आओ !” इमाम इब्ने अबी दुन्या **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : “मैं उस के पास गया और उस के तख़्त के क़रीब जा कर उसे बादशाहों के वाक़िआत और पन्दो नसाएह सुनाने लगा । जिन्हें सुन कर वोह रोने लगा ।”

इतने में **मुक्तफ़ी** ने मुझे कहा कि “आप ने उन को इतना क्यूं रुलाया ?” तो मुवफ़फ़क़ ने उस को कहा : “**अल्लाह** तुम्हारा बुरा करे तुम इमाम को क्यूं बोलते हो ?” उन से अलग हो जाओ ! फिर मैं ने देहातियों के वाक़िआत सुनाने शुरू किये तो वोह बहुत खुश हुवा और हंसने लगा और कहा कि “आप ने मुझे खुश कर दिया, आप ने मुझे खुश कर दिया ।”⁽¹⁾

① تاريخ بغداد، ج ١٠، ص ٨٩.

ता'रीफ़ी क़लिमात :

(1)....इमाम इब्ने अबी हातिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “मैं और मेरे वालिद इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की रिवायात लिखा करते थे, एक दिन किसी ने मेरे वालिद साहिब से इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के बारे में पूछा तो वालिद साहिब ने फ़रमाया :

“वोह बहुत सच्चे आदमी हैं”⁽¹⁾

(2)....काज़ी इस्माईल बिन इस्हाक़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के विसाल के मौक़अ़ पर कहा : “**اَللّٰهُ** अबू बक्र को ग़रीक़े रहमत फ़रमाए ! उन के साथ कसीर इल्म भी चला गया ।”⁽²⁾

(3)....अहमद बिन कामिल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के विसाल के मौक़अ़ पर कहा कि “इमाम अबू बक्र इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ विसाल फ़रमा गए । वोह ख़लीफ़ मो'तज़िद के उस्ताद थे ।”⁽³⁾

(4)....इमाम ज़हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ नक़ल फ़रमाते हैं कि “इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ जब किसी के पास तशरीफ़ फ़रमा होते तो अगर उस को हंसाना चाहते तो एक लम्हे में हंसा देते और अगर रुलाना चाहते तो रुला देते । क्यूंकि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ बहुत वसीअ़ इल्म रखते थे ।”⁽⁴⁾

(5)....इब्ने नदीम ने कहा : “इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने ख़लीफ़ मुक्तफ़ी बिल्लाह को बहुत अदब सिखाया है । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ एक मुत्तफ़ी और परहेज़गार आदमी थे और अख़बार व रिवायात के बहुत बड़े अ़लिम थे ।”

①.....تهذيب التهذيب، ج ٤، ص ٤٧٤ . ②.....تهذيب التهذيب، ج ٤، ص ٤٧٤ .

③.....تاريخ بغداد، ج ١٠، ص ٩٠ . ④.....اعلام النبلاء، ج ١٠، ص ٦٩٦ .

इल्मी अशाशा :

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने कसीर किताबें यादगार छोड़ीं । जिन में से अक्सर “जोहदो रकाइक़” पर मुश्तमिल हैं । आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की नसीहतों और मवाइज़ और कुतुब को हर दौर में बे पनाह मक़बूलियत हासिल रही है ।

हज़रते अल्लामा इब्ने जौजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि :
“इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने जोहद के मौजूअ पर 100 से जाइद कुतुब लिखी हैं ।”(1)

इमाम ज़हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعालَى عَلَيْهِ की 183 किताबों के नाम बयान किये हैं ।(2)

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की चन्द किताबों के नाम यह हैं :

- 1..... الْقِنَاعَةُ. 2..... قَصْرُ الْأَمَلِ. 3..... الصَّمْتُ. 4..... التَّوْبَةُ. 5..... الْيَقِينِ.
- 6..... الصَّبْرُ. 7..... الْجُوعُ. 8..... حُسْنُ الظَّنِّ بِاللَّهِ. 9..... الْأَوْلِيَاءُ.
- 10..... صِفَةُ النَّارِ. 11..... صِفَةُ الْجَنَّةِ. 12..... تَعْبِيرُ الرُّؤْيَاءِ. 13..... الدُّعَاءُ.
- 14..... ذَمُّ الدُّنْيَا. 15..... الْأَخْلَاقُ. 16..... كَرَامَاتُ الْأَوْلِيَاءِ. 17..... عَاشُورَاءُ.
- 18..... الْمَنَاسِكُ. 19..... أَحْبَابُ أُوَيْسَ. 20..... أَحْبَابُ مَعَاوِيَةَ.

इन के इलावा भी कई कुतुबो रसाइल हैं जिन्हें अ़वाम व ख़वास में बड़ी पज़ीराई हासिल है । उन की कुतुब से बे तवज्जोगी न चाहिये । **اَللّٰهُ** हज़रते मुसन्निफ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की किताबों को हर एक के लिये नाफ़ेअ बनाए । **اٰمِيْنَ بِجَاةِ النَّبِيِّ الْاٰمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ।

सफ़रे आख़िरत :

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ खुशबूएं इल्म से अकनाफ़े आ़लम को मुअत्तर फ़रमाते हुवे 281 हिजरी माहे जुमादल ऊला में इस दुन्याए

- 1..... المنتظم لابن جوزى، ج 1، ص 341. 2..... اعلام النبلاء، ج 1، ص 697.

फ़ानी से रुख़सत हो गए और अपने महबूबे हकीकी عَزَّوَجَلَّ से जा मिले। काज़ी अबुल हसन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ बयान फ़रमाते हैं कि “जिस दिन इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का विसाल हुवा मैं उस दिन सुब्ह सवेरे काज़ी इस्माईल बिन इस्हाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق के पास आया और कहा कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ काज़ी की इज़्ज़त बढ़ाए! इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ विसाल फ़रमा गए हैं।” उन्होंने ने फ़रमाया : “ अबू बक्र पर **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की रहमत हो ! उन के साथ कसीर इल्म भी चला गया।” फिर फ़रमाया : “ऐ लड़के ! यूसुफ़ बिन याकूब के पास चलो ! वोह नमाज़े जनाज़ा पढ़ाएंगे।”

फिर यूसुफ़ बिन याकूब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ तशरीफ़ लाए और “शूनीज़िया” में नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के जसदे खाकी को “शूनीज़िया” ही के क़ब्रिस्तान में सिपुर्दे खाक किया गया।⁽¹⁾

(**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदके हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन)



इल्म सीखने से आता है

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “इल्म सीखने से ही आता है और फ़िक़ह ग़ौरो फ़िक़ से हासिल होती है और **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन में समझ बूझ अता फ़रमाता है और **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इल्म वाले हैं।” (المعجم الكبير، ج ١٩، ص ٥١١، الحديث: ٧٣١٢)

①.....تاریخ بغداد، الرقم: ٥٢٠٩، عبد الله بن محمد، ج ١٠، ص ٩٠.

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

हिस्सए अव्वल

ने'मत की हिफ़ज़त का नुस्खा

﴿1﴾.... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “**اَللّٰهُ** किसी बन्दे को अहल, माल, और अवलाद की सूरत में कोई ने'मत अता करे, फिर वोह कहे : ﴿مَا شَاءَ اللهُ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ﴾ या'नी जो **اَللّٰهُ** चाहे, नेकी करने की ताक़त उसी की तौफ़ीक़ से है । (या'नी शुक्र अदा करे) तो वोह उस में मौत के इलावा कोई आफ़त नहीं देखेगा ।”⁽¹⁾

ने'मतों का एहतिराम किया करो

﴿2﴾.... उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरोबर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मेरे पास तशरीफ़ लाए और रोटी का एक टुकड़ा गिरा हुआ देखा, तो उसे (उठा कर) पोंछा और इरशाद फ़रमाया : “ऐ आइशा ! **اَللّٰهُ** की ने'मतों का एहतिराम किया करो । इस लिये कि जब येह किसी अहले खाना से रूठ कर चली जाती है तो दोबारा लौट कर नहीं आती ।”⁽²⁾

①.....المعجم الاوسط، الحديث: ٤٢٦١، ج ٣، ص ١٨٣.

②.....شعب الایمان للبيهقي، باب في تعديد نعم الله، الحديث: ٤٥٥٧، ج ٤، ص ١٣٢.

يا'नी ऐ **اَللّٰهُ** ! عَزَّوَجَلَّ अपने लिए **اَللّٰهُمَّ** اَعِنِّيْ عَلٰى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ. जि़क़, शुक्र और अच्छी इबादत पर मेरी मदद फ़रमा।”(1)

सय्यिदुना दावूद की मुनाजात

﴿5﴾....हज़रते सय्यिदुना अबू जल्दे जीलान बिन फ़रवह बसरी **اَللّٰهُمَّ** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना दावूद **اَللّٰهُ** की मुनाजात में से यह भी है कि आप **اَللّٰهُ** ने **اَللّٰهُ** की बारगाह में अर्ज़ की : “ऐ **اَللّٰهُ** ! मैं तेरा शुक्र कैसे अदा करूँ जब कि मैं तेरे शुक्र तक तेरी ने'मत के बिगैर नहीं पहुंच सकता?” तो आप **اَللّٰهُ** पर वहय नाज़िल हुई कि “ऐ दावूद ! क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि जितनी ने'मतें तेरे पास हैं वोह मेरी तरफ़ से हैं?” आप **اَلलّٰهُ** ने अर्ज़ की : “ऐ **اَللّٰهُ** ! क्यूं नहीं। तो **اَلलّٰهُ** ने इरशाद फ़रमाया : “मैं तेरे इसी शुक्र अदा करने (या'नी इकरारे ने'मत) पर तुझ से राजी हूँ।”(2)

सय्यिदुना मूसा की मुनाजात

﴿6﴾....हज़रते सय्यिदुना अबू जिल्द बसरी **اَللّٰهُمَّ** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना मूसा **اَلलّٰهُ** की मुनाजात में से यह भी है कि आप **اَلलّٰهُ** ने अर्ज़ की : “ऐ **اَلलّٰهُ** ! मैं किस तरह तेरा शुक्र अदा करूँ हालांकि मेरे सारे आ'माल तेरी सब से छोटी ने'मत का भी बदला नहीं चुका सकते?” तो आप **اَلलّٰهُ** पर वहय नाज़िल हुई कि “ऐ मूसा ! (इकरारे ने'मत कर के) अभी तो तुम ने मेरा शुक्र अदा किया है !”(3)

①.....سنن ابى داؤد، كتاب الوتر، باب الاستغفار، الحديث: ١٥٢٢، ج ٢، ص ١٢٣ - عن معاذ بن جبل.

②.....الزهّد للامام احمد بن حنبل، زهد داؤد عليه السلام، الحديث: ٣٧٥، ص ١٠٧.

③.....الزهّد للامام احمد بن حنبل، اخبار موسى عليه السلام، الحديث: ٣٤٩، ص ١٠٣.

الْحَمْدُ لِلَّهِ कहने की बरकत

﴿7﴾....हज़रते सय्यिदुना अबू अक़ील الْوَكِيلُ اللَّهُ الرَّحْمَةُ الْوَكِيلُ फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अब्दुल्लाह عَلَيْهِ رَحْمَةُ تَعَالَى को फ़रमाते हुवे सुना कि “बन्दा जब भी ﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ﴾ कहता है तो ﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ﴾ कहने की बरकत से उस के लिये ने’मत लाज़िम हो जाती है।” मैं ने पूछा : “उस ने’मत का बदला क्या है ? (इरशाद फ़रमाया) “उस का बदला भी बन्दे का ﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ﴾ कहना है। पस (येह कहते ही उस के पास) एक और ने’मत आ जाएगी, क्यूंकि **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ की ने’मतें ख़त्म नहीं होतीं।”⁽¹⁾

﴿8﴾....हज़रते सय्यिदुना अबू यहूया बाहिली الْوَالِي اللَّهُ الرَّحْمَةُ الْوَالِي फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना सुलैमान तैमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَلِيِّ ने मुझ से फ़रमाया : “बेशक **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों को ने’मतें अपनी कुदरत के मुताबिक़ अता फ़रमाता है लेकिन उन्हें शुक्र का मुकल्लफ़ उन की ताक़त के मुताबिक़ बनाता है।”⁽²⁾

बहुत बड़ी ने’मत

﴿9﴾....हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي से मरवी है कि नबियों के सुल्तान, सरवरे ज़ीशान, सरदारो दो जहान صَلَّ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने एक शख़्स को ﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ بِالْإِسْلَامِ﴾ या’नी इस्लाम की ने’मत पर **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है। कहते हुवे सुना तो इरशाद फ़रमाया : “बेशक तू ने **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ की बहुत बड़ी ने’मत का शुक्र अदा किया है।”⁽³⁾

①..... شعب الایمان للبيهقي، باب في تعديد نعم الله، الحديث: ٤٤٠٨، ج ٤، ص ٩٩.

②..... المرجع السابق، الحديث: ٤٥٧٨، ص ١٣٨.

③..... الزهد لابن المبارك، باب ذكر رحمة الله، الحديث: ٩١١، ص ٣١٨.

शुक्र के उम्दा अलफ़ाज़

«10»... ख़लीफ़ा अब्दुल मलिक बिन मरवान से मन्कूल है कि “बन्दा सब से ज़ियादा पसन्दीदा और शुक्र में मुबालगा आमेज़ जो बात कहता है वोह येह है ﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْعَمَ عَلَيْنَا وَهَدَانَا إِلَى الْإِسْلَامِ﴾ **तर्जमा :** तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** के लिये हैं जिस ने (तौफ़ीक़ दे कर) हम पर इन्आम फ़रमाया और हमें इस्लाम की हिदायत अता फ़रमाई।”⁽¹⁾

सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي **कव अन्दाजे शुक्र**
«11»... हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي गुफ़्तगू शुरू फ़रमाते वक़्त येह कहा करते थे :

الْحَمْدُ لِلَّهِ، اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ كَمَا خَلَقْتَنَا، وَرَزَقْتَنَا، وَهَدَيْتَنَا،
وَعَلَّمْتَنَا، وَأَنْقَذْتَنَا، وَفَرَّجْتَ عَنَّا، لَكَ الْحَمْدُ بِالْإِسْلَامِ
وَالْقُرْآنِ، وَلَكَ الْحَمْدُ بِالْأَهْلِ وَالْمَالِ وَالْمُعَاوَةِ، كَبَيْتِ عَدُوَّنَا، وَبَسَطْتَ رِزْقَنَا،
وَأَظْهَرْتَ أُمَّتَنَا، وَجَمَعْتَ فُرْقَتَنَا، وَأَحْسَنْتَ مُعَاوَاتَنَا، وَمِنْ كُلِّ وَاللَّهِ مَا
سَأَلْنَاكَ رَبَّنَا أَعْطَيْتَنَا، فَلَكَ الْحَمْدُ عَلَى ذَلِكَ حَمْدًا كَثِيرًا، لَكَ الْحَمْدُ
بِكُلِّ نِعْمَةٍ أَنْعَمْتَ بِهَا عَلَيْنَا فِي قَدِيمٍ وَحَدِيثٍ، أَوْ سِرٍّ أَوْ عَلَانِيَةٍ، أَوْ خَاصَّةٍ أَوْ
عَامَّةٍ، أَوْ حَيٍّ أَوْ مَيِّتٍ، أَوْ شَاهِدٍ أَوْ غَائِبٍ، لَكَ الْحَمْدُ حَتَّى تَرْضَى، وَلَكَ
الْحَمْدُ إِذَا رَضِيتَ

तर्जमा : तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के लिये हैं, ऐ **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ! ऐ हमारे रब **عَزَّوَجَلَّ** ! तेरा शुक्र है कि तू ने हमें पैदा किया, हमें रिज़क़ दिया, हिदायत दी, इल्म दिया और नजात बख़्शी और हम से तकलीफ़ दूर फ़रमा दी, इस्लाम और कुरआन की ने'मत पर तेरा शुक्र है, अहलो इयाल, मालो ज़र और सिहहतो अफ़ियत की ने'मत पर भी तेरा शुक्र है। तू ने हमारे दुश्मनों को रुस्वा किया, हमारे

①..... الدر المنثور، پ ۲، البقرة، تحت الاية ۱۵۲، ج ۱، ص ۳۶۹.

रिज़्क में वुस्रत फ़रमाई, इस उम्मत को ग़लबा दिया, हम बिखरे हुवों को इकट्ठा किया, हमें बेहतरीन सिहहत व अफ़ियत अता फ़रमाई, ऐ हमारे रब **عَزَّوَجَلَّ** ! हम ने तुझ से जो मांगा तू ने हमें अता फ़रमाया, पस इस पर तेरा बे इन्तिहा शुक्र है। और तेरी अता कर्दा हर ने'मत पर तेरा शुक्र है, ख़्वां नई हो या पुरानी, पोशीदा हो या ज़ाहिर, ख़ास हो या अ़ाम, बाकी हो या ख़त्म हो गई हो और मौजूद हो या ग़ाइब, तेरा शुक्र है यहां तक कि तू राज़ी हो जाए और जब तू राज़ी हो जाए तब भी तेरा शुक्र है।

सय्यिदुना आदम **عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** का शुक्र

﴿12﴾....हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना मूसा **عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** ने बारगाहे खुदावन्दी में अर्ज की : “ऐ **اللَّهُ** ! हज़रते आदम **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** तेरी ने'मतों का शुक्र किस तरह अदा कर सके ? जब कि तू ने अपने दस्ते कुदरत से उन्हें पैदा फ़रमाया, उन में अपनी तरफ़ से रूह फूंकी, उन्हें अपनी जन्नत में बसाया और फ़िरिशतों को हुक्म दिया तो उन्होंने ने उन को सजदा किया।” **اللَّهُ** ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ मूसा ! उन्हें यकीन था कि यह सब मेरी तरफ़ से है। इस पर उन्होंने ने मेरी हम्द की। बस येही मेरी अता व बख़्शिश का शुक्र है।”⁽¹⁾

बैतुल ख़ला से निक्कलने पर शुक्रे इलाही

﴿13﴾....हज़रते सय्यिदुना इब्ने नबातह **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अली **كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم** क़ज़ाए हाजत को जाते तो यह पढ़ते : **بِسْمِ اللَّهِ الْحَافِظِ الْمُؤَدِّي** **तर्जमा : اللَّهُ**

①.....الزهد للهناد، باب الشكر على النعم، الحديث: ٧٧٧، ج ٢، ص ٤٠٠.

के नाम से जो हिफ़ाज़त करने और पायाए तक्मील को पहुंचाने वाला । फिर जब फ़राग़त पाते तो हाथ से शिकमे मुबारक को छूते और फ़रमाते : ﴿يَا لَهَا مِنْ نِعْمَةٍ لَوْ يَعْلَمُ الْعِبَادُ شُكْرَهَا﴾ तर्जमा : कितनी अज़ीम ने'मत है, काश ! लोग इस का शुक्र करना जान लें ।⁽¹⁾

सय्यिदुना नूह عَلَيْهِ السَّلَام कब अब्दन शकूर कहने की वजह
 عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ...हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मसऊद सक़फ़ी
 फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना नूह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को
 (कुरआने पाक में) “अब्दन शकूर” (या'नी बड़ा शुक्र गुज़ार
 बन्दा) इस लिये फ़रमाया गया कि आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام जब
 भी नया लिबास पहनते या खाना तनावुल फ़रमाते तो **عَزَّوَجَلَّ**
 का शुक्र बजा लाते ।⁽²⁾

खाने के बा'द की एक दुआ

﴿15﴾...हज़रते सय्यिदुना अबू हरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि अहले
 कुबा में से एक अन्सारी शख़्स ने मख़ज़ने जूदो सखावत, पैकरे अज़मतो
 शराफ़त صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को खाने की दा'वत दी तो हम भी आप
 صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के साथ हो लिये । जब आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ
 खाना तनावुल फ़रमा कर अपने हाथ मुबारक धो चुके तो यूं दुआ फ़रमाई :

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ، مَنْ
 عَلَيْنَا فَهَدَانَا، وَأَطْعَمَنَا وَسَقَانَا، وَكُلَّ بَلَاءٍ حَسَنٍ أَبْلَانَا، الْحَمْدُ لِلَّهِ غَيْرِ مُودِعِ
 رَبِّي وَلَا مُكَافَأٍ وَلَا مَكْفُورٍ وَلَا مُسْتَغْنَى عَنْهُ، الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أُطْعِمُ مِنَ
 الطَّعَامِ، وَسَقَى مِنَ الشَّرَابِ، وَكَسَى مِنَ الْعُرَى، وَهَدَى مِنَ الضَّلَالَةِ، وَبَصَّرَ
 مِنَ الْعَمَى، وَفَضَّلَنَا عَلَى كَثِيرٍ مِّنْ خَلْقِهِ تَفْضِيلًا، الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

①.....شعب الایمان للبيهقي، باب فی تعدید نعم الله، الحدیث: ٤٤٦٨، ج ٤، ص ١١٣.

②.....الزهدي للامام احمد بن حنبل، قصة نوح عليه السلام، الحدیث: ٢٨١، ص ٨٩، قول

محمد بن كعب - المعجم الكبير، الحدیث: ٥٤٢٠، ج ٦، ص ٣٢.

तर्जमा : तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के लिये हैं जो खिलाता है और खुद खाने से पाक है, जिस ने हम पर एहसान किया कि हमें हिदायत अता फ़रमाई और हमें खिलाया, पिलाया और हर अच्छी ने'मत से नवाजा। तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के लिये हैं। न उसे वदाअ किया गया, न क़िफ़ायत किया हुवा, न उस की ना शुक्र की गई और न उस से बे परवाही की गई। तमाम ता'रीफ़ों का हक़दार **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** है जिस ने खाना खिलाया, पानी पिलाया, बरहना बदनों को कपड़े पहनाए, गुमराही से हिदायत बख़्शी, अन्धेपन से बीना किया और हमें अपनी कसीर मख़्लूक पर फ़ज़ीलत अता फ़रमाई। तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के लिये हैं जो तमाम ज़हानों का पालने वाला है।⁽¹⁾

दुआए मुस्तफ़ा (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ)

﴿16﴾...हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** फ़रमाते हैं कि "रहमते आलम, नूरे मुजस्सम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** येह दुआ किया करते थे :

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ زَوَالِ نِعْمَتِكَ وَأُجَاءَةِ نِقْمَتِكَ وَتَحَوُّلِ عَافِيَتِكَ وَجَمِيعِ سَخَطِكَ

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ! मैं तेरी ने'मत के छिन जाने, तेरे अचानक इताब, तेरी अफ़ियत के फिर जाने और तेरी हर तरह की नाराज़ी से तेरी पनाह मांगता हूँ (या'नी खुदाया हमें ऐसे कामों से बचा जो तेरी नाराज़ी का बाइस हैं)।⁽²⁾

ना शुक्र बाइसे अज़ाब है

﴿17﴾...हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَبْرَى** फ़रमाते हैं :

"बेशक **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** जब तक चाहता है अपनी ने'मत से लोगों

①.....السنن الكبرى للنسائي، كتاب عمل اليوم والليلة، الحديث: ١٠١٣٣، ج ٦، ص ٨٢.

②.....صحيح مسلم، كتاب الذكروالدعاء، باب اكثر اهل الحنة، الحديث: ٢٧٣٩، ص ١٤٦٤.

को फ़ाइदा पहुंचाता रहता है और जब उस की ना शुक्र की जाती है तो वोह उसी ने'मत को उन के लिये अज़ाब बना देता है ।”(1)

ने'मत और शुक्र का तअल्लुक

﴿18﴾...अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ ने अहले हम्दान में से एक शख्स से इरशाद फ़रमाया : “बेशक ने'मत का तअल्लुक शुक्र के साथ है और शुक्र का तअल्लुक ने'मतों की ज़ियादती के साथ है, येह दोनों एक दूसरे को लाज़िम हैं । पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से ने'मतों में इज़ाफ़ा उस वक़्त तक नहीं रुकता जब तक कि बन्दे की तरफ़ से शुक्र न रुक जाए ।”(2)

गुनाहों को छोड़ देना भी शुक्र है

﴿19﴾...हज़रते सय्यिदुना मुख़्लद बिन हुसैन अज़दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “शुक्र के बारे में एक कौल येह है कि “बन्दा गुनाहों को छोड़ दे ।”(3)

कौन सी ने'मत, मुसीबत व आज़माइश है ?

﴿20﴾...हज़रते सय्यिदुना अबू हाज़िम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “जिस ने'मत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब हासिल न हो वोह मुसीबत व आज़माइश है ।”(4)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की महब्वत पाने का एक ज़रीआ

﴿21﴾...हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान वासिती الْكَافِي फ़रमाते हैं : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों को याद करने से दिल में उस की महब्वत पैदा होती है ।”(5)

①..... الدر المنثور، پ ۲، البقرة، تحت الآية ۱۵۲، ج ۱، ص ۳۶۹.

②..... شعب الايمان للبيهقي، باب في تعديد نعم الله، الحديث: ۴۵۳۲، ج ۴، ص ۱۲۷.

③..... الدر المنثور، پ ۲، البقرة، تحت الآية ۱۵۲، ج ۱، ص ۳۷۱.

④..... المجالسة و جواهر العلم، الجزء التاسع، الحديث: ۱۱۶۳، ج ۲، ص ۵.

⑤..... تاريخ مدينة دمشق لابن عساکر، الرقم ۴۱۳۳ عبدالعزیز، ج ۳۶، ص ۳۳۴.

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** बन्दे को अपनी ने'मतें याद दिलाएगा

﴿22﴾...हज़रते सय्यिदुना अबू बरदा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाते हैं : मैं मदीनए मुनव्वरा **رَأَى اللهُ شُرْفًا وَتَعْظِيمًا** में आया तो मेरी मुलाक़ात हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन सलाम **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से हुई। उन्होंने ने मुझ से फ़रमाया : “क्या आप उस घर में दाख़िल नहीं होंगे जिस में मीठे मीठे आका, मक्की मदनी मुस्तफ़ा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** दाख़िल हुवे थे और क्या उस घर में नमाज़ अदा नहीं करेंगे जिस में नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहूरोबर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने नमाज़ अदा फ़रमाई थी और क्या हम आप को सत्तू और ख़जूर न ख़िलाएं ?” फिर फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** क़ियामत के दिन लोगों को इक़्ज़ा फ़रमा कर उन्हें अपनी ने'मतें याद दिलाएगा तो एक बन्दा अर्ज़ करेगा : “इस ने'मत की अ़लामत क्या है ?” **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** इरशाद फ़रमाएगा : “इस की अ़लामत येह है कि तू ने फुलां फुलां तक्लीफ़ में मुझे पुकारा तो मैं ने उस तक्लीफ़ को तुझ से दूर कर दिया। तू ने फुलां फुलां सफ़र में मेरी रफ़ाक़त चाही तो मैं ने अपनी रहमत से तुझे अपनी रफ़ाक़त बख़्शी।” **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उसे अपनी ने'मतें याद दिलाता जाएगा और उसे याद आता जाएगा यहां तक कि इरशाद फ़रमाएगा : “इस की अ़लामत येह है कि तू ने फुलां बिनते फुलां को निकाह का पैग़ाम भेजा था और तेरे इलावा दूसरे लोगों ने भी उसे पैग़ाम भेजा था लेकिन मैं ने उस से तेरा निकाह करा दिया और बाकी सब को वापस लौटा दिया।”

बारगाहे खुदावन्दी में हाज़िरी को याद कर के रोने लगे

﴿23﴾...हज़रते सय्यिदुना अबू बरदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं :

“बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन अपने बन्दे को अपनी बारगाह में हाज़िर कर के उसे अपनी ने'मतें शुमार कराएगा ।” (इतना बयान करने के बा'द) हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बहुत रोए फिर फ़रमाया : “मैं उम्मीद करता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दे को अपनी बारगाह में हाज़िर फ़रमाने के बा'द अज़ाब नहीं देगा ।”

एक ने'मत सारी नेकियां ले जाएगी

﴿24﴾...हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि “सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, बि इज़्ने परवर दगार, दो अ़ालम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “क़ियामत के दिन ने'मतें नेकियों ओर बुराइयों के साथ लाई जाएंगी । तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी एक ने'मत से इरशाद फ़रमाएगा : उस की नेकियों में से अपना हक़ ले ले ।” तो वोह उस के लिये कोई नेकी बाक़ी नहीं छोड़ेगी ।⁽¹⁾

किसी ने'मत का शुक्र अ़दा न कर सकूंगा

﴿25﴾...हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَرِيمِ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना दावूद وَعَلَيْهِ السَّلَامُ ने अ़र्ज़ की : “ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! अगर मेरे हर बाल की दो ज़बानें हों और वोह दिन रात

①.....الفردوس بماثور الخطاب، الحديث: ٨٧٦٣، ج ٥، ص ٤٦٢.

तेरी पाकी बयान करें तब भी मैं तेरी किसी एक ने'मत का कमा हक्कुहू शुक्र अदा न कर सकूंगा।”⁽¹⁾

शैतान शुक्र में रुकावट डालता है

﴿26﴾...हज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अब्दुल्लाह मुज़नी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَیُّ फ़रमाते हैं कि जब बन्दे पर कोई मुसीबत आती है और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे मुसीबत से नजात बख़्श देता है। फिर शैतान उस के पास आता है और उस के शुक्र को कमज़ोर करने की कोशिश करते हुवे कहता है : यह मुआमला उस से कहीं ज़ियादा आसान था जिस तरफ़ तुम गए हो। तो वोह बन्दा कहता है : “नहीं ! बल्कि यह मुआमला उस से कहीं ज़ियादा सख़्त था जिस की तरफ़ मैं मुतवज्जेह हुवा, लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे मुझ से फेर दिया।”

ने'मतें महफूज़ करने का ज़रीआ

﴿27﴾...हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَزِيزُ फ़रमाते हैं : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों को शुक्र के ज़रीए महफूज़ कर लो।”⁽²⁾

शुक्र, सब से ज़ियादा महबूब है

﴿28﴾...हज़रते सय्यिदुना मुतरिफ़ बिन अब्दुल्लाह عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “आफ़ियत पर शुक्र करना मुझे मुसीबत पर सब्र करने से ज़ियादा महबूब है।”⁽³⁾

①.....المصنف لابن ابی شیبیة، کتاب الزهد، باب کلام سلیمان، الحدیث: ١٥، ج ٨، ص ١٢٠.

②.....حلیة الاولیاء، الرقم ٣٢٣ عمر بن عبدالعزیز، الحدیث: ٧٤٥٥، ج ٥، ص ٣٧٤.

③.....کتاب الجامع لمعمر مع المصنف لعبد الرزاق، باب العلم الحدیث: ٢٠٦٣٥.

येह शाकिरीन क़ त़रीक़ा नहीँ

﴿29﴾...हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना वुहैब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने ईदुल फ़ित्र के दिन कुछ लोगों को हंसते हुवे देखा तो इरशाद फ़रमाया : “अगर इन लोगों के रोजे क़बूल कर लिये गए हैं तो येह शाकिरीन का त़रीक़ा नहीँ है और अगर इन के रोजे क़बूल नहीँ किये गए तो येह ख़ाइफ़ीन का त़रीक़ा नहीँ है।”⁽¹⁾

इमाम औज़ाई رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ क़ रिक्क़त अंगेज़ बयान

﴿30﴾...हज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया : “ऐ लोगो ! उन ने’मतों के ज़रीए **اَبْلَاح** की भड़कती हुई उस आग से भागने पर मदद हासिल करो जो दिलों पर चढ़ जाएगी। बेशक तुम ऐसे घर में हो जिस में क़ियाम की त़वील मुद्दत भी क़लील है और उस में तुम्हें मुक़र्ररा मुद्दत तक उन लोगों का जा निशीन बना कर भेजा गया है जिन्हों ने दुन्या की खुशनुमाई और इस की रोनक़ व बहार का रूख़ किया, उन की उम्रें तुम से त़वील और क़द तुम से दराज़ थे और निशानात अज़ीम थे। उन्हों ने पहाड़ों को चीर डाला। पथ्थर की चट्टानें काटीं और सख़्त गिरिफ़्त और सुतून जैसे जिस्मों की कुक्वत के साथ शहरों में ग़श्त किया। इस के बा वुजूद ज़माने ने जल्द ही उन की मुद्दतों को लपेट दिया। उन के निशानात को मिटा दिया। उन के घरों को नेस्तो नाबूद कर दिया और उन के ज़िक़्र को भुला दिया। अब तुम न उन को देखते हो न उन की भनक सुनते हो। वोह

①.....شعب الایمان للبيهقي، باب في الصيام، الحديث: 3727، ج 3، ص 46.

झूटी उम्मीदों पर खुश, ग़फ़लत में रातें बसर करते और नदामत के साथ दिन गुज़ारते थे ।

फिर तुम जानते हो कि रात के वक़्त उन के घरों में **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का अज़ाब उतरा तो सुबह उन में से अक्सर अपने घरों में मुंह के बल पड़े रह गए और जो बच गए वोह **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के अज़ाब, उस की ने'मतों के ज़वाल और हलाकत में मुब्तला होने वालों के मुन्हदिम घरों के आसार देखते रह गए । इस में निशानी है उन लोगों के लिये जो दर्दनाक अज़ाब से डरते हैं और इब्रत है उन के लिये जो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** से डरते हैं ।”

और अब उन के बा'द तुम्हारी मुद्दत कम है और दुन्या अ़ारिज़ी है और ज़माना ऐसा आ गया है कि न अफ़वो दर गुज़र रहा और न ही नर्मी बल्कि बुराई का किचड़, बाकी मांदा रन्जो ग़म, इब्रतनाक हौलनाकियां, बची कुची सज़ाओं के असरात, फित्नों के सैलाब, पै दर पै ज़लज़लों और बदतरीन जा निशीनों का दौर दोरा है । उन की बुराइयों की वजह से खुशकी व तरी में ख़राबी ज़ाहिर हुई । पस तुम उन की तरह न होना जिन्हें लम्बी उम्मीदों और लम्बी मुद्दतों ने धोके में डाल दिया तो ख़्वाहिशात के हो कर रह गए ।

हम **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** से सुवाल करते हैं कि हमें और तुम्हें उन लोगों में कर दे जो अपनी नज़र की हिफ़ाज़त करते हुवे उसे पूरा करते हैं और अपने (हकीकी) ठीकाने को पहचान कर खुद को तय्यार रखते हैं ।”⁽¹⁾

①.....تاریخ مدينة دمشق لابن عساکر، الرقم ۳۹۰۷، عبدالرحمن، ج ۳۵، ص ۲۰۸.

ना फ़रमानी के बा वुजूद ने'मतें

﴿31﴾...हज़रते सय्यिदुना अबू हाज़िम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया :
“जब तुम देखो कि तुम्हारी ना फ़रमानी के बा वुजूद **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ**
तुम्हें मुसलसल ने'मतें अ़ता फ़रमा रहा है तो उस से डरो।”⁽¹⁾

اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से ढील

﴿32﴾...हज़रते सय्यिदुना उक्बा बिन अ़मिर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं
कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, बि इज़्मे परवर दगार, दो
आलम के मालिको मुख्तार, शहनशाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने
इरशाद फ़रमाया : “जब तुम देखो कि **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** बन्दों को उन
की ना फ़रमानी के बा वुजूद उन की ख़्वाहिशात के मुताबिक़ अ़ता कर
रहा है तो येह उस की तरफ़ से उन को ढील है।”⁽²⁾

ज़िक़रे ने'मत भी शुक्र है

﴿33﴾...हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِيّ फ़रमाते हैं
कि “ने'मत का ब कसरत ज़िक़र किया करो क्यूंकि इस का ज़िक़र उस
का शुक्र है।”⁽³⁾

दुन्या व आख़िरत की भलाई

﴿34﴾...हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि
माहे नुबुव्वत, महेरे रिसालत, मम्बए ज़ूदो सखावत, कासिमे ने'मत,
सरापा रहमत, शाफ़ेए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया :
“जिसे चार चीज़ें अ़ता की गईं उसे दुन्या व आख़िरत की भलाई अ़ता

①..... فضيلة الشكر، باب في الانحراف عن..... الخ، الحديث: ٧٣، ص ٥٩.

②..... المسند للامام احمد بن حنبل، حديث عقبة بن عامر، الحديث: ١٧٣١٣، ج ٦، ص ١٢٢.

..... فضيلة الشكر، باب في الانحراف عن..... الخ، الحديث: ٧٠، ص ٥٧.

③..... الزهد لابن المبارك، باب فضل ذكر الله، الحديث: ١٤٣٤، ص ٥٠٣.

की गई : (1)....शुक्र करने वाला दिल (2)....**अल्लाह** का ज़िक्र करने वाली ज़बान (3)....मुसीबत पर सब्र करने वाला बदन और (4)....उस के माल और इज़्ज़त में ख़ियानत न करने वाली बीवी।”⁽¹⁾

तोता बोलने लगा

﴿35﴾....हज़रते सय्यिदुना सदक़ह बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَفَّارِ फ़रमाते हैं कि एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام मेहराब में तशरीफ़ फ़रमा थे। अचानक उन के पास से एक छोटा सा तोता गुज़रा। आप عَلَيْهِ السَّلَام उसे देख कर उस की ख़ल्क़त में ग़ौरो ख़ौज़ करने लगे और उस पर तअज़्जुब करते हुवे फ़रमाया : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस की तख़लीक़ क्यूं फ़रमाई ?” तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस तोते को कुव्वते गोयाई अता फ़रमाई और उस ने अर्ज़ की : “ऐ दावूद عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ! क्या आप को तअज़्जुब हो रहा है ? उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जो अज़ीम फ़ज़ल फ़रमाया है, उस के मुक़ाबले में मुझे मिलने वाले फ़ज़ल पर मैं बहुत ज़ियादा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करता हूँ।”⁽²⁾

मेंढक की तश्बीह

﴿36﴾....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि एक बार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के दिल में यह ख़याल आया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हम्द उन से ज़ियादा उम्दा तरीक़े से कोई नहीं करता, तो एक फ़िरिश्ता नाज़िल हुवा उस वक़्त आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام मेहराब में तशरीफ़

①.....المعجم الكبير، الحديث: ١١٢٧٥، ج ١١، ص ١٠٩.

②.....تاريخ مدينة دمشق لابن عساکر، الرقم ٢٠٣٧، داؤد بن ايشاء، ج ١٧، ص ٩٥.

फ़रमा थे, करीब ही एक तालाब था, फ़िरिश्ते ने अर्ज़ की : “ऐ दावूद
 عَلِي نَبِيْنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ! इस मेंढक की आवाज़ को समझें।” आप
 عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने ब गौर सुना तो वोह **اَللّٰهُمَّ** की ऐसी हम्द
 बयान कर रहा था जैसी आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने कभी न की थी।
 फ़िरिश्ते ने अर्ज़ की : “ऐ दावूद عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ! क्या पाया ?
 क्या आप इस की बात समझ गए ? इरशाद फ़रमाया : “हां।”
 फ़िरिश्ते ने अर्ज़ की, कि “इस ने क्या कहा ?” फ़रमाया :
 ﴿سُبْحَانَكَ وَيَعْمَدُكَ مَنِّيْهِ عَلَيْكَ يَا رَبِّ﴾ फिर फ़रमाया : “उस ज़ात की क़सम
 जिस ने मुझे नबी बनाया ! मैं ने इस तरह कभी हम्द नहीं की।”⁽¹⁾

सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की तश्बीह

﴿37﴾.... एक बार हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान बिन सईद सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي
 ने **اَللّٰهُمَّ** के नबी हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का ज़िक्रे ख़ैर करते हुवे बताया कि उन्होंने ने **اَللّٰهُمَّ** की इस
 तरह हम्द की : ﴿الْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَمَا يَنْبَغِي لِكُرْمِ وَجْهِ جَلَّ جَلَالُهُ﴾ या'नी **اَللّٰهُ**
 के लिये ऐसी हम्द है जैसी उस की इज़्ज़त के शायाने शान है। तो
اَللّٰهُمَّ ने आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की तरफ़ वहूय फ़रमाई :
 “ऐ दावूद ! तुम ने फ़िरिश्तों को मशक्कत में डाल दिया है (या'नी
 ऐसी हम्द फ़िरिश्ते भी नहीं कर सके)।”⁽²⁾

शुक्र गुज़ार से सरक्वार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का प्यार

﴿38﴾.... हज़रते सय्यिदुना इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबू तलह़ा
 عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى बयान करते हैं कि एक शख़्स माहे नुबुव्वत, महरे रिसालत,

①.....تاريخ مدينة دمشق لابن عساکر، الرقم ۲۰۳۷، داؤد بن ايشاء، ج ۱۷، ص ۹۵.

②.....شعب الایمان للبيهقي، باب فی تعدید نعم الله، الحدیث: ۴۵۸۲، ج ۴، ص ۱۳۹.

मम्बए जूदो सखावत, कासिमे ने'मत, सरापा रहमत, शाफ़ेए उम्मत
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमते बा बरकत में हाज़िर हो कर सलाम
 अर्ज़ किया करता, तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उस से दरयाप्त फ़रमाते :
 “तुम ने सुब्ह किस हाल में की ?” वोह अर्ज़ करता : “मैं आप
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ही के साथ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत पर उस का
 शुक्र अदा करता हूं और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के साथ **اَللّٰهُ**
 عَزَّوَجَلَّ (की ने'मत पर उस) का शुक्र अदा करता हूं।” तो नबियों के
 सुल्तान, सरवरे ज़िशान, महबूबे रहमान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उस के
 लिये दुआ फ़रमाते । एक दिन वोह हाज़िरे ख़िदमत हुवा तो आप
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने पूछा : “ऐ फुलां ! कैसे हो ?” अर्ज़ की : अगर
 शुक्र करूं तो ख़ैरियत से हूं।” तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ख़ामोश
 हो गए (और उस के हक़ में कोई दुआ न की), उस शख़्स ने अर्ज़
 की : “या नबिय्यल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! पहले तो आप मेरा हाल
 दरयाप्त फ़रमाने के बा'द मेरे लिये दुआ भी फ़रमाया करते थे, जब
 कि आज मेरा हाल दरयाप्त फ़रमाने के बा'द मेरे लिये दुआ नहीं
 फ़रमाई ?” तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “पहले
 जब मैं तुम्हारा हाल मा'लूम करता था तो तुम **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ शुक्र
 बजा लाते थे जब कि आज मैं ने तुम्हारा हाल पूछा तो तुम ने शुक्र
 बजा लाने में शक़ किया।”⁽¹⁾

ज़िक़रे इलाही भी शुक्र है

﴿39﴾....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ
 फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَامُ ने बारगाहे

①.....شعب الإيمان للبيهقي، باب في تعديد نعم الله، الحديث: ٤٤٤٩، ج٤، ص ١٠٩.

ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अर्ज़ की : “ऐ **अल्लाह** ! तेरा शुक्र किस तरह करना चाहिये ?” इरशाद हुवा : “ऐ मूसा ! तुम्हारी ज़बान हमेशा मेरे ज़िक्र से तर रहे ।”⁽¹⁾

दो ने'मतें

﴿40﴾...हज़रते सय्यिदुना यूनुस बिन उ़बैद رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने हज़रते सय्यिदुना अबू तमीमा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से अर्ज़ की : “आप ने सुब्द किस हाल में की ? इरशाद फ़रमाया : दो ने'मतों के दरमियान, मैं नहीं जानता कि इन में से अफ़ज़ल ने'मत कौन सी है :
(1)...मेरे वोह गुनाह कि जिन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पर्दा डाल दिया कि अब कोई उन के ज़रीए मुझे आर नहीं दिला सकता और
(2)...**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने लोगों के दिलों में जो मेरी महब्बत डाल दी, हालां कि मेरे आ'माल इस काबिल नहीं ।”

अद्बाउ शुक्र का एक तरीक़ा

﴿41﴾...हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन लूत अन्सारी الوالى عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “शुक्र ना फ़रमानी तर्क कर देने का नाम है ।”⁽²⁾

अली बिन हुसैन (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) की दुआ

﴿42﴾...अहले मदीना में से एक शख़्स का बयान है कि एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना अली बिन हुसैन (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) ने मिना में येह दुआ मांगी :

①.....الزهد لابن المبارك، باب ذكر رحمة الله، الحديث: ٩٤٢، ص ٣٣٠.

②.....شعب الایمان للبيهقي، باب في تعديد نعم الله، الحديث: ٤٥٤٧، ج ٤، ص ١٣٠.

﴿كَمْ مِنْ نِعْمَةٍ أَنْعَمْنَا عَلَىٰ قَلِّ لَكَ عِنْدَ مَا شُكِّرُوا، وَكَمْ مِنْ بَلِيَّةٍ أُنزِلْنَا بِهَا قَلِّ لَكَ عِنْدَ مَا صَبَرُوا، فَيَا مَنْ قَلِّ شُكْرِي عِنْدَ نِعْمَتِهِ فَلَمْ يَحْرَمْنِي، وَيَا مَنْ قَلِّ صَبْرِي عِنْدَ بَلَاءِهِ فَلَمْ يَخْذُلْنِي، وَيَا مَنْ رَأَيْتُ عَلَى الدُّنُوبِ الْعِظَامِ فَلَمْ يَفْضَحْنِي وَكَمْ يَهْتِكُ سِتْرِي، وَيَا ذَا الْمَعْرُوفِ الَّذِي لَا يَنْقُضِي، وَيَا ذَا النِّعَمِ الَّتِي لَا تَحُولُ وَلَا تَزُولُ، صَلَّى عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ، وَاعْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا﴾

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** एज़्जलु ज़ैरी ने 'मतों के मुक़ाबले में मेरा शुक्र कम है। आजमाइशों पर मेरा सब्र कम है। ऐ वोह ज़ात जिस ने अपनी ने 'मतों के मुक़ाबले में मेरा शुक्र कम होने के बा वुजूद मुझे इन ने 'मतों से महरूम न किया। आजमाइशों पर सब्र कम होने के बा वुजूद मुझे रुस्वा न किया। मेरे बड़े बड़े गुनाहों से ख़बरदार होने के बा वुजूद मुझे रुस्वा न किया। मेरी पर्दा दरी न की। ऐ हमेशा एहसान फ़रमाने वाले ! ऐ पाएदार ने 'मते अता फ़रमाने वाले ! हज़रते मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और उन की आल पर रहमतें नाज़िल फ़रमा और हम पर रहम फ़रमा और हमें बख़्श दे।⁽¹⁾

ऐ इब्ने आदम

﴿43﴾...हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَحِمَهُ اللهُ الْعَفَّارُ फ़रमाते हैं : मैं ने एक किताब में पढ़ा है कि **अल्लाह** इरशाद फ़रमाता है : “ऐ इब्ने आदम ! तुझ पर मेरी भलाई नाज़िल होती है लेकिन मेरे पास तेरा शर पहुंचता है, मैं ने 'मतों के ज़रीए तुझ से महबूबत का इज़हार करता हूं और तू मेरी ना फ़रमानियां कर के मेरे ज़िक्र से गाफ़िल रहता है और मुकर्रम फिरिश्ता हमेशा तेरा बुरा अमल ही मेरे पास ले कर हाज़िर होता है।”⁽²⁾

①..... شعب الایمان للبيهقي، باب فی تعدید نعم الله، الحدیث: ٤٥٨٨، ج ٤، ص ١٤٠.

②..... حلیة الاولیاء، الرقم: ٢٠٠ مالک بن دینار، الحدیث: ٢٨٤٧، ج ٢، ص ٤٢٧.

बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में इल्तिजाएँ

﴿44﴾... हज़रते सय्यिदुना अबू अली मदाइनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَلِيِّ बयान फ़रमाते हैं : मैं अपने एक पड़ोसी को रात के वक़्त येह कहते हुवे सुना करता था : “ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ! मुझ पर तो तेरी भलाई नाज़िल होती है लेकिन तेरी बारगाह में मेरा शर ही पहुंचता है, कितने ही फ़िरिश्ते तेरी बारगाह में मेरा बुरा अमल ले कर पेश होते हैं, तू मुझे से बे नियाज़ होने के बा वुजूद ने'मतों के ज़रीए मुझे से इज़्हारे महब्बत फ़रमाता है, जब कि मैं तेरा मोहताज होने और फ़ाके में मुब्तला होने के बा वुजूद गुनाहों और ना फ़रमानियों के ज़रीए तेरी याद से गाफ़िल रहता हूं और इस के बा वुजूद तू मुझे पनाह देता, मेरी पर्दापोशी फ़रमाता और मुझे रिज़क अता फ़रमाता है।”⁽¹⁾

सुब्ह किस हाल में की ?

﴿45﴾... हज़रते सय्यिदुना सुगदी बिन अबुल हज़रा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि हम ने हज़रते सय्यिदुना अबू मुहम्मद मुगीरा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की बारगाह में हाज़िर हो कर अर्ज़ की : “ऐ अबू मुहम्मद ! आप ने सुब्ह किस हाल में की ? “तो उन्होंने ने इरशाद फ़रमाया : हम ने ने'मतों में घिरे होने और शुक्र में कोताह होने की हालत में सुब्ह की, हमारा रब عَزَّوَجَلَّ बे नियाज़ होने के बा वुजूद हम से महब्बत फ़रमाता है और हम उस के मोहताज होने के बा वुजूद उस से गाफ़िल रहते हैं।”⁽²⁾

﴿**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सद्के हमारी मग़फ़िरत हो﴾

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ

①..... شعب الایمان للبيهقي، باب فی تعدید نعم اللہ، الحدیث: ٤٥٩٠، ج ٤، ص ١٤٠.

②..... حلیۃ الاولیاء، الرقم ٣٧١ مغیرة بن حبیب، الحدیث: ٨٥٥٤، ج ٦، ص ٢٦٧.

करमे इलाही और हिल्मे इलाही

﴿46﴾...हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन सा'लबा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज की : “ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ! येह तेरा करम है कि तेरी इताअत की जाती है और ना फ़रमानी नहीं की जाती और येह तेरा हिल्म है कि तेरी ना फ़रमानी की जाती है और तू अफ़वो दर गुज़र फ़रमा देता है । तेरी ज़मीन पर बसने वालों ने जब भी तेरी ना फ़रमानी की तू ने हर बार उन का भला फ़रमाया ।”⁽¹⁾

रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ की करम नवाजियां

﴿47﴾...उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे को ने'मत अता फ़रमाता है और वोह इस बात का यकीन कर लेता है कि येह **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से है तो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये उस ने'मत का शुक्र अदा करना लिख देता है और जब **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ गुनाह पर बन्दे की नदामत देखता है तो उस के मग़फ़िरत तलब करने से पहले ही उसे बख़्श देता है और जब कोई शख़्स दीनार के इवज़ कपड़ा ख़रीद कर पहनता है और **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करता है तो उस से पहले कि कपड़े उस के घुटनों तक पहुंचें **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उस की मग़फ़िरत फ़रमा देता है ।⁽²⁾

बरिश्श के बहाने

﴿48﴾...हज़रते सय्यिदुना मुआविय्या बिन कुर'ह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि जो शख़्स नया कपड़ा पहनते वक़्त **بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ** कह ले उसे

①.....حلية الاولياء، الرقم ٣٧٠، عبد الله، الحديث: ٨٥٤٩، ج ٦، ص ٢٦٥.

②.....المستدرک، کتاب الدعاء والتکبير، باب فضيلة التمجيد.....النج، الحديث: ١٩٣٧،

ج ٢، ص ١٩٦، بتغير قليل.

बख़्शा दिया जाता है और जो खाना खाते वक़्त ﴿بِسْمِ اللَّهِ وَالْحَمْدِ لِلَّهِ﴾ कह ले वोह भी बख़्शा जाता है और जो पानी पीते वक़्त ﴿بِسْمِ اللَّهِ وَالْحَمْدِ لِلَّهِ﴾ कह ले उस की भी मग़फ़िरत फ़रमा दी जाती है ।

रिज़क़ का जिम्मा

﴿49﴾....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने दिल नशीन है : “जो बन्दा **اَللّٰهُ** की इबादत बजा लाने का जिम्मा ले लेता है **اَللّٰهُ** ज़मीन और आस्मानों में उस का रिज़क़ अपने जिम्माए करम पर ले लेता है । फिर उस का रिज़क़ लोगों के हाथों में देता है । वोह उसे तय्यार कर के उस तक पहुंचा देते हैं । अगर वोह बन्दा उसे क़बूल कर लेता है तो **اَللّٰهُ** उस पर शुक्र वाजिब कर देता है और अगर वोह उसे क़बूल नहीं करता तो रब **عَزَّوَجَلَّ** वोह रिज़क़ उन मोहताज बन्दों को दे देता है जो उस का रिज़क़ ले कर उस का शुक्र बजा लाते हैं ।”

ने'मतों का इज़हार रब **عَزَّوَجَلَّ** को पसन्द है

﴿50﴾....हज़रते सय्यिदुना अबू रजा अत्तारिदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हसीन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ हमारे पास तशरीफ़ लाए । आप पर धारीदार चादर थी, जिसे हम ने आप पर इस से पहले देखा था न इस के बा'द । आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया कि शफ़ीउल मुज़निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने बरकत निशान है : “जब **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** किसी बन्दे को ने'मत अता फ़रमाता है तो उस पर अपनी ने'मत का असर देखना पसन्द फ़रमाता है ।” (1)

1.....المعجم الكبير، الحديث: ٢٨١، ج ١٨، ص ١٣٥.

इज़हारे ने'मत में तक्ब्बुर हो न इस्राफ़

﴿51﴾...हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल आस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “तक्ब्बुर और इस्राफ़ से बचते हुवे खाओ, पियो और सदक़ा करो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों पर अपनी ने'मत का असर देखना पसन्द फ़रमाता है।”⁽¹⁾

﴿52﴾...हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन नज़्ला जशमी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं शहनशाहे मदीना, करारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैजे गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में परागन्दा हाल हाज़िर हुवा तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : “क्या तेरे पास कुछ माल है?” मैं ने अर्ज़ की : जी हां। फिर फ़रमाया : “कौन सा माल है?” मैं ने अर्ज़ की : “मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हर किस्म का माल अता फ़रमाया है, ऊंट, घोड़े, गुलाम और बकरियां।” आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुझे माल अता फ़रमाया है तो फिर तुझ पर उस का असर दिखाई देना चाहिये।”⁽²⁾

﴿53﴾...हज़रते सय्यिदुना अली बिन ज़ैद बिन जुदाअन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दे के खाने पीने में अपनी ने'मत का असर देखना पसन्द फ़रमाता है।”⁽³⁾

①....المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد الله، الحديث: ٦٧٢٠، ج ٢، ص ٦٠٣.

②....المرجع السابق، حديث مالك بن نضلة، الحديث: ١٥٨٨٨، ج ٥، ص ٣٨٣.

سنن النسائي، كتاب الزينة، باب الجلاجل، الحديث: ٥٢٣٤، ص ٨٣١.

③....جمع الحوامع، قسم الاقوال، حرف الهمزة، الحديث: ٥٥٨٦، ج ٢، ص ٢٧١.

سنن الترمذی، كتاب الادب، الحديث: ٢٨٢٨، ج ٤، ص ٣٧٤، عن عمر بن شعيب.

ख़ुदा ए़ज़ज़ल का प्यारा बन्दा और ना पसन्दीदा बन्दा

﴿54﴾...हज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ मरफूअन रिवायत करते हैं कि “जिस को ख़ैर से नवाज़ा जाए और उस पर उस का असर दिखाई दे तो उसे **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** का प्यारा और उस की ने'मत का चर्चा करने वाला कहा जाता है और जिस को ख़ैर अता की जाए लेकिन उस पर उस का असर दिखाई न दे तो उसे **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** का ना पसन्दीदा और उस की ने'मतों का दुश्मन कहा जाता है।”⁽¹⁾

मुसीबत पर हम्दो शुक्र करना चाहिये

﴿55﴾...हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन सौकह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं कूफ़ा में हज़रते सय्यिदुना औन बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के साथ हज़्जाज के महल के सामने से गुज़रा तो कहा : “काश ! आप उन मसाइब को देखते जो इसी मक़ाम पर हज़्जाज के ज़माने में हम पर नाज़िल हुवे।” तो उन्होंने ने इरशाद फ़रमाया : “तू ऐसे चला है गोया कभी किसी तकलीफ़ के पहुंचने पर तू ने **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** को पुकारा ही नहीं। वापस चलो और **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की हम्द और उस का शुक्र बजा लाओ ! क्या तुम ने **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** का येह इरशाद नहीं सुना ?”

مَرَّ كَان لَمْ يَدْعُنَا إِلَىٰ صَبْرٍ مَّسَّهُ ط **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : चल देता**
है गोया कभी किसी तकलीफ़ के पहुंचने
पर हमें पुकारा ही न था।⁽²⁾

(प ११, योन्स: १२)

①.....الجامع لاحكام القرآن للقرطبي، پ ۳۰، الضحى، تحت الاية ۱ ج ۱، ص ۷۲، مختصرًا.

②.....شعب الايمان للبيهقي، باب في تعديد نعم الله، الحديث: ۴۵۹۷، ج ۴، ص ۱۴۲.

ने'मत में फ़ौरी इज़ाफ़ा चाहिये तो.....

﴿56﴾....हज़रते सय्यिदुना फुज़ैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَهَّابِ फ़रमाते हैं : “कहा जाता है कि जिस ने **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की ने'मत को दिल से पहचान कर ज़बान से उस का शुक्र अदा किया वोह शुक्र के अल्फ़ाज़ मुकम्मल करने से पहले ही उस ने'मत में इज़ाफ़ा देख लेगा । क्यूंकि **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** का फ़रमाने आलीशान है :

لَيْنْ شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अगर**
 (प १३, बरहमि: ७)
एहसान मानोगे तो मैं तुम्हें और
दूंगा ।”

मज़ीद इरशाद फ़रमाते हैं कि “ने'मत का शुक्र येह है कि तू उस का चर्चा करे ।”

नीज़ इरशाद फ़रमाया : **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** इरशाद फ़रमाता है :
 “**ऐ इब्ने आदम !** जब तू इस हाल में मेरी ने'मतों में पले कि मेरी ना फ़रमानी में भी लोट पोट होता है तो मुझ से डर कि कहीं तुझे तेरे गुनाहों की वजह से हलाक न कर दूं । **ऐ इब्ने आदम !** मुझ से डर और जहां चाहे सो ।”⁽¹⁾

आधा ईमान

﴿57﴾....हज़रते सय्यिदुना अमिर बिन शराहील عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَكِيلِ फ़रमाते हैं कि “शुक्र आधा ईमान है, सब आधा ईमान है और यकीन मुकम्मल ईमान है ।”⁽²⁾

①.....شعب الايمان للبيهقي، الحديث: ٤٥٣٣ تا ٤٥٣٥، ج ٤، ص ١٢٧.

②.....تفسير الطبري، پ ٢١، لقمان، تحت الآية ٣٠، الحديث: ٢٨١٥٦، ج ١٠، ص ٢٢٣، عن مغيرة.

ने'मत का जि़क़्र भी शुक्र है

﴿58﴾....अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَزِيزِ फ़रमाते हैं कि ने'मतों को याद करना भी शुक्र है।”⁽¹⁾

शुक्र नुक़सान से बचाता है

﴿59﴾....हज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा अब्दुल्लाह बिन ज़ैद رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ज़ैद फ़रमाते हैं : “दुनिया में तुम्हें कोई चीज़ उस वक़्त तक नुक़सान नहीं पहुंचा सकती जब तक तुम उस का शुक्र अदा करते रहो।”⁽²⁾

ना शुक्ऱी से ने'मत अज़ाब बन जाती है

﴿60﴾....हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने फ़रमाया कि मुझे येह बात पहुंची है कि “जब **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ किसी कौम को ने'मत अता फ़रमाता है तो उन से शुक्र का मुतालबा फ़रमाता है। अगर वोह उस का शुक्र करें तो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उन्हें ज़ियादा देने पर क़ादिर है और अगर ना शुक्ऱी करें तो उन्हें अज़ाब देने पर भी क़ादिर है। वोह अपनी ने'मत को उन पर अज़ाब से बदल देता है।”⁽³⁾

ऐसे शुक्र गुज़ार भी होते हैं ?

﴿61﴾....हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाया करते थे कि “बहुत से शुक्र गुज़ार ऐसे होते हैं जो अपने इलावा दूसरे लोगों को मिलने वाली ने'मत का भी शुक्र अदा करते हैं और जिसे ने'मत मिली होती है उसे उस की ख़बर नहीं होती और बहुत से इल्मे फ़ि़क़ह रखने वाले फ़कीह नहीं होते।”⁽⁴⁾

①.....شعب الایمان للبيهقي، باب في تعديد نعم الله، الحديث: ٤٤٢٢، ج٤، ص ١٠٢.

②.....جامع بيان العلم وفضله، فصل في كسب طلب العلم المال، الحديث: ٧٣٩، ص ٢٦٣.

③.....شعب الایمان للبيهقي، باب في تعديد نعم الله، الحديث: ٤٥٣٦، ج٤، ص ١٢٧.

④.....تفسير الطبري، پ ١٢ يوسف، تحت الآية ٣٨، الحديث: ١٩٢٩٥، ج ٧، ص ٢١٦.

इन्सान बड़ा ना शुक्र है

﴿62﴾... हज़रते सय्यिदुना हसन बिन अबू हसन رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इस आयते मुबारका :

إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنُودٌ ﴿٦٢﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : बेशक आदमी अपने रब का बड़ा ना शुक्रा है ।

के बारे में फ़रमाते हैं कि “इन्सान बड़ा ना शुक्रा है या’नी मुसीबतें गिनता रहता है और ने’मतें भूल जाता है ।”

(इस किताब के मुसन्निफ़) हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन उबैद क़रशी अल मा’रूफ़ इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन वर्क़ाक़ :
إِنَّمَا أَتَى النَّبِيَّ وَالرَّسُولَ فِي الْبُرْجِ الْمَقَامِ

يَا أَيُّهَا الظَّالِمُ فِي فِعْلِهِ! وَالظُّلْمُ مُرْدُودٌ عَلَى مَنْ ظَلَمَ
إِلَى مَتَى أَنْتَ وَحَتَّى مَتَى تَشْكُرُ الْمُصِيبَاتِ وَتَنْسَى النِّعَمَ؟

तर्जमा : (1)....ऐ अपने अमल में जुल्म करने वाले ! जुल्म, ज़ालिम पर ही लौटता है । (2)....कब तक और कहां तक तुम मुसीबतों पर शिक्वा करते और ने’मतों को नज़र अन्दाज़ करते रहोगे ?⁽¹⁾

ने’मत का चर्चा करना भी शुक्र है

﴿63﴾... हज़रते सय्यिदुना नो’मान बिन बशीर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने अज़मत निशान है : “ने’मत का चर्चा करना उस का शुक्र है और चर्चा न करना ना शुक्रा है ।” जो क़लील पर शुक्र नहीं करता वोह कसीर पर शुक्र नहीं कर सकता ।

①.....الجامع لاحكام القرآن، پ ۳۰، العاديات، تحت الاية ۶، ج ۱۰، ص ۱۱۵.

जो लोगों का शुक्रिया अदा नहीं करता वोह **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का शुक्र अदा नहीं कर सकता। (मुसलमानों की) जमाअत में बरकत है और उन से अलाहिदा रहना सबबे अज़ाब है।⁽¹⁾

शुक्र और अफ़ियत

﴿64﴾....हज़रते सय्यिदुना मुतरिफ़ बिन अब्दुल्लाह **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : “अफ़ियत पर शुक्र करना मुझे मुसीबत पर सब्र करने से ज़ियादा महबूब है।” और आप ही का फ़रमान है कि “मैं ने अफ़ियत और शुक्र में ग़ौरो ख़ौज़ किया तो उन में दुन्या व आख़िरत की भलाई ही पाई।”⁽²⁾

शुक्र गुज़ार कुली

﴿65﴾....हज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अब्दुल्लाह **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** बयान करते हैं कि मैं एक कुली से मिला जो वज़्न उठाए हुवे **الْحَمْدُ لِلَّهِ** और **﴿اسْتَغْفِرُ اللَّهَ﴾**⁽³⁾ कहे जा रहा था मैं उस के फ़ारिग़ होने का इन्तिज़ार करने लगा, जब उस ने अपनी पीठ से बोझ उतार दिया तो मैं ने उस से पूछा : “क्या तुम इस से अच्छा कोई काम नहीं कर सकते?” उस ने कहा : “क्यूं नहीं ! मैं अच्छा काम कर सकता हूं, कुरआने पाक पढ़ा सकता हूं। लेकिन बन्दा चूंकि ने’मत और गुनाह के दरमियान रहता है इस लिये मैं उस की कामिल ने’मतों पर उस का शुक्र अदा करता हूं और उस से अपने गुनाहों की मुआफ़ी मांगता हूं।” मैं ने कहा : “यहां का कुली भी बक्र बिन अब्दुल्लाह से ज़ियादा समझदार है।”⁽⁴⁾

1.....المسند للإمام احمد بن حنبل، حديث نعمان بن بشير، الحديث: ١٨٤٧٦، ج ٦، ص ٣٩٤.

2.....شعب الإيمان للبيهقي، باب في تعديد نعم الله، الحديث: ٤٤٣٥، ج ٤، ص ١٠٥.

3.....या'नी **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का शुक्र है और मैं **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** से मुआफ़ी मांगता हूं।

4.....شعب الإيمان للبيهقي، باب في تعديد نعم الله، الحديث: ٤٥١٤، ج ٤، ص ١٢٢.

सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَزِيزِ **क़** अब्दुल

﴿66﴾... हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर बिन अब्दुल अज़ीज़

बयान करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना

उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَزِيزِ जब **اَللّٰهُ** की किसी

ने'मत को देखते तो यह दुआ पढ़ने से पहले उस से निगाह को न फेरते :

﴿اللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ اَنْ اُبَدِّلَ بِعَمَّتِكَ كُفْرًا، اَوْ اَكْفُرْهَا بَعْدَ مَعْرِفَتِهَا، اَوْ اَنْسَاها فَلَا اُنْبِىْ بِهَا﴾

तर्जमा : ऐ **اَللّٰهُ** ! मैं तेरी ने'मत को ना शुक्रा से बदलने

या उस की मा'रिफ़त के बा'द उस का इन्कार करने या उस को भुला

कर उस की ता'रीफ़ न करने से तेरी पनाह मांगता हूँ।" (1)

जिन्नात क़ तिलावत सुन कर जवाब देना

﴿67﴾... हज़रते सय्यिदुना इब्ने उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि एक

मरतबा नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर,

सुल्ताने बहरोबर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सूए रहमान की तिलावत

फ़रमाई या फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सामने इस की तिलावत

की गई तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : मैं इस के

जवाब में तुम से बेहतर जवाब जिन्नात से क्यूं सुनता हूँ ? मैं जब भी

اَللّٰهُ के इस फ़रमान पर पहुंचता :

﴿فَبِآيِ الْاَعْمَارِ كَيْفَا تَكْتَدِبْنَ﴾ ① **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : तो ऐ

जिन्नो इन्स तुम दोनों अपने रब की

कौन सी ने'मत झुटलाओगे ।

तो वोह कहते : "हम अपने रब عَزَّوَجَلَّ की किसी ने'मत को नहीं

झुटलाएंगे।" (2)

①..... شعب الایمان للبيهقي، باب فى تعدید نعم الله، الحدیث: ٤٥٤٥، ج ٤، ص ١٢٩.

②..... تفسیر الطبری، ج ٢٧، الرحمن، تحت الایة: ١٣، الحدیث: ٣٢٩٢٨، ج ١١، ص ٥٨٢.

﴿68﴾...हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरोबर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ أَجْمَعِينَ ने सहाबए किराम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सामने सूरए रहमान की तिलावत फ़रमाई। फ़राग़त के बा'द इरशाद फ़रमाया : मैं तुम्हें ख़ामोश क्यूं देखता हूं? जिन्नात ने तुम से ख़ूबसूरत जवाब दिया कि मैं ने जब भी उन के सामने येह आयते मुबारका ﴿فَيَأْتِي الْآءَاءَ بِكُمَا تَكْدِيلِينَ﴾ तिलावत की तो वोह कहते : “या **اَللّٰهُ** ! हम तेरी किसी ने'मत को नहीं झुटलाएंगे।”

रावी बयान करते हैं कि मुझे याद पड़ता है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : उन्हीं ने येह भी कहा : ﴿وَلَكَ الْحَمْدُ﴾ या'नी और तमाम ता'रीफ़ें तेरे ही लिये हैं।⁽¹⁾

पानी पीने के बा'द की दुआ

﴿69﴾...हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू जा'फ़र رَحِمَهُ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि सय्यिदे अ़ालम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जब पानी नोश फ़रमाते तो येह कलिमात कहते :

﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي جَعَلَهُ عَذَاباً قُرْآنًا بِرَحْمَتِهِ وَلَمْ يَجْعَلْهُ مَلْحَأُجًا يَابِدُنُونَا﴾

तर्जमा : तमाम ता'रीफ़ें **اَللّٰهُ** के लिये हैं जिस ने महुज़ अपनी रहमत से इसे (या'नी पानी को), मीठा निहायत शीरीं बनाया और हमारे (या'नी उम्मत के) गुनाहों की वज्ह से इसे ख़ारी, निहायत तलख़ न बनाया।⁽²⁾

①.....سنن الترمذی، کتاب التفسیر، باب من سورة الرحمن، الحدیث: ۲، ۳۳۰، ج ۵، ص ۱۹۰، مفہوماً.

②..... کتاب الدعاء للطبرانی، باب القول عند الفراغ، الحدیث: ۸۹۹، ص ۲۸۰، جعله بدلہ سقانا.

﴿70﴾....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन शुबरुमह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي پانی نو ش فرमाते हैं कि सय्यिदुना इमाम हसन बसरी فرमा कर येही कहा करते थे। (1)

जोहद इस्लाम करने वाले की इस्लाह

﴿71﴾....हज़रते सय्यिदुना रूह बिन कासिम عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ الْمُنِيم बयान करते हैं कि उन के घर वालों में से एक शख्स आबिदो ज़हिद बने चला तो कहा : “मैं खजूर और घी का हल्वा या फ़ालूदा नहीं खाऊंगा क्योंकि मैं उस का शुक्र नहीं अदा कर सकता।” फ़रमाते हैं : “मैं हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي से मिला और ये बात बताई तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इरशाद फ़रमाया : “वोह बे वुकूफ़ शख्स है। क्या वोह ठन्डे पानी का शुक्र अदा कर लेता है ?” (2)

मदनी डाक़ा की इबादत

﴿72﴾....हज़रते सय्यिदुना मुगीरा बिन शा'बा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान फ़रमाते हैं कि शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने (रात की) नमाज़ में इतना तवील कियाम फ़रमाया कि क़दम सूज गए। अर्ज़ की गई : आका ! आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इतनी मशक्कत क्यों उठाते हैं ? आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तो बख़्शो बख़्शाए हैं ! इरशाद फ़रमाया : “क्या मैं शुक्र गुज़ार बन्दा न बनूं ?” (3)(4)

①.....شعب الإيمان للبيهقي، باب في تعديد نعم الله، الحديث: ٤٤٨٠، ج ٤، ص ١١٥.

②.....الزهدي للإمام أحمد بن حنبل، أخبار الحسن بن أبي الحسن، الحديث: ١٤٨٧، ص ٢٧٤.

③.....हकीमुल उम्मत अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْه फ़रमाते हैं : “या'नी मेरी येह नमाज़ मग़फ़िरत के लिये नहीं बल्कि मग़फ़िरत के शुक्रिया के लिये है। ख़याल रहे कि हम लोग अब्द हैं हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हैं, हम लोग शाकिर हो सकते हैं हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعालَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ शक़ूर हैं या'नी हर तरह हर वक़्त हर किस्म का आ'ला शुक्र करने वाले मक्बूल बन्दे। हज़रते अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि जन्नत की लालच में इबादत करने वाले ताजिर हैं। दोज़ख़ के ख़ौफ़ से इबादत करने वाले अब्द हैं मगर शुक्र की इबादत करने वाले अहरार हैं।” (मिरआतुल मनाज़िह, जि. 2, स. 204)

④.....صحيح مسلم، كتاب صفة القيامة، باب اكثر الاعمال، الحديث: ٢٨١٩، ص ١٥١٤.

हर वक़्त नमाज़ पढ़ने वाला घशाना

﴿73﴾...हज़रते सय्यिदुना मिस्अर बिन किदाम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं की जब येह आयते मुबारका ﴿اعْمُوا آلَ دَاوُدَ وَشُقْرًا﴾ (प. २२, स. १३) कन्ज़ुल ईमान : (ऐ दावूद वालो शुक्र करो) नाज़िल हुई तो हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के घर वालों में से हर वक़्त कोई न कोई नमाज़ में मशगूल रहता।⁽¹⁾

नया लिबास पहनने की दुआ और इस की फ़ज़ीलत

﴿74﴾...हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा बाहिली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने क़मीस पहनी। जब गले तक पहुंची तो येह दुआ पढ़ी :

﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي كَسَانِي مَا أُوَارِي بِهِ عَوْرَتِي، وَأَجْمَلُ بِهِ فِي حَيَاتِي﴾

तर्जमा : तमाम ता'रीफें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने मुझे ऐसा लिबास पहनाया जिस से मैं अपना सित्र छुपाता हूँ और इस से अपनी ज़िन्दगी में जैबो ज़ीनत हासिल करता हूँ। फिर अपने हाथ दराज़ फ़रमाए और देखा कि जो हिस्सा हाथ से ज़ाइद था उसे काट दिया। फिर आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने येह हदीसे पाक बयान फ़रमाई कि मैं ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, बि इज़्ने परवर दगार, दो अ़ालम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को इरशाद फ़रमाते सुना कि “जो शख़्स नया कपड़ा पहने और जब वोह गले तक पहुंचे या उस से पहले इस की मिस्ल कलिमात कहे और अपना पुराना कपड़ा किसी मिस्कीन को पहना दे तो

①.....شعب الايمان للييهقي، باب في تعديد نعم الله، الحديث: ٤٥٢٤، ج ٤، ص ١٢٤.

जब तक उस कपड़े का कोई एक धागा भी बाकी रहेगा वोह शख्स जिन्दगी में और मरने के बा'द **اَللّٰهُ** के कुर्ब, जिम्माए करम और हिमायत में रहेगा।⁽¹⁾”

शुक्र गुज़ार बख़्शा गया

﴿75﴾...हज़रते सय्यिदुना मिस्अर बिन किदाम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना औन बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “एक शख्स ने नई कमीस पहन कर **اَللّٰهُ** का शुक्र अदा किया तो उस की मग़फ़िरत फ़रमा दी गई।” इस पर एक शख्स ने कहा : “मैं उस वक़्त तक नहीं लौटूंगा जब तक कि नई कमीस ख़रीदने के बा'द उसे पहन कर **اَللّٰهُ** का शुक्र अदा न कर लूं।” हज़रते सय्यिदुना मिस्अर बिन किदाम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “उस ने सवाब की उम्मीद पर येह बात कही।”

शुक्र और अफ़ियत दोनों का सुवाल करो

﴿76﴾...हज़रते सय्यिदुना औन बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि एक फ़कीह का फ़रमान है : “मैं ने अपने मुआमले में ग़ौरो फ़िक्र किया तो अफ़ियत व शुक्र के इलावा किसी भलाई को शर से ख़ाली न पाया। बहुत से लोग मुसीबत में भी शाकिर रहते हैं और कई लोग अफ़ियत में होने के बा वुजूद शुक्र गुज़ार नहीं होते। पस जब तुम खुदा عَزَّوَجَلَّ से मांगो तो येह दोनों मांगो।”

①.....المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند عمر بن الخطاب، الحديث: ٣٠٥، ج ١، ص ١٠٠-

سنن الترمذی، کتاب احادیث شتی، باب ١٠٧، الحديث: ٣٥٧١، ج ٥، ص ٣٢٨-

شعب الایمان للبيهقي، باب فی املايس والوانی، فصل فیما یقول اذا لبس، الحديث:

٦٢٨٧، ج ٥، ص ١٨٢.

आफ़ियत की अलामत

﴿77﴾...हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِيّ फ़रमाते हैं :
“(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से बन्दे के उयूब की) पर्दापोशी,
आफ़ियत की अलामत है।”⁽¹⁾

﴿78﴾...हज़रते सय्यिदुना अय्यूब सख़्तयानी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं :
“बन्दे का अपने (बुरे) आ'माल के बा वुजूद महफूज़ रहना भी
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मत है।”⁽²⁾

तीन ने'मतें

﴿79﴾...हज़रते सय्यिदुना शुरैह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “बन्दे पर जो
भी मुसीबत आती है उस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तीन ने'मतें होती हैं :

- (1)....वोह मुसीबत उस के किसी दीनी मुआमले में नाज़िल नहीं हुई
- (2)....गुज़श्ता मुसीबतों से बड़ी नहीं है और
- (3)....जब उस ने होना ही था तो हो गई।”⁽³⁾

﴿80﴾...हज़रते सय्यिदुना अबू अब्दुल्लाह सुफ़यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِيّ फ़रमाते हैं कि मन्कूल है : “जो मुसीबत को ने'मत और आसूदगी को
मुसीबत शुमार न करे वोह अक्लमन्द नहीं हो सकता।”⁽⁴⁾

ने'मत के ज़रीए ना फ़रमानी न की जाए

﴿81﴾...हज़रते सय्यिदुना जि़याद बिन उबैद رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से मन्कूल
है, ने'मत पाने वाले पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का एक हक़ येह भी है कि
वोह उस ने'मत के ज़रीए ना फ़रमानी का मुर्तकिब न हो।⁽⁵⁾

①.....حلیة الاولیاء، الرقم ۳۸۷ سفیان الثوری، الحدیث: ۹۳۲۲، ج ۷، ص ۷.

②.....شعب الایمان للبيهقي، باب فی تعدید نعم الله، الحدیث: ۴۴۵۵، ج ۴، ص ۱۱۰.

③.....تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر، الرقم ۲۷۳۳، شریح بن الحارث، ج ۲۳، ص ۴۱.

④.....کتاب الزهد لابن مبارک، باب فی الصبر علی البلاء، الحدیث: ۱۰۲، ص ۲۵، ما رواه

نعیم بن حماد فی نسخه عن ابن المبارک.

⑤.....تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر، الرقم ۳۳۰۹، زیاد بن عبید، ج ۱۹، ص ۱۹۱.

शुक्र के मुतअल्लिक चन्द अशकार

﴿82﴾.... हज़रते सय्यिदुना महमूद वर्राक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الرَّزَّاقِ के अशकार हैं :

إِذَا كَانَ شُكْرِي نِعْمَةَ اللَّهِ نِعْمَةً عَلَيَّ لَهُ فِي مِثْلِهَا يَجِبُ الشُّكْرُ
فَكَيْفَ بُلُوغُ الشُّكْرِ إِلَّا بِفَضْلِهِ وَإِنْ طَالَتِ الْأَيَّامُ وَأَتَّصَلَ الْعُمْرُ
إِذَا مَسَّ بِالسَّرَّاءِ عَمَّ سُرُورُهَا وَإِنْ مَسَّ بِالضَّرَّاءِ أَعْقَبَهَا الْأَجْرُ
وَمَا مِنْهُمْ مِمَّا إِلَّا لَهُ فِيهِ مِنَّةٌ تَضِيقُ بِهَا الْأَوْهَامُ وَالْبُرِّ وَالْبُحْرُ

तर्जमा : (1).... जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत का शुक्र अदा करना भी एक ने'मत है तो ऐसे में मुझ पर शुक्र अदा करना वाजिब है ।

(2)....और उस के फ़ज़ल के बिग़ैर शुक्र तक नहीं पहुंचा जा सकता अगर्चे कितना ही अर्सा गुज़र जाए ।

(3)....खुशहाली में शुक्र करने से शादमानी बढ़ती है और मुसीबत में शुक्र अज्रो सवाब का बाइस है ।

(4)....खुशहाली और मुसीबत, दोनों ही में एहसान पोशीदा होता है जिस के इद्राक से ख़यालात, खुशकी और समन्दर की वुस्तअतें क़सिर हैं ।

ऐ क़ाश ! हालते शुक्र में मौत नशीब हो जाए

﴿83﴾.... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : “बेशक मोमिन मेरे हां मक़ामे ख़ैर पर फ़ाइज़ है और वोह मेरे शुक्र में मसरूफ़ होता है कि (इसी हालत में) मैं उस की रूह को उस के पहलूओं के दरमियान से खींच लेता हूं।”⁽¹⁾

①.....المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند أبي هريرة، الحديث: ٨٧٣٩، ج ٣، ص ٢٨٥.

एक आ'राबी का अन्दाजे शुक्र

﴿84﴾...हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन उबैद तमीमी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि एक आ'राबी ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करते हुवे कहा : ﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَا يُحْمَدُ عَلَىٰ مَكْرُوهُ غَيْرُهُ﴾ : तमाम ता'रीफें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं कि ना पसन्दीदा बात पर भी सिर्फ़ उसी की ता'रीफ़ की जाती है।

येह ने'मत का कैसा बदला है ?

﴿85﴾...हज़रते सय्यिदुना अस्साम बिन अली किलाबी कूफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन मुन्कदिर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمُفْتَدِر एक नौजवान के पास से गुज़रे जो किसी औरत के साथ खड़ा था तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ बेटे ! तुझ पर जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत है येह उस का कैसा बदला है ?”

बुख़ार से शिफ़ा की दुआ

﴿86﴾...हज़रते सय्यिदुना अबू ग़स्सान अबाया बिन कलीब कूफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं कि मुझे नैशापूर में शदीद बुख़ार हो गया तो मैं ने येह दुआ पढ़ी :

﴿الهِئِ! كَلَّمَا أَنْعَمْتَ عَلَيَّ نِعْمَةً فَلَّ عِنْدَهَا شُكْرِي وَكَلَّمَا ابْتَلَيْتَنِي بِبَلِيَّةٍ فَلَّ عِنْدَهَا صَبْرِي، فَيَا مَنْ قَلَّ شُكْرِي عِنْدَ نِعْمَتِهِ فَلَمْ يَحْذَلْنِي وَيَا مَنْ قَلَّ عِنْدَ بَلَاءِهِ صَبْرِي فَلَمْ يَعْاقِبْنِي وَيَا مَنْ رَأَى عَلَيَّ الْمَعَاصِيَ فَلَمْ يَفْضَحْنِي، اكْشِفْ صُرْبِي﴾

तर्जमा : ऐ मेरे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जब भी तू ने मुझे ने'मत अता फ़रमाई तो मुझ से शुक्र में कमी वाक़ेअ हुई और जब भी तू ने मुझे किसी आज़माइश में मुब्तला किया तो मुझ से सब्र बहुत कम हुवा। ऐ अपनी ने'मत पर मेरे शुक्र के कम होने के बा वुजूद मुझे बे यारो मददगार न छोड़ने वाले परवर दगार ! ऐ आज़माइश में मेरे सब्र की

कमी के बा वुजूद मेरी गिरिफ़्त न फ़रमाने वाले रब्बे ग़फ़ार ! ऐ मेरी ना फ़रमानियों के बा वुजूद मुझे रुस्वाई से बचाने वाले खुदाए सत्तार ! मेरी तकलीफ़ दूर फ़रमा दे ।

फ़रमाते हैं : “इस दुआ की बरकत से मेरा बुख़ार जाता रहा ।”⁽¹⁾

हलाक़्त से बचाने वाले आ'माल

﴿87﴾....हज़रते सय्यिदुना अबुल अ़लिया रफ़ीअ़ बिन मेहरान फ़रमाते हैं : “मुझे उम्मीद है कि ने'मत पर **अल्लाह** का शुक्र अदा करने वाला और गुनाह की मुआफ़ी मांगने वाला बन्दा हलाक़ नहीं होगा ।”⁽²⁾

ने'मत में हुज्जत और तावान भी है

﴿88﴾....हज़रते सय्यिदुना इब्ने सम्माक़ **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने बयान फ़रमाया कि हज़रते मुहम्मद बिन हसन **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** जब रक्का शहर के काज़ी मुक़रर हुवे तो मैं ने उन्हें एक मक्तूब लिखा कि “हर हाल में **अल्लाह** से डरते रहो और ने'मत का शुक्र कम करने और उस के ज़रीए मा'सियत में पड़ने की वजह से **अल्लाह** की हर ने'मत के मुआमले में उस से ख़ौफ़ज़दा रहो क्यूंकि ने'मत में जहां हुज्जत है वहीं उस में तावान भी है । हुज्जत तब है जब उसे मा'सियत का ज़रीआ बनाया जाए और तावान उस वक़्त है जब बन्दा उस के शुक्र में कोताही करे । बहर हाल अगर तुम शुक्र को जाएअ़ कर बैठो या गुनाह का इर्तिकाब कर बैठो या फिर किसी हक़ में कमी कर दो तो **अल्लाह** तुम्हें मुआफ़ फ़रमाए ।”⁽³⁾

①.....شعب الإيمان للبيهقي، باب في الصبر على المصائب، الحديث: ١٠٢٣٤، ج ٤، ص ٢٥٨.

②.....الكامل في ضعفاء الرجال، الرقم ٦٧٩ رفيع بن مهران، ج ٤، ص ٩٥، دون قوله “اثنيتين”.

③.....حلية الاولياء، الرقم ٤٠١ محمد بن صبيح، الحديث: ١١٩٥٠، ج ٨، ص ٢٢٣.

जन्नतियों और जहन्नमियों के तशक्कुर ने रुला दिया

«89»... हज़रते सय्यिदुना नज़्ज़ बिन इस्माईल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِدِ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना रबीअ बिन अबू राशिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِدِ दाइमी मरज़ में मुब्तला एक शख्स के पास से गुज़रे तो बैठ कर **अल्लाह** की हम्द करने और रोने लगे। वहां से गुज़रने वाले एक शख्स ने पूछा : “**अल्लाह** आप पर रहम फ़रमाए ! आप क्यों रोते हैं ?” इरशाद फ़रमाया : “मैं ने अहले जन्नत और अहले जहन्नम को याद किया तो जन्नतियों को अफ़ियत वालों और जहन्नमियों को मुसीबत ज़दों के मुशाबेह पाया। बस इसी बात ने मुझे रुला दिया।”⁽¹⁾

ने'मतों की क़द्र जानना चाहे तो.....!

«90»... हज़रते सय्यिदुना अबू हरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जब तुम में से कोई **अल्लाह** की ने'मतों की क़द्र जानना चाहे तो अपने से कम ने'मत वालों को देखे, ज़ियादा वालों को न देखे।”⁽²⁾

उस का इल्म कम और अज़ाब करीब है

«91»... हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “जो सिर्फ़ खाने पीने ही को **अल्लाह** की ने'मत जाने उस का इल्म कम और अज़ाब करीब है।”⁽³⁾

①.....حلية الاولياء، الرقم ٢٩٢ الربيع بن ابي راشد، الحديث: ٦٤٣٦، ج ٥، ص ٩٠.

②.....الزهد لابن مبارك، الحديث: ١٤٣٣، ص ٥٠٢.

③.....الزهد لابن مبارك، الحديث: ١٥٥١، ص ٥٤٢.

मैं तुम से येही चाहता था

﴿92﴾... हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने एक शख्स को सलाम किया। उस ने सलाम का जवाब दिया। फिर आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उस से पूछा : “कैसे हो ?” उस ने जवाब में कहा कि “मैं आप के साथ **اَبُوْللّٰه** की ने'मत पर उस का शुक्र अदा करता हूँ।” अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “मैं तुम से येही चाहता था।” (1)

﴿93﴾... हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا इरशाद फ़रमाते हैं : “काश ! हम दिन में बार बार मुलाकात करें और एक दूसरे का हाल सिर्फ़ इस लिये दरयाफ़्त करें ताकि जवाबन **اَبُوْللّٰه** عُزْرَجَلْ शुक्र अदा करें।” (2)

जाहिर और छुपी ने'मतें

﴿94﴾... **اَبُوْللّٰه** عُزْرَجَلْ का फ़रमाने आलीशान है :

وَأَسْبَبَ عَلَيْكُمْ نِعْمَةً ظَاهِرَةً وَبَاطِنَةً
तर्जमए कन्जुल ईमान : और तुम्हें
भरपूर दीं अपनी ने'मतें जाहिर और
छुपी।

इस की तफ़्सीर में हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلِيُّ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِدِ फ़रमाते हैं कि “इस से मुराद ﴿لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ﴾ की मा'रिफ़त है।” (3)(4)

①..... مؤطا الامام مالك برواية محمد، باب الزهد و التواضع، ص ۳۲۷.

②..... شعب الایمان للبيهقي، باب في تعديد نعم الله، الحديث: ۴۴۵۱، ج ۴، ص ۱۱۰.

③..... تفسير الطبري، پ ۲۱، لقمان، تحت الاية ۲، الحديث: ۲۸۱۳۸، ج ۱۰، ص ۲۱۸.

④..... इस आयत की तफ़्सीर में कई अक्वाल हैं चुनान्चे, सदरुल अफ़ज़िल हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلِيُّ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में.....

अफ़ज़ल तरीन ने'मत

﴿95﴾....हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उयैना رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “**अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने बन्दों को जो सब से अफ़ज़ल ने'मत अता फ़रमाई वोह येह है कि उन्हें ﴿لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ﴾ की मा'रिफ़त बख़्शी और बेशक येह कलिमा आख़िरत में बन्दों के लिये ऐसा होगा जैसे दुन्या में पानी है।”⁽¹⁾

हाए रे हुस्नो जमाल !

﴿96﴾....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मिख़मर शरअबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِيِّ ने मिम्बर पर बैठते हुवे लोगों पर एक निगाह डाली जब कि लोग ज़र्द व सुख़ दिखाई दे रहे थे (या'नी उन्हों ने ज़ैबो ज़ीनत का ख़ूब एहतिमाम किया हुवा था) और आसूदा हाल नज़र आ रहे थे और लिबास भी उम्दा ज़ेबे तन किये हुवे थे, पस आप ने उन की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : “हाए रे हुस्नो जमाल ! पहले कुछ न था और अब चमड़े के ख़ैमे, उम्दा इमामे और लम्बे यमनी कपड़े हैं। तुम

.....इस के तहूत फ़रमाते हैं : “जाहिरी ने'मतों से दुरुस्तिये आ'जा व ह्वासे ख़्मसए जाहि़रा और हुस्न व शक़्लो सूरत मुराद हैं और बातिनी ने'मतों से इल्मे मा'रिफ़त व मल्काते फ़ाज़िला वग़ैरा । हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि ने'मते जाहि़रा तो इस्लाम व कुरआन है और ने'मते बातिना येह है कि तुम्हारे गुनाहों पर पर्दे डाल दिये, तुम्हारा अफ़शाए हाल न किया, सज़ा में जल्दी न फ़रमाई । बा'जू मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया कि ने'मते जाहि़रा दुरुस्तिये आ'जा और हुस्ने सूरत है और ने'मते बातिना ए'तिक्दादे क़ल्बी । एक क़ौल येह भी है कि ने'मते जाहि़रा रिज़्क है और बातिना हुस्ने खुल्फ़ । एक क़ौल येह है कि ने'मते जाहि़रा अहकामे शरइय्या का हल्का होना है और ने'मते बातिना शफ़ाअत । एक क़ौल येह है कि ने'मते जाहि़रा इस्लाम का ग़ल्बा और दुश्मनों पर फ़न्ह्याब होना है और ने'मते बातिना मलाइका का इमदाद के लिये आना । एक क़ौल येह है कि ने'مते जाहि़रा रसूल का इत्तिबाअ है और ने'मते बातिना उन की महब्बत ।

(तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह. 21, लुक़मान, तहत्तुल आयह : 20)

①.....حلية الاولياء، الرقم: 390، سفیان بن عيينة، الحديث: 680، ج 7، ص 321.

खुश हाल हो गए जब कि लोग परागन्दा हाल हो गए। वोह कपड़े बुनते हैं और तुम पहनते हो। वोह अता करते हैं और तुम लेते हो। वोह जानवरों की परवरिश करते हैं और तुम उन पर सुवारी करते हो। वोह काशतकारी करते हैं और तुम खाते हो।” फिर खुद भी रोए और दूसरों को भी रुला दिया।⁽¹⁾

येह ने'मतें और सखावतें कितनी अज़ीम हैं !

﴿97﴾....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन कुर्त -अब्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي ने ईदुल अज़हा या ईदुल फ़ित्र के दिन लोगों को रंग बे रंगे कपड़े पहने हुवे देखा तो मिम्बर पर जल्वा फ़रमा हो कर इरशाद फ़रमाया : “येह कितनी अज़ीम ने'मतें हैं जिन्हें **اللَّهُ** ने पूरा किया और कितनी अज़ीम सखावतें हैं जिन्हें उस ने ज़ाहिर किया। लोगों की कोई भी उम्दा शै उन पर उस ने'मत से ज़ियादा सख्त नहीं होती जिस का वोह इवज़ अदा नहीं कर सकते और जब तक ने'मत पाने वाला अता करने वाले का शुक्र अदा करता रहे, ने'मत बाकी रहती है।”⁽²⁾

शुक्र बजा लाओ, ने'मतें पाओ

﴿98﴾....हज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अब्दुल्लाह मुज़नी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِي फ़रमाते हैं कि “जब कोई शख्स ﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ﴾ कहता है तो इस की बरकत से उस के लिये ने'मत वाजिब हो जाती है।” पूछा गया कि “इस ने'मत का बदला क्या है?” फ़रमाया : “इस का बदला येह है कि तुम ﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ﴾ कहो ! यूँ एक और ने'मत मिल जाएगी क्योंकि **اللَّهُ** की ने'मतें ख़त्म नहीं होती।”⁽³⁾

1.....الطّبقات الكبرى لابن سعد، الرقم 3845 عبد الله بن مخرم، ج 7، ص 313.

2.....فضيلة الشكر، باب ما يجب على الناس من الشكر، الحديث: 93، ص 66.

3.....شعب الايمان للبيهقي، باب في تعديد نعم الله، الحديث: 4408، ج 4، ص 99.

शुक्र गुज़ार की हिक़ायत

﴿99﴾....हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारिसी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने बयान फ़रमाया कि एक शख़्स को दुन्या की दौलत से बहुत नवाज़ा गया और फिर सब कुछ जाता रहा तो वोह **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की हम्दो सना करने लगा यहां तक कि उस के पास बिछाने के लिये सिर्फ़ एक चटाई रह गई मगर वोह फिर भी **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की हम्दो सना में मसरूफ़ रहा। एक दूसरे मालदार शख़्स ने चटाई वाले से कहा : “अब तुम किस बात पर **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** का शुक्र अदा करते हो ?” उस ने कहा : “मैं उन ने’मतों पर **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** का शुक्र अदा करता हूं कि अगर सारी दुन्या की दौलत भी दे दूं तो वोह ने’मतें मुझे न मिलें।” उस ने पूछा : “वोह क्या ?” जवाब दिया : “क्या तुम अपनी आंख, ज़बान, हाथों और पाउं को नहीं देखते ? (कि येह **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की कितनी बडी ने’मतें हैं ?)”⁽¹⁾

एक शाक्वी की इस्लाह का अज्ञोख़ा अन्दाज़

﴿100﴾....हज़रते सय्यिदुना सईद बिन आमिर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि एक शख़्स हज़रते सय्यिदुना यूनुस बिन उबैद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अपनी तंगदस्ती की शिकायत करने लगा तो आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उस से पूछा : “जिस आंख से तुम देख रहे हो क्या इस के बदले एक लाख दिरहम तुम्हें क़बूल हैं ?” उस ने अर्ज़ की : “नहीं।” फ़रमाया : “क्या तेरे एक हाथ के इवज़ लाख दिरहम ?” उस ने कहा : “नहीं।” फिर फ़रमाया : “तो क्या पाउं के बदले में ?” जवाब दिया : “नहीं।” रावी बयान करते हैं कि आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उसे **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की दीगर ने’मतें याद दिलाने के

①.....شعب الایمان للبيهقي، باب فی تعدید نعم الله، الحدیث: ٤٤٦٢، ج ٤، ص ١١٢.

बा'द इरशाद फ़रमाया : “मैं तो तुम्हारे पास लाखों देख रहा हूँ और तुम मोहताजी की शिकायत कर रहे हो ?”⁽¹⁾

﴿101﴾....हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं :
“सिंहहते जिस्मानी गिना (तवंगरी) का नाम है ।”⁽²⁾

अफ़ज़ल दुआ और ज़िक्र

﴿102﴾....हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ
फ़रमाते हैं : “ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
ने इरशाद फ़रमाया : “अफ़ज़ल दुआ ﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ﴾ है और अफ़ज़ल
ज़िक्र ﴿لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ﴾ है ।”⁽³⁾

﴿103﴾....हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम नख़ई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं कि
मन्कूल है : “(अज़्र के) ज़ियादा होने के ए'तिबार से ﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ﴾
बहुत बड़ा कलाम है ।”⁽⁴⁾

शुक्र की मन्नत

﴿104﴾....हज़रते सय्यिदुना का'ब बिन उज़राह अन्सारी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ
फ़रमाते हैं : “शहनशाहे मदीना, करारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर
पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अन्सार में से एक
गुरौह को (किसी महाज़ पर) रवाना करते वक़्त इरशाद फ़रमाया :
“अगर **اَللّٰهُ** ने उन्हें सलामत रखा और माले ग़नीमत अता
फ़रमाया तो मुझ पर **اَللّٰهُ** का शुक्र अदा करना लाज़िम है ।”
(रावी कहते हैं) वोह कुछ ही अर्से में माले ग़नीमत पा कर सलामती

①.....حلیة الاولیاء، الرقم ۲۰۲ یونس بن عبید، الحدیث: ۳۰۱۷، ج ۳، ص ۲۵.

②.....تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر، الرقم ۵۴۶۴، عویمر بن زید، ج ۴۷، ص ۱۸۳.

③.....شعب الایمان للبیهقی، باب فی تعدید نعم الله، الحدیث: ۴۳۷۱، ج ۴، ص ۹۰.

④.....حلیة الاولیاء، الرقم ۲۷۴ ابراهیم بن یزید، الحدیث: ۵۴۸۳، ج ۴، ص ۲۵۷.

के साथ लौट आए। एक सहाबी رضي الله تعالى عنه ने अर्ज की : “या रसूलल्लाह صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ! हम ने आप صلى الله تعالى عليه وآله وسلم को येह फ़रमाते हुवे सुना था कि “अगर **अल्लाह** عز وجل ने इन्हें सलामत रखा और माले ग़नीमत अता फ़रमाया तो मुझ पर **अल्लाह** عز وجل का शुक्र अदा करना लाज़िम है।” आप صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने इरशाद फ़रमाया : “मैं शुक्र अदा कर चुका हूँ, मैं ने यूँ अर्ज की है : ﴿اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ شُكْرًا وَلَكَ الْمَنُّ فَضْلًا﴾ या’नी ऐ **अल्लाह** عز وجل ! तेरा शुक्र है। तमाम ता’रीफ़ें तेरे लिये हैं और येह तेरा ही फ़ज़्लो एहसान है।”⁽¹⁾

मुकम्मल हम्द

﴿105﴾....हज़रते सय्यिदुना जा’फ़र बिन मुहम्मद رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि मेरे वालिदे मोहतरम का ख़च्चर गुम हो गया तो उन्होंने ने मन्त मानी कि “अगर **अल्लाह** عز وجل मुझे मेरा ख़च्चर लौटा दे तो मैं उस की ऐसी हम्द करूंगा जिस से वोह राज़ी हो जाएगा।” कुछ ही देर में उन का ख़च्चर ज़ीन और लगाम समेत उन्हें मिल गया तो वोह उस पर सुवार हुवे। जब सीधे हो कर बैठ गए और अपने कपड़े समेट लिये तो सर आस्मान की तरफ़ उठा कर सिर्फ़ الْحَمْدُ لِلَّهِ कहा। उन से इस के बारे में पूछा गया तो फ़रमाया : “क्या मैं ने कुछ छोड़ दिया है या कुछ बाकी रहने दिया ? नहीं बल्कि मैं ने **अल्लाह** عز وجل की मुकम्मल हम्द कर ली है।”⁽²⁾

हर ने’मत क़ शुक्र अदा हो जाए

﴿106﴾....हज़रते सय्यिदुना यहूया बिन सईद رضي الله عنه फ़रमाते हैं : “जिस ने हर ने’मत पर ख़्वाह मिल गई हो या मिलने वाली हो,

①.....المعجم الكبير، الحديث: ٣١٦، ج ١٩، ص ١٤٤، بتغير.

②.....حلية الاولياء، الرقم ٢٣٥ محمد بن علي، الحديث: ٣٧٦١، ج ٣، ص ٢١٧.

ख़ास हो या आ़ाम हो ﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ﴾ कहा बेशक उस ने हर ने'मत पर **اَللّٰهُ** का शुक्र अदा किया और जिस ने हर मुसीबत पर ख़्वाह नाज़िल हो चुकी हो या नाज़िल होने वाली हो, ख़ास हो या आ़ाम हो ﴿اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُونَ﴾ कहा बेशक उस ने हर मुसीबत पर ﴿اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُونَ﴾ कह लिया ।”

जिन की महबूबत ख़ुदा आ़ाम करे

﴿107﴾... हज़रते सय्यिदुना अब्दुरहमान बिन जैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन मुन्कदिर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُقْتَدِر عَلَيْهِ ने हज़रते सय्यिदुना अबू हाज़िम सलमह बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار عَلَيْهِ से कहा कि : “मुझे अक्सर ना वाकिफ़ लोग मिलते हैं और मेरे लिये दुआए ख़ैर करते हैं हालांकि मैं ने कभी उन के साथ कोई भलाई नहीं की ।” हज़रते सय्यिदुना अबू हाज़िम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “इसे अपनी वजह से न समझो बल्कि उस की रहमत पर गौर करो जो उन्हें तुम्हारे पास लाया है और उस का शुक्र अदा किया करो ।” इस के बा'द रावी अब्दुरहमान बिन जैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने येह आयते मुबारका तिलावत की :

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا ۝

(प १६, मरियम: १६)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये अ़न क़रीब उन के लिये रहमान महबूबत कर देगा ।⁽¹⁾



हिस्साएँ दुवुम

एक निहायत उम्दा दुआ

﴿108﴾....हज़रते सय्यिदुना मुअज़ बिन जबल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि शहनशाहे मदीना, करारे कल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मुझे इरशाद फ़रमाया : “मैं तुम से महब्बत करता हूँ, तुम येह दुआ मांगा करो :

﴿اللَّهُمَّ اَعِنِّي عَلَى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ﴾

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** ! अपने जिक्र, अपने शुक्र और अपनी अच्छी तरह इबादत पर मेरी मदद फ़रमा ।”⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना मुअज़ बिन जबल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने सय्यिदुना सनाबही से फ़रमाया : मैं तुम से महब्बत करता हूँ, तुम येह दुआ मांगा करो । सय्यिदुना सनाबही ने सय्यिदुना अबू अब्दुर्रहमान से, सय्यिदुना अबू अब्दुर्रहमान ने सय्यिदुना उक्बा बिन मुस्लिम से, सय्यिदुना उक्बा बिन मुस्लिम ने सय्यिदुना हैवह बिन शुरैह से, सय्यिदुना हैवह बिन शुरैह ने सय्यिदुना अबू उब्दा से, सय्यिदुना अबू उब्दा ने सय्यिदुना अम्र बिन अबी सलमह से, (और इमाम इब्ने अबी दुन्या फ़रमाते हैं :) और सय्यिदुना हसन जरवी ने मुझ से, सय्यिदुना इमाम इब्ने अबी दुन्या ने अपने तलामिजा से, सय्यिदुना अबू बक्र बिन नजाद ने अपने तलामिजा से, सय्यिदुना अबू बक्र बिन नजाद ने सय्यिदुना अबू अली हसन बिन शाज़ान और सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन उबैदुल्लाह हुरफ़ी से, सय्यिदुना अबू अली हसन बिन शाज़ान ने सय्यिदुना अबू सा'द बिन खुशैश से, सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन उबैद हुरफ़ी ने सय्यिदुना शरीफ़ से, सय्यिदुना शरीफ़ और सय्यिदुना इब्ने खुशैश दोनों ने सय्यिदुना हाफ़िज़ अबू ताहिर अहमद बिन मुहम्मद से, सय्यिदुना हाफ़िज़ अबू ताहिर अहमद बिन मुहम्मद ने सय्यिदुना

①.....سنن ابی داؤد، کتاب الوتر، باب فی الاستغفار، الحدیث: ۱۰۲۲، ج ۲، ص ۱۲۳.

शैख़ अबू फ़ज़ल जा'फ़र से, सय्यिदुना शैख़ अबू फ़ज़ल जा'फ़र ने सय्यिदुना शैख़ नासिरुद्दीन मुहम्मद बिन अरबशाह (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى) से और उन्होंने ने इरशाद फ़रमाया : “मैं भी तुम से महब्वत करता हूँ, तुम येह दुआ मांगा करो ।” (या'नी हर शैख़ ने अपने शागिर्द को येह हदीस बयान करते हुवे येह बात और दुआ इरशाद फ़रमाई)

अलीफ़ए अव्वल की दुआ

﴿109﴾....अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ यूँ दुआ किया करते थे :

﴿أَسْأَلُكَ تَمَامَ النِّعْمَةِ فِي الْأَشْيَاءِ كُلِّهَا، وَالشُّكْرَ لَكَ عَلَيْهَا حَتَّى تَرْضَى وَبَعْدَ الرِّضَا، وَالْخَيْرَ فِي جَمِيعِ مَا تَكُونُ فِيهِ الْخَيْرَ بِجَمِيعِ مَسْئُورِ الْأُمُورِ كُلِّهَا لِأَسْئُورِهَا يَا كَرِيمُ﴾

तर्जमा : ऐ करीम ! मैं तुझ से तमाम अश्या में पूरी ने'मत और उन पर तेरा शुक्र करने की तौफ़ीक़ मांगता हूँ यहां तक कि तू राज़ी हो जाए और तेरी रिज़ा के बा'द (भी शुक्र की तौफ़ीक़ चाहता हूँ) और हर तरह की मुश्किलत से बचते हुवे तमाम तर आसानियों के साथ हर तरह की भलाई का सुवाली हूँ ।

शुक्र, ने'मत से अफ़ज़ल है

﴿110﴾....हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى فَرَمَاتे हैं : **اَللّٰهُ** जब अपने बन्दे को कोई ने'मत अता फ़रमाता है और वोह उस पर ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ﴾ कहता है (या'नी शुक्र बजा लाता है) तो येह शुक्र की ने'मत उस पहली ने'मत से अफ़ज़ल होती है ।

हज़रते मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “मुझे हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान बिन उयैना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से येह बात पहुंची है कि उन से इस रिवायत के मुतअल्लिक़ पूछा गया तो उन्होंने ने फ़रमाया : “येह ख़ता है क्यूंकि बन्दे का फ़े'ल **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के फ़े'ल से अफ़ज़ल नहीं हो सकता ।”⁽¹⁾ ता हम बा'ज उलमा ने इस का मा'ना

①.....شعب الایمان للبيهقي، باب في تعديدينعم الله، الحديث: ٤٤٠٧، ٤٤٠٨، ج٤، ص ٩٩.

येह बयान फ़रमाया है कि **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** जब किसी बन्दे को ने'मत अता फ़रमाता है तो अगर वोह बन्दा उन लोगों में से हो जो **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की हम्द को महबूब रखते हैं तो **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** उसे अपने फे'ल की मा'रिफ़त अता फ़रमा देता है। फिर वोह **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** का शुक्र इस तरह अदा करता है जिस तरह करना चाहिये। पस **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** उसे ने'मत में पाई जाने वाली इबादत "शुक्र" की तौफ़ीक़ बख़्शा देता है। तो येह शुक्र भी खुदा ही का फ़ज़ल हुवा।⁽¹⁾

दुन्या क्यूं पसन्द नहीं ?

﴿111﴾.... हज़रते सय्यिदुना मजमअ अन्सारी رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِيْ एक बुजुर्ग रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى के मुतअल्लिक़ बयान करते हैं कि उन्होंने ने फ़रमाया :
 " **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** का मुझे दुन्या से बचा लेने का एहसान, उस की कुशादगी की सूत में मिलने वाली ने'मत से अफ़ज़ल है। क्यूंकि **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** ने अपने प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के लिये दुन्या को पसन्द नहीं फ़रमाया इस लिये मुझे वोह ने'मतें जो **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** ने अपने नबी के लिये पसन्द फ़रमाई उन ने'मतों से ज़ियादा प्यारी हैं जो उस ने अपने नबी के लिये ना पसन्द फ़रमाई।"⁽²⁾

दुन्या से हिफ़ज़त पर श्री शुक्र चाहिये

﴿112﴾.... बा'ज उलमाए किराम رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام फ़रमाते हैं : " आलिम को चाहिये कि इस बात पर **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** का शुक्र अदा करे कि

①..... इसी हदीस की शर्ह करते हुवे हज़रते सय्यिदुना अल्लामा अब्दुररुफ़ मनावी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى इरशाद फ़रमाते हैं : " **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ** " कहना (या'नी शुक्र की तौफ़ीक़ मिल जाना) **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की ने'मत है और जिस पर हम्द की गई वोह भी **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** ही की ने'मत है और बा'ज ने'मतें बा'ज से अफ़ज़ल हो सकती हैं पस शुक्र की ने'मत माल, इज़्ज़त और अवलाद वगैरा ने'मतों से अफ़ज़ल है और इस से बन्दे के फे'ल का रब **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के फे'ल से अफ़ज़ल होना लाज़िम नहीं आता।"⁽³⁾

②..... شعب الایمان للبيهقي، باب في تعديد نعم الله، الحديث: ٤٤٨٩، ج٤، ص ١١٧.

उस ने बा'ज ख़्वाहिशाते दुन्या से महफूज़ रखा जैसा कि वोह **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की अ़ता कर्दा (दीगर) ने'मतों पर उस का शुक्र अदा करता है ताकि वोह काइम रहें हालांकि इन ने'मतों का उस से हि़साब होगा हत्ता कि **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उसे मुआफ़ फ़रमा दे । मगर उस आ़लिम को इन में मुब्तला न फ़रमाया कि कहीं उस का दिल इन में मशगूल हो और आ'ज़ा थकावट का शिकार हों । लिहाज़ा वोह सुकूने क़ल्बी पर ब कोशिशे तमाम **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का शुक्र अदा करे ।⁽¹⁾

रात भर ने'मतों का ही तज़क़िरा रहा

﴿113﴾...हज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी हवारी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي** बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना फुज़ैल बिन इयाज़ और हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान बिन उयैना (**رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمَا**) एक रात सुबह तक एक दूसरे से **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की ने'मतों का तज़क़िरा करते रहे । चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान बिन उयैना **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : “**अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने हमें येह ने'मते अ़ता फ़रमाई....वोह ने'मते अ़ता फ़रमाई....हम पर येह एहसान फ़रमाया....वोह एहसान फ़रमाया ।”⁽²⁾

मग़ार शुक्र शेक लिया

﴿114﴾...**अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** इरशाद फ़रमाता है :

سَسْتَدْرَأُ جُحُومًا مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ **تَرْجَمَاف كَنْجُولَ إِيمَانٍ** : जल्द ही
हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता अ़ज़ाब
की तरफ़ ले जाएंगे जहां से उन्हें ख़बर
न होगी ।

(प. ९, अ. १२, अ. १२)

①.....شعب الإيمان للبيهقي، باب في تعدد نعم الله، الحديث: ٤٤٩٠، ج ٤، ص ١١٧.

②.....المرجع السابق، الحديث: ٤٤٥٢، ص ١١٠.

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : “या’नी हम ने उन पर अपनी ने’मतें पूरी कर दीं और उन्हें शुक्र से रोक लिया ।” दीगर उलमाए किराम رَحْمَةُ اللَّهِ السَّلَام फ़रमाते हैं : “या’नी जब भी वोह गुनाह करते हैं उन्हें नई ने’मत अ़ता कर दी जाती है ।” हज़रते सय्यिदुना इब्ने दावूद رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “लेकिन वोह भूल जाते हैं ।”(1)

इस्तिद-राज की वज़ाह़त

﴿115﴾...हज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी حَدِيثُ سَمَاءُ الثَّوْرَانِي से इस्तिद-राज के बारे में पूछा गया तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “इस से मुराद ने’मतें जाएअ करने वालों के साथ **اَللّٰهُ** की खुफ़्या तदबीर है ।”

नीज़ हज़रते सय्यिदुना यूनुस رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि जब बन्दे का **اَللّٰهُ** के हां कोई मक़ामो मर्तबा हो और बन्दा उस की हिफ़ाज़त करे, उस पर बर करार रहे, फिर **اَللّٰهُ** की अ़ता पर उस का शुक्र अदा करे तो **اَللّٰهُ** उस को उस से आ’ला ने’मत अ़ता फ़रमाता है और अगर वोह शुक्र न करे तो **اَللّٰهُ** उसे ढील दे देता है और बन्दे का शुक्र को जाएअ कर देना ही इस्तिद-राज कहलाता है ।(2)

ना शुक्रि ने हलाक कर डाला

﴿116﴾...हज़रते सय्यिदुना अबू हाज़िमِ اللَّهِ الْأَحْرَمِ फ़रमाते हैं : “**اَللّٰهُ** का मुझ से दुन्या को रोक लेना मुझे दुन्या अ़ता
 ①.....الاسماء والصفات للبيهقي، باب قول الله عز وجل (قالوا إنا معكم إنما نحن مستهزؤن)،
 الحدیث: ۹۶۹، ج ۳، ص ۶۲.

②.....المرجع السابق، الحدیث: ۹۶۷، ۹۶۸، ص ۹۶۷، ۹۶۸.

करने से ज़ियादा बड़ी ने'मत है क्योंकि मैं ने एक ऐसी क़ौम देखी जिसे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने ने'मतें अता फ़रमाई तो वोह (ना शुक्र की वजह से) हलाक हो गई।”(1)

आईना देखने की एक दुआ

﴿117﴾....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** जब आईने में अपना रुखे अन्वर देखते तो यह दुआ पढ़ते :

﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي سَوَّى خَلْقِي فَعَدَلَهُ وَكَرَّمَ صُورَةَ وَجْهِي وَحَسَّنَهَا وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ﴾

तर्जमा : तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के लिये हैं जिस ने दुरुस्त तरीके से मेरी तख़लीक़ फ़रमाई, मेरे चेहरे को मुकर्रम और ख़ूब सूरत बनाया और मुझे मुसलमानों में शामिल रखा।”(2)

इस्लाम एक ने'मत है

﴿118﴾....हज़रते सय्यिदुना शुरैह बिन उबैदुल्लाह **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ** बयान करते हैं कि मरवान बिन हक़म जब इस्लाम का ज़िक्र करता तो कहता : “येह मेरे रब **عَزَّوَجَلَّ** का एहसान है, मेरे आ'माल या मेरे इरादे को इस में दख़ल नहीं, मैं तो गुनहगार हूं।”

छुपी हुई सलतनत

﴿119﴾....हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : “आले दावूद की हिक्मत भरी बातों में से येह भी है कि “अ़फ़िय्यत छुपी हुई सलतनत है।”

अहमद बिन मूसा **عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ** के अशआर

﴿120﴾....हज़रते मुसन्निफ़ **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन मूसा सक्फ़ी **الْوَلِيُّ** **عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللهِ** ने मुझे येह अशआर सुनाए :

①.....حلية الاولياء، الرقم ٢٤٠ سلمة بن دينار، الحديث: ٣٩٢٥، ج ٣، ص ٢٧٠.

②.....المعجم الاوسط، الحديث: ٧٨٧، ج ١، ص ٢٣٠، “وكرّم” بدله “وصور”.

وَكَمْ مِنْ مُدْخِلٍ لَوْ مَثَّ فِيهِ لَكُنْتُ بِهِ نَكَالًا فِي الْعَشِيرَةِ
 وَقِيَّتِ السُّوءِ وَالْمَكْرُوهِ فِيهِ وَرُحْتُ بِنِعْمَةٍ فِيهِ سَيِّرَةٌ
 وَكَمْ مِنْ نِعْمَةٍ لِلَّهِ تُمَسَّى وَتُصْبِحُ لَيْسَ تَعْرِفُهَا كَبِيرَةٌ

तर्जमा : (1)...कितने ही कमीने लोग ऐसे हैं कि अगर मैं भी उन के साथ मर जाता तो इस के बाइस खानदान में एक इब्रतनाक सज़ा बन जाता ।

(2)...मुझे बुराई और ना पसन्दीदा बात से बचा लिया गया और मैं ने पाक दामनी वाली ने'मत से राहत पाई ।

(3)...और **اَبْلَاهُ** **عَزَّوَجَلَّ** की कितनी ही ने'मतें तुम्हें सुब्हो शाम मिलती हैं मगर तुम उन्हें अज़ीमुश्शान नहीं समझते ।

शुक्राने में गुलाम आजाद कर दिया

﴿121﴾...हज़रते सय्यिदुना राशिद बिन सा'द **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** बयान करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** को शक की बिना पर एक गुरौह की तरफ़ बुलाया गया जो एक जगह जम्अ थे । चुनान्चे, आप **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** उन की गिरिफ्त फ़रमाने के लिये चल पड़े लेकिन आप **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** के वहां पहुंचने से पहले ही वोह मुन्तशिर हो चुके थे । तो आप **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने इस बात के शुक्राने में एक गुलाम आजाद फ़रमाया कि इन के हाथों किसी मुसलमान की रुस्वाई नहीं हुई ।

कौन सी ने'मत अफ़ज़ल है ?

﴿122﴾...हज़रते सय्यिदुना उक्बा बिन अब्दुल्लाह रिफ़ाई **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाते हैं : मैं और हज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अब्दुल्लाह मुज़नी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** की हज़रते सय्यिदुना अबू तमीमा हुजैमी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** की

इयादत करने के लिये हाज़िर हुवे, तो हज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उन से अर्ज़ की : “ऐ अबू तमीमा ! आप ने किस हाल में सुब्ह की ?” तो उन्होंने ने फ़रमाया : “दो ने’मतों के दरमियान और मैं उन दोनों के दरमियान इज़तिराब का शिकार रहा और मैं नहीं जानता कि उन में से अफ़ज़ल कौन सी है ?

(1)....वोह गुनाह जिस पर **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने पर्दा डाल दिया तो मैं ने इस हाल में सुब्ह की, कि मुझे इस बात का ख़ौफ़ ही न रहा कि कोई इस के बाइस मुझे आर दिलाएगा और

(2)....वोह महबूबत जो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने मेरे लिये लोगों के दिलों में डाल दी, हालांकि मैं इस काबिल न था ।”

﴿123﴾....हज़रते सय्यिदुना सालेह बिन मुस्मार الغَمَّارِ اللهُ عَلَيْهِ رَحْمَةٌ فرمामते हैं : “**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ का मुझ से दुन्या को रोक लेना मुझे दुन्या अता फ़रमाने से बड़ी ने’मत है ।”⁽¹⁾

﴿124﴾....उम्मूल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिदीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया कि जब हज़रते नूह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ क़ज़ाए हाजत से फ़रागत पाते तो इस तरह शुक्र बजा लाते :

﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي آذَانِي طَعْمَهُ وَأَبْفِي مَنفَعَتُهُ فِي جَسَدِي وَأَخْرَجَ عَنِّي آذَانَهُ﴾
तर्जमा : तमाम ता’रीफें **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने मुझे (अपनी ने’मत का) मज़ा चखाया फिर उस के नफ़अ को मेरे जिस्म में बाकी रखा और तक्लीफ़ को मुझ से दूर कर दिया ।⁽²⁾

①.....الزهد للإمام أحمد بن حنبل، زهد عبيد بن عمير، الحديث: ٢٢٨٥، ص ٣٨٢.

②.....فضيلة الشكر، الحديث: ٢١، ص ٤٠.

﴿125﴾....हज़रते सय्यिदुना अस्बग़ बिन ज़ैद رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के नबी हज़रते सय्यिदुना नूह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام नूह क़ज़ाए हाज़त से फ़राग़त पाते तो इस तरह शुक्र बजा लाते

﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذَقَنِي طَعْمَهُ وَأَبْقَىٰ مُنْفَعَتَهُ فِي جَسَدِي وَأَخْرَجَ عَنِّي إِذَاهُ﴾

जिस की वजह से उन का नाम बहुत ज़ियादा शुक्र करने वाला बन्दा रखा गया ।⁽¹⁾

आ' जाए जिस्मानी क्व शुक्र क्या है ?

﴿126﴾....हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन हानी قُدَسَ سِرُّهُ الرَّوَّانِ अपने किसी दोस्त के हवाले से बयान करते हैं कि एक शख्स ने हज़रते सय्यिदुना अबू हाज़िम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से अर्ज़ की : “ऐ अबू हाज़िम !

☞....आंखों का शुक्र क्या है ?” इरशाद फ़रमाया : “इन के ज़रीए कोई अच्छी बात देखो तो उसे आ़म करो और अगर बुरी बात देखो तो उसे छुपा लो ।” ☞....उस ने अर्ज़ की : “कानों का शुक्र क्या है ?”

आप ने इरशाद फ़रमाया : “अगर इन के ज़रीए अच्छी बात सुनो तो उसे याद कर लो और अगर बुरी बात सुनो तो पोशीदा रखो ।” ☞....उस ने अर्ज़ की : “हाथों का शुक्र क्या है ?” आप ने इरशाद

फ़रमाया : “इन से ऐसी चीज़ हासिल न करो जो इन के लिये जाइज़ नहीं और इन में जो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ का हक़ है उस को न रोको ।” ☞....उस ने अर्ज़ की : “पेट का शुक्र क्या है ?” आप ने इरशाद

फ़रमाया : “पेट का शुक्र यह है कि इस के निचले हिस्से में खाना हो जब कि उपरी हिस्सा इल्म से लबरेज़ हो ।” उस ने अर्ज़ की : “शर्मगाह का शुक्र क्या है ?” फ़रमाया : “जैसा कि

اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

①.....شعب الایمان للبيهقي، باب في تعديد نعم الله، الحديث: ٤٤٧٠، ج ٤، ص ١١٣.

إِلَّا عَلَىٰ أَرْوَاحِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ
 أَيَّانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ۝
 فَمَنْ ابْتغىٰ وَرَاءَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ
 هُمُ الْعَادُونَ ۝ (ب) (المؤمنون: ٧٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मगर अपनी
 बीबियों या शरई बांदियों पर जो उन के
 हाथ की मिल्क हैं कि उन पर कोई मलामत
 नहीं तो जो इन दो के सिवा कुछ और
 चाहे वोही हृद से बढ़ने वाले हैं।”

❁....उस ने कहा : “पाउं का शुक्र क्या है ?” आप ने इरशाद फ़रमाया :
 “अगर तुम किसी ऐसे जिन्दा को देखो जिस पर तुम्हें रश्क हो तो
 इन पाउं से उस शख्स जैसे अमल करो और अगर किसी ऐसे मुर्दा
 को देखो जिस से तुम बेज़ार हो तो इन पाउं को उस शख्स जैसे
 अमल से रोक लो । इस तरह तुम **عَزَّوَجَلَّ** का शुक्र अदा
 करने वाले बन जाओगे ।”

और जिस ने सिर्फ़ ज़बानी शुक्र किया बक़िय्या आ'ज़ा से न
 किया तो इस की मिसाल उस शख्स जैसी है जिस के पास एक कपड़ा
 हो और वोह उस का एक किनारा पकड़ ले लेकिन पहने नहीं तो वोह
 कपड़ा उसे गर्मी, सर्दी, बर्फ़ और बारिश से बचने का फ़इदा न देगा ।”⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना नजाशी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का **अब्दाजे शुक्र**
 ﴿127﴾....हज़रते सय्यिदुना अब्दुरहमान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “अहले
 सनआ में से एक शख्स का बयान है कि एक दिन (हबशा के
 बादशाह) हज़रते सय्यिदुना नजाशी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हज़रते सय्यिदुना
 जा'फ़र बिन अबी तालिब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ और आप के रुफ़का को
 बुलाया । जब वोह बादशाह के पास आए तो देखा कि बादशाह एक
 घर में फटे पुराने कपड़े पहने ज़मीन पर बैठा हुवा है । हज़रते सय्यिदुना
 जा'फ़र رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “हम बादशाह को इस हालत में देख

❶.....حلیة الاولیاء، الرقم ٢٤٠ سلمة بن دينار، الحدیث: ٣٩٦٣، ج ٣، ص ٢٧٩.

कर डर गए।” जब बादशाह ने हमारा ख़ौफ़ देखा तो कहा : “मैं तुम्हें एक ऐसी बात बताता हूँ जो तुम्हें खुश कर देगी। वोह येह कि तुम्हारे मुल्क से मेरा एक मुख़िब्र आया है और उस ने मुझे बताया कि **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने अपने नबी **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की मदद फ़रमाई और उन के दुश्मनों को हलाक फ़रमा दिया है। नीज़ फुलां फुलां को कैदी बना लिया गया और फुलां फुलां मारा गया है। मुसलमानों और कुफ़्फ़ार का मुक़ाबला “बद्र” में हुवा है। वहां पीलू के दरख़्त कसरत से हैं गोया कि मैं उस मैदान को देख रहा हूँ जहां मैं अपने आका (जो बनी ज़मरा का एक शख़्स था) के ऊंट चराया करता था।”

हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने उन से पूछा : “क्या वज्ह है कि आप बिगैर चटाई के ज़मीन पर बैठे हैं और बोसीदा कपड़े पहन रखे हैं ?” तो उन्होंने ने बताया कि **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने हज़रते सय्यिदुना ईसा **عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ السَّلَام** पर जो कलाम नाज़िल फ़रमाया, उस में येह भी था कि “**अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के बन्दों पर हक़ है कि जब **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उन्हें कोई ने'मत अ़ता फ़रमाए तो वोह उस के लिये तवाज़ोअ़ इख़्तियार करे।” चूँकि **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने अपने नबी **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की मदद की सूरत में मुझे ने'मत अ़ता फ़रमाई है, इस लिये मैं ने उस के लिये तवाज़ोअ़ इख़्तियार की है।”⁽¹⁾

मुसीबत में ने'मत का तशव्वुर

﴿128﴾....हज़रते सय्यिदुना हबीब बिन उ़बैद **رَحِمَهُ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं :
 “**अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** बन्दे को किसी भी मुसीबत में मुब्तला फ़रमाता है तो उस में उस की ने'मत भी होती है और वोह येह कि **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ**

①.....मारواه नेमि बिन हमद फ़ी नसख़ते एन अिन मीबार्क, باب التواضع وكرهية، الحديث: ١٩٢،

ने उस को इस से सख़्त मुसीबत में मुब्तला नहीं फ़रमाया (हालांकि अगर वोह चाहता तो इस से भी सख़्त मुसीबत में गिरफ़्तार करता)।”

﴿129﴾....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल मलिक बिन अबजर رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ فَرَمَاتے हैं : “बा’ज लोगों को आफ़ियत इस लिये अ़ता की जाती है ताकि देखा जाए कि वोह किस तरह उस का शुक्र अदा करते हैं और मुसीबत में इस लिये मुब्तला किया जाता है ताकि देखा जाए कि वोह उस पर सब्र कैसे करते हैं।”⁽¹⁾

नुजुले मुसीबत का सबब

﴿130﴾....हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ فَرَمَاتے हैं : “मुसीबत इस लिये नाज़िल होती है ताकि इस के सबब बन्दा रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ व मुनाजात करे।”

रब عَزَّوَجَلَّ की अ़ता, बन्दे की इल्तिजा

﴿131﴾....हज़रते सय्यिदुना सुपयान सौरी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ فَرَمَاتے हैं : “बन्दा अपनी हाज़त के लिये اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में जिस क़दर गिर्या व ज़ारी करता है اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ उसे इस से कहीं ज़ियादा अ़ता फ़रमाता है।”⁽²⁾

खुशी पर सजदए शुक्र सुन्नत है

﴿132﴾....हज़रते सय्यिदुना अबू बकरह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ فَرَمَاتے हैं : “जब हुज़ूर नबिय्ये करीम, رَكُوفُرْهِیْم صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को कोई खुशी हासिल होती तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सजदए शुक्र अदा करते।”⁽³⁾

①.....حلیة الاولیاء، الرقم ۲۹۴ عبدالمملک بن ابجر، الحدیث: ۶۴۷۰، ج ۵، ص ۹۸.

②.....حلیة الاولیاء، الرقم ۳۸۷ سفیان الثوری، الحدیث: ۹۳۲۱، ج ۷، ص ۷.

③.....سنن ابن ماجه، کتاب اقامة الصلاة، باب ماجاء فی الصلاة والسجدة عند الشکر، الحدیث: ۱۳۹۴، ج ۲، ص ۱۶۳.

ख़ुश ख़बरी देने वाले को चादर अ़ता फ़रमा दी

﴿133﴾....हज़रते सय्यिदुना अब्दुरहमान बिन का'ब अपने वालिद हज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के मुतअल्लिक़ बयान करते हैं कि जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की तौबा क़बूल फ़रमाई तो उन्होंने ने सजदए शुक्र अदा किया और खुश ख़बरी देने वाले को अपनी चादर अ़ता फ़रमा दी।⁽¹⁾

ज़ालिम की मौत पर सजदए शुक्र

﴿134﴾....हज़रते सय्यिदुना अ़ला बिन मुगीरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَرِيمِ को हज्जाज की मौत की खुश ख़बरी दी। उस वक़्त आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ रू पोश थे ख़बर सुनते ही आप ने सजदए शुक्र अदा किया।”⁽²⁾

दुश्मदो सलाम पढने वाले पर रहमत व सलामती

﴿135﴾....हज़रते सय्यिदुना अब्दुरहमान बिन औफ़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) से मेरी मुलाक़ात हुई तो उन्होंने ने मुझे खुश ख़बरी सुनाई : “बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप से इरशाद फ़रमाता है कि : “जो आप पर दुरूद भेजेगा मैं उस पर रहमत नाज़िल करूंगा और जो आप पर सलाम भेजेगा मैं उस पर सलामती नाज़िल करूंगा।” इस पर मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सजदए शुक्र अदा किया।⁽³⁾

①.....سنن ابن ماجه، كتاب اقامة الصلاة، باب ماجاء في الصلاة والسجدة عند الشكر،

الحديث: ١٣٩٣، ج ٢، ص ٦٣، ١، دون قوله ”والقى.....الخ“.

②.....العلل ومعرفة الرجال للامام احمد بن حنبل، الجزء الثامن، الحديث: ٦٠٩٩، ج ٣، ص ٤٩٠.

③.....المسند للامام احمد بن حنبل، حديث عبدالرحمن، الحديث: ١٦٦٤، ج ١، ص ٤٠٧.

दरवाज़ा खट खटा कर ने'मत की पहचान कराएगा

﴿136﴾....हज़रते सय्यिदुना सलाम बिन अबी मुतीअ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि जब तुम खुद पर **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की ने'मतों की कसरत देखना चाहो तो उसे देख लोगे। (एक और मक़ाम पर फ़रमाते हैं) **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की क़सम ! अगर तू ने अपना दरवाज़ा बन्द कर लिया तो तेरे पास वोह आएगा जो तेरा दरवाज़ा खट खटा कर तुझ से पूछेगा ताकि तुझे **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की ने'मत की पहचान करा दे।⁽¹⁾
बे सब्रे को नशीहत

﴿137﴾....हज़रते सय्यिदुना सलाम बिन अबी मुतीअ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ बयान करते हैं कि मैं एक मरीज़ के पास उस की इयादत के लिये गया तो वोह कराह रहा था (और बे सब्री कर रहा था)। मैं ने उस से कहा : “रास्तों में फेंक दिये जाने वालों को याद करो और उन लोगों को याद करो जिन का कोई ठिकाना नहीं और न ही कोई खि़दमत गुज़ार।” फ़रमाते हैं : जब मैं दोबारा उस के पास गया तो उस को कराहते हुवे न सुना बल्कि वोह कहने लगा : “रास्तों में फेंक दिये जाने वालों को याद करो और उन्हें याद करो जिन का न कोई ठिकाना है और न ही कोई खि़दमत गुज़ार।”⁽²⁾

शुक्र पर आमादा करने का बेहतरीन अन्दाज़

﴿138﴾....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अबी नूह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ बयान करते हैं कि

﴿...मुझे किसी साहिल पर एक शख़्स ने कहा : “तुम ने कितनी बार **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की मरज़ी का ख़िलाफ़ किया मगर उस ने तेरी

①.....حلیة الاولیاء، الرقم ۳۶۰ سلام بن ابی مطیع، الحدیث: ۸۲۹۸، ج ۶، ص ۲۰۳.

②.....المرجع السابق، الحدیث: ۸۲۹۹.

आरजू को पूरा किया ?” मैं ने कहा : “ब वज्हे कसरत मैं उस का शुमार नहीं कर सकता ।”

✽....उस ने पूछा : “क्या कभी ऐसा हुवा है कि तुम ने किसी तक्लीफ़ में उसे याद किया और उस ने तुम्हें रुस्वा कर दिया हो ?” मैं ने कहा : “नहीं ! **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की क़सम ! ऐसा कभी नहीं हुवा बल्कि मैं ने जब भी उसे पुकारा उस ने मुझ पर एहसान किया और मेरी मदद फ़रमाई ।”

✽....उस ने फिर पूछा : “कभी तुम ने उस से कुछ मांगा और उस ने अ़ता कर दिया हो ?” मैं ने कहा : “मैं ने उस से जो मांगा उस ने मुझे उस से महरूम न रखा बल्कि अ़ता फ़रमाया । मैं ने जब भी मदद मांगी उस ने मेरी दस्तगीरी फ़रमाई ।”

✽....उस ने पूछा : “अगर कोई आदमी तुम्हारे साथ ऐसा सुलूक करे तो तुम उस का क्या बदला दोगे ?” मैं ने कहा : “मैं उस का बदला चुकाने की ताक़त नहीं पाता ।”

✽....उस ने कहा : तुम्हारा रब **عَزَّوَجَلَّ** इस बात का ज़ियादा हक़दार है कि तुम खुद को इस बात का अ़दी बनाओ कि उस की ने'मतों पर उस का शुक्र बजा लाओ । वोह तुम पर पहले भी एहसान करता रहा अब भी करेगा । **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की क़सम ! उस का शुक्र अदा करना बन्दों को बदला देने से बहुत आसान है क्यूंकि वोह बन्दों से इतने शुक्र पर राज़ी हो जाता है कि वोह उस की हम्द करें ।”⁽¹⁾

रहमत पर यक़ीन हो तो ऐशा हो.....

﴿139﴾....हज़रते सय्यिदुना कासिम बिन उस्मान दिमशक़ी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَبِيرِ** फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना अबू मुअ़ाविय्या अस्वद

①.....حلیة الاولیاء، الرقم: ۳۷۸ ابن برة، الحدیث: ۸۷۹۶، ج ۶، ص ۳۲۵.

यमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْعَالَمِينَ से पूछा : “क्या आप ने हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَمِ की ज़ियारत की है ?” वोह मुस्कुराने लगे, फिर फ़रमाया : “मैं ने तो उन से भी बड़े इबादत गुज़ार की ज़ियारत की है ।” मैं ने पूछा : “वोह कौन ?” फ़रमाया : “हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ” फिर फ़रमाया : “मैं ने अपने भाई सुफ़यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي को फ़रमाते हुवे सुना है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की शान येह नहीं कि दुन्या में बन्दे को ने’मत अता फ़रमाए और आख़िरत में रुस्वा कर दे, बल्कि ने’मतें अता फ़रमाने वाले पर हक़ है कि जिसे ने’मत अता फ़रमाए पूरी अता फ़रमाए ।”⁽¹⁾

ईमान, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अज़ीम ने’मत है

﴿140﴾...हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन अबू हवारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي मुआविया अस्वद फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना अबू मुआविया अस्वद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَسِد से अर्ज की : “ऐ अबू मुआविया ! ईमान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कितनी बड़ी ने’मत है ! हम उस से दुआ करते हैं कि वोह हम से येह ने’मत सल्ब न फ़रमाए ।” उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : “ने’मत अता करने वाले पर हक़ है कि वोह जिस को ने’मत अता फ़रमाए पूरी अता फ़रमाए ।”⁽²⁾

सब से बड़ा करीम

﴿141﴾...हज़रते सय्यिदुना अबू मुआविया अस्वद यमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़रमाते हैं : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा करीम है कि जो ने’मत अता फ़रमाता है पूरी अता फ़रमाता है । कोई अमल करवाता है तो कबूल फ़रमाता है ।”⁽³⁾

①.....تاريخ مدينة دمشق لابن عساکر، الرقم ٨٨٤٥ ابو معاوية الاسود، ج ٦٧، ص ٢٤١ .

②.....المرجع السابق، ص ٢٤٣ .

③.....بهجة المجالس لابن عبد البر، باب والصبر على النوائب، ص ٢٤٩ .

बिन्ते बहलूल رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا के दिल की ख़्वाहिश

﴿142﴾.... हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन अबुल हवारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना बहलूल رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا की इबादत गुज़ार बेटी मोमिना رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا ने मुझ से फ़रमाया : “मेरे दिल में एक ख़्वाहिश है।” मैं ने पूछा : “वोह क्या ?” तो फ़रमाने लगीं कि “मैं **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की ने'मतों को या उस की ने'मतों के शुक्र में अपनी कोताही को पलक झपकने में पहचानना चाहती हूँ।” मैं ने कहा : “आप वोह चाहती हैं जिसे हम नहीं समझ सकते।”⁽¹⁾

इजतिमाअ की बरक़ात

﴿143﴾.... हज़रते सय्यिदुना अब्दुरहमान बिन जैद बिन अस्लम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا इरशाद फ़रमाते हैं : “इजतिमाअ में (कभी) एक शख्स (ऐसा होता है कि वोह) **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की हम्द करता है तो तमाम शुरकाए इजतिमाअ की हाजतें पूरी कर दी जाती हैं।”⁽²⁾

मेरे बन्दे को जन्नते अद्वन में दाख़िल कर दो

﴿144﴾.... हज़रते सय्यिदुना अब्दुरहमान बिन जैद बिन अस्लम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا बा'ज उलमाए किराम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا के हवाले से बयान फ़रमाते हैं : “एक आस्मानी किताब में है कि **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** इरशाद फ़रमाएगा : “मेरे मोमिन बन्दे को खुश कर दो क्यूंकि जब उसे कोई पसन्दीदा चीज़ मिलती थी तो कहता था : ﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ، الْحَمْدُ لِلَّهِ، مَا شَاءَ اللَّهُ﴾ मेरे मोमिन बन्दे को डराओ कि जब उस पर कोई ना गहानी आफ़त आती थी तब भी येही कहता था : ﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ، الْحَمْدُ لِلَّهِ﴾ फिर

1..... تاريخ مدينة دمشق لابن عساکر، الرقم ٩٤٣٠ مومنة بنت بهلول، ج ٧٠، ص ١٢٩.

2..... طبقات الحنابلة، الرقم ١٦٦ الحسن بن عبدالعزيز، ج ١، ص ١٢٩.

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** इरशाद फ़रमाएगा : “मेरा बन्दा मेरे डराने पर यूँही मेरा शुक्र अदा करता था जिस तरह मेरे खुश करने पर करता था पस मेरे बन्दे को जन्नते अ़द्न में दाख़िल कर दो क्यूंकि येह हर हाल में मेरा शुक्र अदा करता था।”⁽¹⁾

पचास साला इबादत और रग का सुकून

﴿145﴾....हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने बयान फ़रमाया कि एक इबादत गुज़ार ने पचास साल **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की इबादत की तो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने उसे इल्हाम फ़रमाया कि मैं ने तुझे बख़्श दिया। आबिद ने अर्ज़ की : “ऐ मेरे रब **عَزَّوَجَلَّ** ! मैं ने तो कभी कोई गुनाह ही नहीं किया फिर तू ने क्या बख़्श दिया ?” पस **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने उस की गरदन की एक रग को हुक्म दिया तो वोह फड़कने लगी। जिस की वज्ह से वोह आबिद सो सका न इबादत कर सका। फिर जब कुछ सुकून मिला तो वोह सो गया और उस के पास एक फ़िरिश्ता आया। उस ने उस से अपनी तकलीफ़ की शिकायत करते हुवे कहा कि मैं कभी इस तकलीफ़ में मुब्तला नहीं हुवा था। फ़िरिश्ते ने कहा : तेरा रब **عَزَّوَجَلَّ** इरशाद फ़रमाता है कि “तेरी पचास साल की इबादत इस रग के सुकून के बराबर है।”⁽²⁾

सब से छोटी ने'मत

﴿146﴾....हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अहमद बिन मुहम्मद बिन जाबिर क़रशी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना दावूद **عَزَّوَجَلَّ** में अर्ज़ की :

①.....شعب الإيمان لليبهقي، باب في تعديد نعم الله، الحديث: ٤٤٩٣، ج ٤، ص ١١٧.

②.....حلية الأولياء، الرقم ٢٥٠ وهب بن منبه، الحديث: ٤٧٨٤، ج ٤، ص ٧٠.

“ऐ **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ! मुझे अपनी सब से छोटी ने'मत के मुतअल्लिक़ ख़बर दे।” तो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने उन की तरफ़ वहूय नाज़िल फ़रमाई : “ऐ दावूद ! सांस लो । उन्होंने ने सांस लिया तो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने इरशाद फ़रमाया कि “येह तुम पर मेरी सब से छोटी ने'मत है।”⁽¹⁾

अफ़ज़ल तरीन शुक्र कौन सा है ?

﴿147﴾....हज़रते सय्यिदुना अबू मलीह अमिर बिन उसामा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे खुदावन्दी में अर्ज़ की : “ऐ रब **عَزَّوَجَلَّ** ! अफ़ज़ल तरीन शुक्र कौन सा है ?” **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने इरशाद फ़रमाया : “तेरा हर हाल में मेरा शुक्र अदा करते रहना।”

मैं सिर्फ़ इतना जानता हूँ कि.....

﴿148﴾....हज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अब्दुल्लाह मुज़नी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمُعْنَى फ़रमाते हैं कि मैं अपने एक उम्र रसीदा मुसलमान भाई से मिला और अर्ज़ की : “ऐ मेरे भाई ! मुझे कोई नसीहत कीजिये ! उन्होंने ने फ़रमाया : “मैं सिर्फ़ इतना कहना जानता हूँ कि बन्दा शुक्र और इस्तिग़फ़ार में सुस्ती न करे क्यूंकि आदमी ने'मत और गुनाह के दरमियान होता है । ने'मत हम्द और शुक्र के बिगैर नफ़ अ बख़्श नहीं और गुनाह से तौबा व इस्तिग़फ़ार के बिगैर छुटकारा नहीं।” फ़रमाते हैं : “मैं ने जिस क़दर चाहा उन्होंने ने मेरे इल्म में उतना इज़ाफ़ा कर दिया।”

जिस क़े हो सब क़ मज़ा बे सबी से वोह चिल्लाए क्यूं ?

﴿149﴾....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल अज़ीज़ बिन अबू रव्वाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ बयान करते हैं कि एक मरतबा मैं ने हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन

①.....شعب الایمان للبيهقي، باب فی تعدید نعم الله، الحديث: ٤٦٢٣، ج ٤، ص ١٠٢.

वासे अَرْضَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के हाथ में ज़ख़्म देखा। गोया उन्होंने ने जान लिया कि मुझे इस पर दुख हुआ है। तो मुझ से फ़रमाया : “जानते हो इस ज़ख़्म में **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ की मुझ पर क्या ने'मत है ?” मैं ख़ामोश रहा। तो उन्होंने ने फ़रमाया : “**اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ ने इसे मेरी आंखों की पुतलियों पर पैदा किया न ही मेरी ज़बान के किनारे पर और न ही मेरी शर्मगाह के पहलू पर। (फ़रमाते हैं इस के बा'द) मुझे उन का ज़ख़्म मा'मूली लगने लगा।”⁽¹⁾

अ़फ़िय्यत की दुआ ब कसरत करें

﴿150﴾...हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ अ़ब्बास ! ऐ नबी के चचा ! अ़फ़िय्यत की दुआ कसरत से किया करें।”⁽²⁾

पिछले साल की बातें

﴿151﴾...हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि एक दिन अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिदीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ मिम्बर पर खड़े हुवे और इरशाद फ़रमाया : “तुम्हें वोह बातें याद हैं जो पिछले साल **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने तुम्हारे दरमियान इसी जगह जल्वा अफ़ोज़ हो कर बयान फ़रमाई थीं।” फिर आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उन बातों को दोहराया और रो पड़े। इस के बा'द फिर उन को बयान किया और रोने लगे। फिर इरशाद फ़रमाया : “बेशक

1.....تاريخ مدينة دمشق لابن عساکر، الرقم ٧٠٧٩ محمد بن واد، ج ٥٦، ص ١٦٤.

2.....المعجم الكبير، الحديث: ١١٩٠٨، ج ١١، ص ٢٦١.

جمع الحوامع، قسم الاقوال، حرف الباء، الحديث: ٢٧٨٤١، ج ٩، ص ١٤٩.

मुलाकात हक़ है। जन्नत हक़ है। दोज़ख़ हक़ है और क़ियामत आने वाली है। इस में कुछ शक़ नहीं है और बेशक़ तू उठाएगा उन्हें जो क़ब्रों में हैं।⁽¹⁾

पूरी ने'मत क्या चीज़ है ?

﴿153﴾...हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि शहनशाहे मदीना, करारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैजे गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ एक शख़्स के सामने से गुज़रे जो कह रहा था : «اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ تَمَامَ الْبِعْمَةِ»
तर्जमा : ऐ **اَللّٰهُ** ! मैं तुझ से पूरी ने'मत मांगता हूँ। तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उस से पूछा : “ऐ आदमी ! क्या तू जानता है कि पूरी ने'मत क्या चीज़ है ?” उस ने अर्ज की : “मैं तो महूज़ भलाई की उम्मीद पर येह दुआ करता हूँ।” तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया कि “पूरी ने'मत जन्नत में दाख़िला और जहन्नम से नजात है।”⁽²⁾

आफ़ियत की दुआ मांगते रहो

﴿154﴾...हज़रते सय्यिदुना मिस्अर बिन किदाम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल आ'ला तैमी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाया करते थे कि **اَللّٰهُ** سے ب کسرت آفاییت کی دُا मांगा करो। सख़्त मुसीबत में गिरिफ़्तार शख़्स से वोह आफ़ियत वाला दुआ का ज़ियादा हक़दार है जो मुसीबत से बे ख़ौफ़ नहीं। इस लिये

①.....الاسماء والصفات للبيهقي، الحديث: ١٦٠، ج ١، ص ١٧٢.

②.....سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ٩٣، الحديث: ٣٥٣٨، ج ٥، ص ٣١٢.

المسند للإمام احمد بن حنبل، حديث معاذ بن جبل، الحديث: ٢٢١١٧، ج ٨، ص ٢٤٤.

कि जो आज मुसीबत में गिरिफ़्तार हैं वोह कल तक अफ़ियत में थे और जो आयिन्दा मुसीबत का शिकार होंगे वोह आज अफ़ियत में हैं। अगर मुसीबत भलाई की तरफ़ ले जाए तो हम मुसीबत ज़दों में शुमार न हों। कई मुसीबत के मारों ने दुनिया में तो मशक़त उठाई मगर आख़िरत में इस की जज़ा पाएंगे। लेकिन जो शख़्स मुसलसल **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** की ना फ़रमानियां करता रहा वोह अपनी बक़िय्या ज़िन्दगी में ऐसी बला में मुब्तला होगा जो उसे दुनिया में मशक़त में डालने के साथ साथ आख़िरत में भी ख़्वार कर देगी।”

और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ येह दुआ मांगा करते :

﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي إِنْ نَعَدْنَا نِعْمَةً لَا نُحْصِيهَا، وَإِنْ نَدَّابَ لَهُ عَمَلًا لَا نُحْرِمُهَا، وَإِنْ نَعْبُرُ فِيهَا لَا نَبْلِيهَا﴾

तर्जमा : तमाम ता'रीफें **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** के लिये हैं कि जिस की ने'मतें अगर हम गिनें तो शुमार न कर सकेंगे और अगर हम उस के लिये मुसलसल अमल करें तो हमें उन से महरूम न रखा जाएगा और अगर हम उन में ज़िन्दगियां गुज़ार दें फिर भी उन ने'मतों को ख़त्म न कर पाएंगे।

﴿155﴾.... हज़रते सय्यिदुना अबू अब्दुल्लाह तैमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने वालिदे माजिद को फ़रमाते हुवे सुना कि हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान बिन उयैना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : “मैं ने **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** से अफ़ियत का सुवाल करने के मुतअल्लिक आप के दादा अब्दुल आ'ला के हवाले से सय्यिदुना मिस्अर बिन किदाम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को एक हदीस ज़िक्र करते हुवे सुना है, क्या आप को वोह हदीस याद है?” फ़रमाते हैं : मैं ने कहा : “मैं आप को वोह

हदीस सुनाता हूँ जो मुझे याद है।” पस मैं ने उन के सामने वोह हदीस बयान की तो उन्होंने ने कहा : “येही वोह हदीस है। येही वोह हदीस है।”

खाने के हिसाब से बचने का तरीका

﴿156﴾...हज़रते सय्यिदुना तमीम बिन सलमह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि मुझे येह बात बयान की गई है : “जब बन्दा खाने की इब्तिदा में ﴿بِسْمِ اللَّهِ﴾ पढ़े और आखिर में ﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ﴾ कहे तो उस से खाने की ने'मतों के बारे में सुवाल नहीं होगा।”⁽¹⁾

ने'मत, इज़ज़त और आफ़िय्यत

﴿157﴾...हज़रते सय्यिदुना यहूया बिन बलीक जम्माल رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि हम मक्कए मुकर्रमा رَادَهَا اللَّهُ شُرْفًا وَتَعْظِيمًا के रास्ते में थे कि हमें सख़्त प्यास का एहसास हुवा। हम ने रास्ता बताने वाले एक शख्स को उजरत पर लिया ताकि वोह हमें उस जगह पहुंचा दे जिस के बारे में हमें बताया गया था कि वहां पानी मौजूद है। चुनान्चे, हम तुलूए फ़ज़ के बा'द पानी की तलाश में थे कि अचानक हम ने येह आवाज़ सुनी : “तुम क्यूं नहीं कहते ?” हज़रते सय्यिदुना यहूया फ़रमाते हैं : “मैं ने पूछा : “हम क्या कहें ?” आवाज़ आई

﴿اللَّهُمَّ مَا أَصْبَحَ بِنَا مِنْ نِعْمَةٍ، أَوْ عَافِيَةٍ، أَوْ كَرَامَةٍ فِي دِينٍ أَوْ دُنْيَا
جَرَتْ عَلَيْنَا فِيمَا مَضَى، أَوْ هِيَ جَارِيَةٌ عَلَيْنَا فِيمَا بَقِيَ، فَهِيَ مِنْكَ وَحَدَّكَ
لَا شَرِيكَ لَكَ، فَلَكَ الْحَمْدُ عَلَيْهَا، وَلَكَ الْمُنُّ، وَلَكَ الْفَضْلُ، وَلَكَ
الْحَمْدُ عَدَدَ مَا أَنْعَمْتَ عَلَيْنَا، وَعَلَى جَمِيعِ خَلْقِكَ، مِنْ لَدُنْكَ إِلَى مُنْتَهَى
عِلْمِكَ، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، هَذَا مِنَ الْبِدَائِ إِلَى الْبَقَاءِ﴾

①.....المصنف لابن ابى شيبة، كتاب الاطعمة، باب فى التسمية على الطعام، الحديث: ٤،

तर्जमा : ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ! दीनो दुनिया की जो भी ने'मत, अफ़ियत और इज़्जत हम ने पहले पाई या आयिन्दा हमें हासिल होगी सब तेरी तरफ़ से है। तू यक्ता है। तेरा कोई शरीक नहीं। इन ने'मतों पर तेरा शुक्र है। तेरा एहसान और तेरा ही फ़ज़ल है। तेरे पास से, तेरे इल्म की बुलन्दियों तक तेरी इतनी हम्द है जितनी तू ने हमें और अपनी दीगर सारी मख़्लूक को ने'मते अता फ़रमाई। तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं। येह इब्तिदा ता इन्तिहा है।⁽¹⁾

ख़ैर अता फ़रमाने और शर दूर करने पर शुक्र

﴿158﴾...हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَلَأَنِ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي जब किसी मजलिस में तशरीफ़ फ़रमा होते तो कहते :

﴿اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ بِالإِسْلَامِ، وَلَكَ الْحَمْدُ بِالْقُرْآنِ، وَلَكَ الْحَمْدُ
بِالْأَهْلِ وَالْمَالِ، بَسَطْتَ رِزْقَنَا، وَأَظْهَرْتَ أَمْنَنَا، وَأَحْسَنْتَ مَعَايِفَنَا، وَمِنْ كُلِّ
مَا سَأَلْنَاكَ رَبَّنَا أَعْطَيْتَنَا، فَلَكَ الْحَمْدُ كَثِيرًا، كَمَا تَنْعَمُ كَثِيرًا، وَصَرَفْتَ
شَرًّا كَثِيرًا، فَلْيُوجِّهْكَ الْجَلِيلُ الْبَاقِي الدَّائِمُ الْحَمْدُ، الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ﴾

तर्जमा : ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ! इस्लाम पर तेरा शुक्र है। कुरआन पर तेरा शुक्र है। अहलो इयाल और माल पर तेरा शुक्र है। तू ने हमारा रिज़क कुशादा किया। हमारे इतमीनान को ग़ालिब किया और हमें अच्छी अफ़ियत अता की। हम ने तुझ से जिस चीज़ का भी सुवाल किया तू ने हमें अता फ़रमाई। तेरा बड़ा शुक्र है जैसा कि तू ने हमें बकसरत ने'मते अता फ़रमाई हैं और बहुत बड़े शर को हम से दूर कर दिया। पस तेरी हमेशा बाकी रहने वाली अज़ीम ज़ात का शुक्र है। तमाम ता'रीफ़ें उस रब **عَزَّوَجَلَّ** के लिये हैं जो तमाम जहानों का पालने वाला है।

①.....طبقات الحنابلة، الرقم ٢٦٠ باب العين ذكر من اسمه عبد الله، ج ١، ص ١٨٦.

उमूरे दुन्या में कम मर्तबे वाले को देखा करो

﴿159﴾... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया :
 “(उमूरे दुन्या में) अपने से कम मर्तबे वाले को देखा करो। क्यूंकि येही ज़ियादा मुनासिब है ताकि जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत तुम पर है उसे हक़ीर न समझने लगो।”⁽¹⁾

दौराने सफ़र तुलूए फ़त्र के वक़्त की दुआएँ

﴿160﴾... हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ وَآلِهِ وَسَلَّمَ दौराने सफ़र तुलूए फ़त्र के वक़्त बुलन्द आवाज़ से तीन तीन मरतबा कहा करते थे :

(1)... ﴿سَمِعَ سَامِعٌ بِحَمْدِ اللَّهِ وَنِعْمَتِهِ وَحُسْنِ بَلَاغِهِ عَلَيْنَا﴾...
 तर्जमा : एक सुनने वाले ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हम्द, उस की ने'मत और हम पर उस की बेहतरीन आज़माइश को सुना। (2)... ﴿اللَّهُمَّ صَاحِبِنَا فَأَفْضَلْ عَلَيْنَا﴾...

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारा साथ दे और हम पर अपना फ़ज़लो करम फ़रमा। (3)... ﴿عَابِدًا بِاللَّهِ مِنَ النَّارِ﴾...
 तर्जमा : आग से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहता हूँ। (4)... ﴿لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ﴾...

तर्जमा : नेकी करने की कुदरत और बुराई से बचने की ताक़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तौफ़ीक़ से ही है।⁽²⁾

जो दोस्त खुशी का बाइस न बने उसे.....

﴿161﴾... हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन नज़र हारिसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكُوفَى फ़रमाते हैं कि मुझे येह हदीस पहुंची है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की तरफ़ वहूय फ़रमाई : “ऐ मूसा बिन इमरान !

①..... سنن الترمذی، کتاب صفة القيامة، باب ٥٨، الحديث: ٢٥٢١، ج ٤، ص ٢٣٠.

②..... المصنف لعبد الرزاق، کتاب المناسک، باب القول فی السفر، الحديث: ٩٢٩٩، ج ٥،

ص ١١٠. دون قوله “لا حول..... الخ”.

होशयार हो जाओ और अपने लिये मुख़्लिस दोस्तों का इन्तिखाब करो और जो दोस्त तेरे पास खुशी न लाए उसे रफ़ीक़ मत बनाओ क्यूंकि वोह तेरा दुश्मन है और तेरे दिल को सख़्त कर देगा। बल्कि कसरत से मेरा ज़िक्र किया करो और शुक्र को खुद पर लाजिम कर लो ताकि मज़ीद कामिल ने'मतें हासिल कर सको।⁽¹⁾

बनी आदम के मा'जूर होने की वजह

﴿162﴾....हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं की **اَللّٰهُ** عَلَى نَيْبًا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ ने जब हज़रते सय्यिदुना आदम को पैदा किया तो उन की दाईं करवट से जन्मतियों को और बाईं करवट से दोजखियों को निकाला और वोह ज़मीन पर चलने लगे। उन में से कुछ अच्छे, कुछ बहरे और कुछ मुसीबत ज़दा थे। तो हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ وَالسَّلَامُ ने अर्ज़ की : “ऐ मेरे रब **عَزَّوَجَلَّ** ! तू ने मेरी अवलाद को एक जैसा पैदा नहीं फ़रमाया ?” तो **اَللّٰهُ** ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ आदम ! मैं चाहता हूँ कि मेरा शुक्र अदा किया जाए।”⁽²⁾

दिन भर का शुक्र अदा करने वाले कलिमात

﴿163﴾....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने ग़नाम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ صَلَّ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के ताजदार फ़रमाते हैं कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार ने इरशाद फ़रमाया : ब वक्ते सुब्ह जिस ने इन कलिमात को कहा उस ने उस दिन का शुक्र अदा कर लिया :

﴿اللَّهُمَّ مَا أَصْحَبَ بِي مِنْ نِعْمَةٍ أَوْ بِأَحَدٍ مِنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ،
وَحَدِّكَ لَا شَرِيكَ لَكَ، فَلَكَ الْحَمْدُ، وَلَكَ الشُّكْرُ﴾

①.....حلیة الاولیاء، الرقم ٤٠٢ محمد الحارثی، الحدیث: ١٢٠٤٣، ج ٨، ص ٢٤٤.

②.....تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر، الرقم ٥٧٨ آدم نبی اللہ علیہ السلام، ج ٧، ص ٣٩٧.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझ पर या तेरी मख़्लूक में से किसी पर जो भी ने'मत है वोह तेरी ही तरफ़ से है । तू यक्ता है । तेरा कोई शरीक नहीं है और तेरे लिये हम्द है और तेरा शुक्र है ।”(1)

जालिम तौबा के बा'द शुक्र करे तो ?

﴿164﴾....हज़रते सय्यिदुना सख़्बरह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि माहे नुबुव्वत, महरे रिसालत, मम्बए जूदो सखावत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : जिसे मुसीबत में मुब्तला किया गया और उस ने सब्र किया और जिसे ने'मत अ़ता की गई और उस ने शुक्र किया और जिस पर जुल्म हुवा और उस ने मुआफ़ कर दिया और जिस ने जुल्म किया फिर इस्तिग़फ़र किया (या'नी तौबा की) फिर शुक्र अदा किया । (रावी कहते हैं) फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ख़ामोश हो गए । सहाबए किराम ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! उस के लिये क्या है ?” तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

أُولَئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُمْ
مُهْتَدُونَ ﴿٧٠﴾ (البقرة: ٨٢)

तर्जमाए कन्ज़ुल ईमान : उन्हीं के लिये अमान है और वोही राह पर हैं ।(2)

तीन मदनी नसीहतें

﴿165﴾....इमामुस्साबिरीन, सय्यिदुशशाकिरीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने एक शख़्स को तीन नसीहतें फ़रमाई :

(1)....मौत को कसरत से याद करो, येह ज़िक्र तुझे मौत के मा सिवा से खींच कर निकाल लेगा ।

①.....السنن الكبرى للنسائي، كتاب عمل اليوم الليلة، باب ثواب من قال.....الخ، الحديث:

٩٨٣٥، ج ٦، ص ٥.

②.....المعجم الكبير، الحديث: ٦٦١٣، ج ٧، ص ١٣٨.

(2)....दुआ को अपने ऊपर लाज़िम कर लो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि कब तुम्हारी दुआ क़बूल कर ली जाए।

(3)....और शुक्र को भी खुद पर लाज़िम कर लो, क्योंकि शुक्र से ने'मत ज़ियादा होती है।⁽¹⁾

खाना खाने से पहले की एक दुआ

﴿166﴾....हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना उ़रवा बिन जुबैर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास जब खाना लाया जाता तो खाना ढका रहता। यहां तक कि येह कलिमात अदा फ़रमा लेते :

﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا، وَأَطْعَمَنَا، وَسَقَانَا، وَنَعَّمَنَا، اللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُمَّ الْفِتْنَا نِعْمَتِكَ وَتَحْنُ بِكُلِّ شَرٍّ، فَأَصْبَحْنَا وَأَمْسَيْنَا مِنْهَا بِكُلِّ خَيْرٍ، أَسْأَلُكَ تَمَامَهَا وَشُكْرَهَا، لَا خَيْرَ إِلَّا خَيْرُكَ، وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ، إِلَهَ الصَّالِحِينَ وَرَبَّ الْعَالَمِينَ، الْحَمْدُ لِلَّهِ، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، مَا شَاءَ اللَّهُ، لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ، اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي مَا رَزَقْتَنَا، وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ﴾

तर्जमा : तमाम ता'रीफें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने हमें हिदायत दी, खिलाया, पिलाया और ने'मतें अता फ़रमाई। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम शर में हैं, तेरी ने'मतें हम से इस क़दर मानूस हो जाएं कि हम खैर के साथ सुबह और शाम करें। मैं तुझ से ने'मते ताम्मा और उस पर शुक्र अदा करने का सुवाल करता हूं। तेरे एहसान के इलावा कोई एहसान नहीं। ऐ नेक बन्दों के मा'बूद ! ऐ तमाम जहानों के पालने वाले ! तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं। तमाम ता'रीफें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जो चाहता है वोही होता है। नेकी करने की तौफ़ीक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की तरफ़ से है। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ !

①.....حلیة الاولیاء، الرقم ۳۹۰ سفیان بن عیینة، الحدیث: ۱۰۸۴۰، ج ۷، ص ۳۵۶.

अपने अता कर्दा रिज़क़ में हमारे लिये बरकतें अता फ़रमा और हमें अज़ाबे नार से बचा ।⁽¹⁾

खाना खाने के बा'द की दो दुआएँ

﴿167﴾...हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّي اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जब खाना तनावुल फ़रमा लेते तो येह दुआ पढ़ते :

﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَطْعَمَنِي، وَسَقَانِي وَهَدَانِي، وَكُلَّ بَلَاءٍ حَسَنٍ أَبْلَانِي،
الْحَمْدُ لِلَّهِ الرَّزَاقِ ذِي الْقُوَّةِ الْمَتِينِ، اللَّهُمَّ لَا تَنْزِعْ مِنَّا صَالِحًا عَظَمْتَنَا،
وَلَا صَالِحًا حَارَزْتَنَا، وَاجْعَلْنَاكَ مِنَ الشَّاكِرِينَ﴾

तर्जमा : तमाम ता'रीफें **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने मुझे खिलाया पिलाया और हिदायत अता फ़रमाई और हर अच्छी आज़माइश में आज़माया तमाम ता'रीफें **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो रज़ाक़ और मज़बूत व ताक़तवर है । और ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ! हम से अपनी अता कर्दा मनफ़अत और रिज़क़ वापस न लेना और हमें अपने शुक्र गुज़ार बन्दों में शामिल फ़रमा ले ।

﴿168﴾...हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि सरकारे मदीना, करारे क़ल्बो सीना صَلَّي اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जब खाना तनावुल फ़रमा लेते तो येह दुआ पढ़ते थे :

﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَطْعَمَ وَسَقَى وَسَوَّغَهُ وَجَعَلَ لَهُ مَخْرَجًا﴾

तर्जमा : तमाम ता'रीफें **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने खिलाया, पिलाया और इसे ठहराया और निकाला ।⁽²⁾

1.....الموطأ للامام مالك، كتاب صفة النبي ﷺ، باب جامع ما جاء في الطعام، الحديث:

١٧٨٧، ج ٢، ص ٤٢٥. دون قوله "لا حول".

2.....سنن ابى داؤد، كتاب الاطعمة، باب ما يقول الرجل...، الحديث: ٣٨٥١، ج ٣، ص ٥١٣.

सब से बड़ी तीन ने'मतें

﴿169﴾....हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “तीन ने'मतें सब से बड़ी हैं (1)....इस्लाम, जिस के बिगैर हर ने'मत ना मुकम्मल है। (2)....तन्दुरुस्ती, जिस के बिगैर ज़िन्दगी ना खुशगवार है और (3)....वोह मालो दौलत, जिस के बिगैर ज़िन्दगी गुज़ारना दुश्वार है।”⁽¹⁾

शुक्र ने'मतें बढ़ाता है

﴿170﴾....हज़रते सय्यिदुना सलाम बिन मुतीअ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ बयान करते हैं कि एक बार हम हज़रते सय्यिदुना जरीरी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की खिदमत में हाज़िर हुवे, आप का शुमार बसरा के मशाइख में होता है। उस वक़्त आप हज़ की सआदत पा कर वापस तशरीफ़ लाए थे। फ़रमाने लगे : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से हमें सफ़र में येह आज़माइश आई तो वोह आज़माइश आई। फिर कुछ देर बा'द फ़रमाया : मन्कूल है कि “ने'मतों को शुमार करना शुक्र से है।”⁽²⁾ (या'नी आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने आज़माइशों को भी ने'मत करार दिया)

शुक्रनए मा'रिफ़त

﴿171﴾....हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ एक ऐसे मुसीबत ज़दा के पास से गुज़रे जो अन्धा, कोढ़ी, लंगड़ा और बरस में मुब्तला था नीज़ उस का लिबास भी पूरा न था। लेकिन वोह कह रहा था : ﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى نِعْمَتِهِ﴾ **तर्जमा** : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत पर उस का शुक्र है। तो हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के साथ मौजूद शख़्स ने कहा : “तेरे पास कौन सी ने'मत बाकी

①.....حلیة الاولیاء، الرقم ۲۵۰ وھب بن منبہ، الحدیث: ۴۷۸۵، ج ۴، ص ۷۱.

②.....شعب الایمان للبیہقی، باب فی تعدید نعم اللہ، الحدیث: ۴۴۵۳، ج ۴، ص ۱۱۰.

बची है जिस पर तू **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का शुक्र कर रहा है ?” तो वोह शख्स बोला : “जरा अपनी निगाह उस शहर के बासियों (या’नी रहने वालों) की जानिब उठाओ और उन की कसरत को मुलाहज़ा करो क्या मैं इस बात पर **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का शुक्र अदा न करूं कि मेरे इलावा उन में किसी को भी **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की मा’रिफ़त हासिल नहीं ।”⁽¹⁾

ने’मत पर हम्दो सना शुक्रनए ने’मत है

﴿172﴾....हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अम्र **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाते हैं कि हमारे यहां बारिश हुई तो मैं ने गवनरि ताइफ़ सरी बिन अब्दुल्लाह को ख़ुतबा देते हुवे सुना कि : “ऐ लोगो ! **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के अता कर्दा रिज़्क़ पर उस का शुक्र करो ! क्यूंकि मुझे एक हदीसे पाक पहुंची है कि हुज़ूर सरापा नूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : “जब **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** अपने बन्दे को कोई ने’मत अता फ़रमाता है और बन्दा उस पर अपने रब **عَزَّوَجَلَّ** की हम्द करता है तो बेशक उस ने उस का शुक्र अदा कर लिया ।”⁽²⁾

शेरों ने कोई नुक्सान न पहुंचाया

﴿173﴾....अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अली **كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ** फ़रमाते हैं कि बख़्ते नसर **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के नबी हज़रते सय्यिदुना दानियाल **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** के पास आया और आप **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** को कैद करने का हुक्म दिया और फिर ख़ूब भूके प्यासे दो शेरों को आप **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** के साथ कूएं में डाल कर ऊपर से ढक दिया ।

①.....حلیة الاولیاء، الرقم، ۲۵ وھب بن منیہ، الحدیث: ۶۷۸۶، ج ۴، ص ۷۱.

②.....الدر المنثور، پ ۲، البقرة، تحت الاية ۱۵۲، ج ۱، ص ۳۷۳.

पांच दिन तक आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को कूएं में शेरों के साथ कैद में रखा। जब पांच दिन के बा'द खोला तो देखा कि हज़रते सय्यिदुना दानियाल عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام على نبينا وعليه الصلوة والسلام नमाज़ में मसरूफ़ हैं और दोनों शेर कूएं के एक कोने में बैठे हुवे हैं और उन्होंने ने आप को कोई नुक़सान नहीं पहुंचाया। बख़्ते नसर ने आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام से अर्ज़ की : “मुझे बताइये कि आप ने कौन सा ऐसा अमल किया जिस की वजह से शेरों के शर से महफूज़ रहे ?” इरशाद फ़रमाया : मैं ने (اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ की हम्दो सना में) येह कलिमात कहे थे :

﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَا يَنْسَى مِنْ ذِكْرِهِ، الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَا يَخِيبُ مَنْ رَجَاهُ، الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَا يَكِلُ مَنْ تَوَكَّلَ عَلَيْهِ إِلَّا إِلَىٰ غَيْرِهِ، الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هُوَ ثِقْتُنَا حِينَ تَنْقَطِعُ عَنَّا الْحَيْلُ، الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هُوَ رِجَاؤُنَا يَوْمَ يَسُوءُ ظَنُّنَا بِأَعْمَالِنَا، الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي يَكْشِفُ ضُرْرَنَا عَنْ كَرْبِنَا، الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي يَجْزِي بِالْإِحْسَانِ إِحْسَانًا، الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي يَجْزِي بِالصَّبْرِ نَجَاةً﴾

तर्जमा : तमाम ता'रीफें اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं, जो उस का जिक्र करता है वोह उसे सवाब व फज़ल से महरूम नहीं फ़रमाता। तमाम ता'रीफें اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं, जो उस से उम्मीद रखता है वोह उस को नाकाम व ना मुराद नहीं बनाता। तमाम ता'रीफें اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं, जो उस के इलावा किसी और पर भरोसा नहीं करता वोह उसे बे यारो मददगार नहीं छोड़ता। तमाम ता'रीफें اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं, जब हमारी तदबीरें ख़त्म हो जाती हैं वोही हमें सहारा देता है। तमाम ता'रीफें اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस दिन अपने आ'माल से हमारा यकीन उठ जाएगा उस दिन हमें उसी की रहमत की उम्मीद होगी। तमाम ता'रीफें اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो हमारी मुसीबत के वक़्त हम से तक्लीफ़ दूर करता है।

तमाम ता'रीफें **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के लिये हैं जो नेकी का बदला एहसान के साथ देता है। तमाम ता'रीफें **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के लिये हैं जो सब के बदले नजात अता फ़रमाता है।⁽¹⁾

आईना देखने की एक दुआ

﴿174﴾....हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बाकिर **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَافِرِ** फ़रमाते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, बि इज़्ने परवर दगार, दो आलम के मालिको मुख्तार **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** जब आईना देखा करते तो येह दुआ पढ़ते थे :

﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَنِي فَأَحْسَنَ خَلْقِي وَخَلَقَنِي وَرَزَانِ مِثِّي مَا شَانَ مِنْ غَيْرِي﴾

तर्जमा : तमाम ता'रीफें **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के लिये हैं जिस ने मुझे पैदा किया, मेरी सूरत और मेरे अख़लाक़ को बेहतरिन बनाया और मुझे ज़ीनत से नवाज़ा जब कि दूसरों को ऐब से।

﴿175﴾....हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन सीरीन **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمُنِينِ** फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इब्ने उमर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** ब कसरत आईना देखा करते थे और सफ़र में भी आईना उन के पास होता था। मैं ने अर्ज़ की : “इस की क्या वजह है? इरशाद फ़रमाया : “मैं देखता हूँ तो अपने चेहरे में ज़ीनत को पाता हूँ जब कि दूसरों के चेहरों में ऐब को पाता हूँ तो इस पर **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का शुक्र अदा करता हूँ।”⁽²⁾

बुरी आदतों से नजात पर शुक्र

﴿176﴾....हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान बिन उयैना **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं कि अहले कूफ़ा में से एक शख़्स की आदतें बहुत बुरी थीं। जब

①.....جمع الجوامع، مسند على بن ابي طالب، الحديث: ٦٤٢٨، ج ١٣، ص ١٨٧. دون

قوله ”ثم حبسه“ في الحب مع الاسدين“، ”قائماً“.

②.....شعب الايمان للبيهقي، باب في الملابس والاوناني، الحديث: ٦٤٩٣، ج ٥، ص ٢٣٣.

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** ने उसे उन बुरी आदतों से ख़लासी अता फ़रमाई तो उस ने बतौरै शुक्राना अपनी बांदी को आज़ाद कर दिया ।

मज़ीद बयान करते हैं कि “एक मरतबा मक्कए मुकर्रमा **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَوَّاد** में ख़ूब बारिश हुई जिस के सबब वहां के बाशिन्दों के मकानात गिर गए । हज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी रव्वाद **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَوَّاد** ने बतौरै शुक्राना अपनी कनीज़ को आज़ाद कर दिया क्यूंकि **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने उन के घर को गिरने से महफूज़ रखा था ।⁽¹⁾

एक क़दम पुल सिरात पर हो तो दूसरा जन्नत में

﴿177﴾...हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन अब्दुल्लाह बिन इब्ने मरयम **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم** से एक शख्स ने अर्ज़ की : “ने’मत का तमाम होना (या’नी कामिल व अक्मल ने’मत) क्या है?” तो आप ने फ़रमाया : “इस से मुराद येह है कि तेरा एक क़दम पुल सिरात पर हो और दूसरा जन्नत में ।

आंखें बन्द कर ले

﴿178﴾...हज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अब्दुल्लाह मुज़नी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَنَى** फ़रमाया करते थे : “ऐ इब्ने आदम ! अगर तू **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की ने’मतों की क़द्र जानना चाहता है जो उस ने तुझे अता फ़रमाई हैं तो अपनी आंखें बन्द कर ले ।”⁽²⁾

ज़ाहिराँ व बाय़ातने

﴿179﴾...**अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का फ़रमाने आलीशान है :

وَأَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعْمَهُ ظَاهِرًا وَبَاطِنًا

(प २१, त्फ़न: २०)

तर्जमए कन्ज़ुल इम़ान : और तुम्हें
भरपूर दीं अपनी ने’मतें ज़ाहिर और
छुपी ।

①.....حلیة الاولیاء، الرقم ۳۹۰ سفیان بن عیینة، الحدیث: ۱۰۸۲۹، ج ۷، ص ۳۵۳

②.....شعب الایمان للبیهقی، باب فی تعدید نعم اللّٰه، الحدیث: ۴۶۶۵، ج ۴، ص ۱۱۲

हज़रते सय्यिदुना मक़ातिल बिन हय्यान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمَنَّان से मुराद इस्लाम और بَاطِنَةٌ سے मुराद **अब्ब्लाह** عَزَّوَجَلَّ का तेरे गुनाहों की पर्दा पोशी करना है।” (मज़ीद तफ़्सीरी अक्वाल मा क़ब्ल सफ़हा 59 और 60 पर हाशिये में मुलाहज़ा कीजिये)

जहन्नमियों पर श्री एहसान

﴿180﴾....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन कासिम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि बेशक जहन्नमियों पर भी **अब्ब्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एहसान है और वोह इस तरह कि अगर **अब्ब्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहता तो उन्हें उस से भी सख़्त अज़ाब में मुब्तला फ़रमाता।⁽¹⁾

﴿181﴾....हज़रते सय्यिदुना मुतरिफ़ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाया करते थे कि “आफ़ियत पर शुक्र अदा करना मुझे मुसीबत पर सब्र करने से ज़ियादा महबूब है।”⁽²⁾

बरोजे क़ियामत रहमान एऒऒऒ के मुकर्रबीन

﴿182﴾....हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “जिन बन्दों में करम, सख़ावत, हिल्म, रहमत, शफ़क़त, भलाई, शुक्र और सब्र जैसी ख़स्लतें होंगी वोह क़ियामत के दिन रहमान एऒऒऒ के मुकर्रबीन में होंगे।”

मुसीबत ज़दा को देख कर पढ़ने की दुआ

﴿183﴾....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने किसी मुसीबत ज़दा को देख कर येह दुआ पढ़ी :

﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي عَافَانِي مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهِ، وَفَضَّلَنِي عَلَيْكَ وَعَلَى جَمِيعِ خَلْقِهِ تَفَضُّلاً﴾

①.....شعب الإيمان للبيهقي، باب في تعديد نعم الله، الحديث: ٤٥٧٧، ج ٤، ص ١٣٧.

②.....المرجع السابق، الحديث: ٤٤٣٧، ص ١٠٦.

तर्जमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस ने मुझे उस आफ़त से बचाया जिस में तुझे मुब्तला किया और उस ने मुझे तुझ पर और अपनी बहुत सी मख़्लूक पर बरतरी अ़ता फ़रमाई । तो उस ने इस (मुसीबत से हिफ़ाज़त की) ने'मत का शुक्र अदा कर लिया (और एक रिवायत में है कि उसे येह मुसीबत नहीं पहुंचेगी) ।⁽¹⁾

जिस्म और रिज़क़ जैसी अज़ीम ने'मतों का शुक्र

﴿184﴾...हज़रते सय्यिदुना अब्दुरहमान बिन जैद बिन अस्लम फ़रमाते हैं : “शुक्र, हम्द और इस की अस्ल और फुरुअ से अपना हिस्सा वुसूल करता है । पस बन्दे को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन अ़ता कर्दा ने'मतों को देखना चाहीये जो उस के जिस्म, कान, आंख, हाथ और पाउं वगैरा की सूरत में हैं । इस लिये कि उस के जिस्म पर कोई ऐसी चीज़ नहीं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत न हो । पस बन्दे पर लाज़िम है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता कर्दा जिस्मानी ने'मतों को उसी की इताअत व फ़रमां बरदारी में इस्ति'माल करे । फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की दूसरी ने'मतों को देखे जो रिज़क़ की सूरत में हैं । पस बन्दे पर लाज़िम है कि रिज़क़ में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता कर्दा ने'मतों को भी उसी की इताअत में खर्च करे । जिस ने ऐसा किया तो बेशक उस ने शुक्र, उस की अस्ल और फुरुअ से हिस्सा पा लिया ।⁽²⁾

शुक्र करने और न करने वालों का अन्जाम

﴿185﴾...हज़रते सय्यिदुना का'ब रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या में जिस बन्दे को अपनी कोई ने'मत अ़ता फ़रमाए, फिर

①..... كتاب الدعاء للطبراني، باب القول عند رؤية المبتلى، الحديث: ٨٠٠، ص ٢٥٤، بتغير.

②..... الدر المنثور، ٢، البقرة، تحت الآية: ١٥٢، ج ١، ص ٣٧١.

वोह उस पर **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** का शुक्र अदा करे और उस के सबब **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के लिये तवाजोअ करे तो **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** दुन्या में उस को उस ने'मत का नफ़अ अता फ़रमाएगा और इस की वज्ह से आख़िरत में उस का दरजा बुलन्द फ़रमाएगा और **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** दुन्या में किसी बन्दे को ने'मत अता करे लेकिन वोह न तो उस पर **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** का शुक्र अदा करे और न ही इस के सबब **اَلलّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के लिये तवाजोअ करे तो **اَلलّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** दुन्या में उसे न सिर्फ़ उस के नफ़अ से महरूम कर देगा बल्कि उस के लिये आग का एक तबका (दरजा) खोल देगा अगर चाहेगा तो उसे अज़ाब में मुब्तला फ़रमाएगा और चाहेगा तो मुआफ़ फ़रमा देगा।⁽¹⁾

महूज खाना, पीना और पहनना ही ने'मत नहीं

﴿186﴾....हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِيّ फ़रमाते हैं : जो फ़क़त खाने, पीने और लिबास ही को **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की ने'मत समझे तो यकीनन उस का इल्म कम और अज़ाब करीब है।⁽²⁾

दोनों में से अफ़ज़ल ने'मत कौन सी है ?

﴿187﴾....हज़रते सय्यिदुना हिशाम बिन सलमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنّان फ़रमाते हैं कि मैं सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِيّ और सय्यिदुना बक्र बिन अब्दुल्लाह मुजनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِيّ के पास बैठा हुवा था कि सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِيّ ने सय्यिदुना बक्र बिन अब्दुल्लाह मुजनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِيّ से फ़रमाया : “ऐ अबू अब्दुल्लाह ! आइये ! अपने भाइयों को वा'जो नसीहत कीजिये !”

①.....الدرالمنثور، ٢، البقرة، تحت الآية: ١٥٢، ج ١، ص ٣٧٣.

②.....الزهدي لابن مبارك، باب في التواضع، الحديث: ٣٩٧، ص ١٣٤. دون قوله “اولباس”.

पस उन्होंने ने **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** की हृन्दो सना की और नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहुरोबर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर दुरूद भेजने के बा'द फ़रमाया : **“اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** की क़सम ! मैं नहीं जानता कि मुझ पर और आप पर दो ने'मतों में से कौन सी अफ़ज़ल है ? क्या ने'मतों के जिस्म में जाने का रास्ता या उन के जिस्म से ख़ुरूज का रास्ता ? क्यूंकि (तक्लीफ़ देह होने की सूरत में) **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** उसे बतौरै एहसान हमारे जिस्म से बाहर निकाल देता है ।”

इस पर हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَوْبَى** ने फ़रमाया : **“ऐ बक्र बिन अब्दुल्लाह ! आप ने बड़ी उम्दा बात इरशाद फ़रमाई है । बेशक इस ने'मत का शुमार तो **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** की अज़ीम ने'मतों में होता है ।”**⁽¹⁾

पानी की ने'मत पर शुक्र लाज़िम है

﴿188﴾....उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिदीका **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا** फ़रमाती हैं कि जो बन्दा ख़ालिस (ठन्डा और मीठा) पानी पिये और वोह बिग़ैर तक्लीफ़ के (जिस्म में) दाख़िल हो और बिग़ैर तक्लीफ़ के बाहर भी निकल आए । तो इस पर शुक्र लाज़िम है ।⁽²⁾

क्वश ! मैं तेरी तरह होता

﴿189﴾....हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَوْبَى** ने फ़रमाया : **“येह ने'मत कितनी अज़ीम है कि मजे से पी जाती है और आसानी से निकाली जाती है । उस बस्ती का एक बादशाह था (जिसे पेशाब रुकने का मरज़ था) वोह अपने ख़ादिमों में से एक ख़ादिम को देखता कि**

①.....شعب الايمان لليبهقي، باب في تعديدنعم الله، الحديث: ٤٤٧٤، ج ٤، ص ١١٤.

②.....تاريخ مدينة دمشق لابن عساکر، الرقم ٤٤٥٥ ابراهيم بن عبدالمملك، ج ٧، ص ٤٢.

वोह मटके के पास आता, कूजे में पानी भर कर खड़े खड़े ग़टाग़ट पी जाता तो वोह बादशाह कहता : “काश ! मैं पानी पीने में तेरी तरह होता कि पी कर प्यास बुझाता । कितनी अज़ीम है येह ने’मत कि तू मजे से पीता है और आसानी से निकाल देता है ।” क्यूंकि जब वोह बादशाह पानी पीता था तो हर घूंट में उस के लिये कई मुसीबतें होती थीं ।⁽¹⁾

एक दाना का मक्तूब

﴿190﴾...हज़रते सय्यिदुना अली बिन अब्दुर्रहमान عَلَيْهِ وَحْمَةُ اللَّهِ الْمَنَّانُ बयान करते हैं कि एक दाना व अक्लमन्द शख्स ने अपने भाई के नाम मक्तूब लिखा : (जिस का मज़्मून येह है) “अम्मा बा’द ! ऐ मेरे भाई ! हम **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की इस क़दर ने’मतों के साथ सुब्ह करते हैं कि उन्हें शुमार नहीं कर सकते । हालांकि हमारी ना फ़रमानियां बहुत ज़ियादा हैं । पस हम नहीं जानते कि किस बात पर **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करें, मुसलसल मिलने वाली ने’मतों पर या इस बात पर कि उस ने हमारी बुराइयां छुपा रखी हैं ।”⁽²⁾

इब्ने सम्माक عَلَيْهِ وَحْمَةُ اللَّهِ الرَّزَّاقِ का मक्तूब

﴿191﴾...हज़रते सय्यिदुना उबादा बिन कलीब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इब्ने सम्माक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने मुझे मक्तूब लिखा : (जिस का मज़्मून येह था) “अम्मा बा’द ! मैं आप को इस हाल में मक्तूब लिख रहा हूं कि मैं मसरूर हूं और मस्तूर भी (या’नी मेरा हाल लोगों से छुपा है) और मैं इस वज्ह से फ़रेब में मुब्तला हूं । क्यूंकि मेरे गुनाहों को खुदाए सत्तार عَزَّوَجَلَّ ने छुपा रखा है मगर मेरा नफ़्स इस खुश फ़हमी में है कि वोह बख़्श दिये गए हैं और दूसरी

1.....شعب الايمان لليبهقي، باب في تعديد نعم الله، الحديث: ٤٦٧٥، ج ٤، ص ١١٤.

2.....تاريخ بغداد، الرقم ٥٢٥٢ عبد الله بن محمد، ج ١٠، ص ١٢٣.

المرجع السابق، الرقم ٧٠٥٢ منصور بن عمار، ج ١٣، ص ٧٥.

तरफ़ ने 'मतों की आजमाइश में हूँ कि उन पर इस तरह खुश हूँ जैसे मैं उन के हुकूक़ अदा कर रहा हूँ। काश ! मुझे इन मुअामलात का अन्जाम मा'लूम होता।" (1)

एक गोशा नशीन की हिक्वायत

﴿192﴾... एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي से अर्ज़ की गई : “यहां एक ऐसा शख्स है कि हम ने न कभी उस को किसी के पास बैठे देखा है और न किसी दूसरे को उस के पास। बल्कि वोह एक सुतून के पीछे तन्हा बैठा रहता है।” सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने फ़रमाया : “अब जब तुम उसे देखो तो मुझे बताना।” रावी कहते हैं कि एक दिन लोग उस के पास से गुज़र रहे थे, उस वक़्त सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي भी साथ थे। तो उन्होंने ने उस की तरफ़ इशारा करते हुवे कहा : “येही वोह शख्स है जिस के मुतअल्लिक हम ने आप को बताया था।” तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने उन लोगों को फ़रमाया : “तुम चलो मैं तुम्हारे पीछे आ जाऊंगा।” फिर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ उस शख्स के पास गए और पूछा : “ऐ **اَللّٰهُ** के बन्दे ! मैं देखता हूँ कि आप गोशा नशीनी को महबूब रखते हैं लेकिन किस वजह से आप लोगों से मेल जोल नहीं रखते ?” उस ने कहा : “वोह कितनी अजीब चीज़ है जिस ने मुझे लोगों से गाफ़िल कर दिया है।” तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “तो फिर चलें उस शख्स के हम नशीन बन जाते हैं जिस को हसन कहा जाता है।” उस ने कहा : “जिस शै ने मुझे लोगों और हसन से गाफ़िल कर रखा है वोह कितनी अजीब है !” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने उस से पूछा : आख़िर वोह कौन सी चीज़ है जिस ने

①.....حلیة الاولیاء، الرقم ٤٠١ محمد بن صبیح، الحدیث: ١١٩٥٢، ج ٨، ص ٢٢٤.

आप को लोगों और हसन से बे तअल्लुक कर दिया है?" उस ने कहा :
 "मेरे शबो रोज़ गुनाह और ने'मत के दरमियान बसर होते हैं और मेरा
 ज़ेहन है कि अपने आप को लोगों से दूर रख कर गुनाहों की मुआफ़ी
 मांगता रहूं और **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** की ने'मतों का शुक्र अदा करता रहूं।"
 हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَرِيْمِ** ने फ़रमाया : "मेरे
 नज़दीक आप हसन से भी ज़ियादा दाना हैं बस आप अपने मा'मूलात
 को जारी रखें।"⁽¹⁾

ईद किस के लिये ?

﴿193﴾....हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन यज़ीद बिन ख़ुनैस **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ**
 बयान करते हैं कि एक मरतबा सय्यिदुना वुहैब **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने ईद के
 दिन लोगों को ईदगाह से वापस पलटते हुवे देखा, वोह आप के पास
 से ईद के उम्दा लिबास पहने हुवे गुज़र रहे थे, आप कुछ देर तक तो
 उन्हें देखते रहे फिर इरशाद फ़रमाया : "**اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** मुझे और
 तुम सब को मुआफ़ फ़रमाए ! अगर तुम्हें यकीन है कि **اَللّٰهُ**
عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारी इस महीने (की इबादत) को क़बूल फ़रमा लिया है,
 फिर तो तुम्हें इस ज़ैबो ज़ीनत को तर्क कर के इस के शुक्र में मसरूफ़
 हो जाना चाहिये था और अगर सूरते हाल दूसरी है या'नी तुम्हें इस
 बात का अन्देशा है कि तुम्हारे आ'माल क़बूल नहीं किये गए होंगे,
 फिर तो तुम्हें आज की गाफ़िल कर देने वाली रौनकों और ज़ैबो ज़ीनत
 से नज़रें फेर लेने की ज़ियादा ज़रूरत है।"⁽²⁾

①.....صفة الصفوة، الرقم ٥٧٢ عابد آخر، ج ٢، الجزء الرابع، ص ١١.

②.....شعب الایمان للبيهقي، باب في الصيام، الحديث: ٣٧٢٦، ج ٣، ص ٣٤٦.

अता की। मैं भूका था, तेरा शुक्र है तू ने मुझे शिकम सैर किया। मैं बरहना था, तेरा शुक्र है तू ने मुझे लिबास पहनाया। मैं मुसाफ़िर था, तेरा शुक्र है तू ने अपनी रहमत मेरे शामिले हाल कर दी। मैं मन्ज़िल से दूर था, तेरा शुक्र है तू ने मुझे मन्ज़िल तक पहुंचा दिया। मैं प्यादा था, तेरा शुक्र है तू ने मुझे सुवारी दी। मैं बीमार था, तेरा शुक्र है तू ने मुझे शिफ़ा अता फ़रमाई। मैं मांगता हूँ, तेरा शुक्र है तू मुझे अता फ़रमाता है। मैं दुआ मांगता हूँ, तेरा शुक्र है तू क़बूल फ़रमाता है। बस ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! तेरा शुक्र ही शुक्र है।⁽¹⁾

उस की फ़राख़ ने'मतों का शुक्र अदा करो

﴿196﴾...हज़रते सय्यिदुना अबू तालिब ज़ैद बिन अख़ज़म नबहानी फ़रमाते हैं : (ऐ इन्सान !) उस ज़ात ने तेरे नाक की लकीर खींच कर उसे सीधा किया फिर उसे अच्छी तरह से मुकम्मल किया और तेरी आंख की पुतली को गर्दिश दी फिर उस को ढकते पपोटे और ढलकती पलकों में महफूज़ किया और तुझे एक हालत से दूसरी हालत में मुन्तक़िल किया और तेरे वालिदैन को तुझ पर नर्मी व शफ़क़त करने वाला बनाया। पस उस की ने'मतें तुझ पर ब कसरत हैं और उस के एहसानात तुझे घेरे हुवे हैं।⁽²⁾

सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي के कलिमाते शुक्र

﴿197﴾...हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने अपनी मजलिस में कहा :

﴿اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ بِمَا بَسَطْتَ فِي رِزْقِنَا، وَأَظْهَرْتَ أَمْنَنَا، وَأَحْسَنْتَ مُعَافَاتِنَا، وَمِنْ كُلِّ مَا سَأَلْنَاكَ مِنْ صَالِحِ أَعْطَيْتَنَا، فَلَكَ الْحَمْدُ بِالإِسْلَامِ، وَلَكَ الْحَمْدُ بِالإِهْلِ وَالْأَهْلِ، وَالْمَالِ، وَلَكَ الْحَمْدُ بِالإَيْقِينِ وَالْمُعَافَاةِ﴾

①.....तारिख़ मदीने دمشق لابن عساکر، الرقم ۷۲۱۷ محارب بن دثار، ج ۵۷، ص ۶۲، ۶۳.

②.....شعب الایمان للبيهقي، باب فی تعدید نعم الله، الحدیث: ۴۴۶۴، ج ۴، ص ۱۱۲، بتغییر.

तर्जमा : ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ! तेरा इस पर शुक्र है कि तू ने हमारा रिज़्क़ वसीअ़ फ़रमाया, हमें अम्न दिया, बेहतरीन आफ़ियत अ़ता फ़रमाई और जो नेक सुवाल हम ने किया तू ने अ़ता फ़रमाया, पस ने'मते इस्लाम पर तेरा शुक्र है। अहलो इयाल अ़ता फ़रमाने पर तेरा शुक्र है और यकीनो आफ़ियत पर भी तेरा शुक्र है।

ने'मतों की मा'रिफ़त से कासिर

﴿198﴾....हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन सालेह तमीमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ जब इस आयते ने बयान किया कि एक आलिमे दीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ जब इस आयते मुबारका की तिलावत करते :

وَإِنْ نَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا نُحْصُوْهَا

(प १३, अब्राहिम: ३६)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर **اَللّٰهُ** की ने'मतें गिनो तो शुमार न कर सकोगे।

तो कहते : पाक है वोह ज़ात जिस ने किसी को भी अपनी ने'मतों की मा'रिफ़त इस से ज़ियादा नहीं दी कि "वोह उन ने'मतों की मा'रिफ़त से कासिर है।" जैसा कि उस ने किसी को भी अपने इदराक के मुआमले में इस से ज़ियादा इल्म नहीं दिया कि "वोह उस का इदराक नहीं कर सकता।" पस उस ने अपनी ने'मतों की मा'रिफ़त से कासिर होने की मा'रिफ़त को शुक्र करार दे दिया जैसा कि उस ने बन्दों के इस इल्म कि "वोह **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ का इदराक नहीं कर सकते।" की येह जज़ा अ़ता फ़रमाई कि उस को ईमान करार दे दिया क्योंकि वोह जानता है कि बन्दे उस से आगे नहीं बढ़ सकते।⁽¹⁾

①.....شعب الايمان للبيهقي، باب في تعدد نعم الله، الحديث: ٤٦٢٤، ج ٤، ص ١٥٢.

﴿199﴾....हज़रते सय्यिदुना सालेह बिन मुस्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفَّارِ फ़रमाते हैं कि मैं नहीं जानता कि मुझ पर फैली हुई **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की मौजूदा ने'मतें अफ़ज़ल हैं या उस की वोह ने'मतें अफ़ज़ल हैं जो मुझ से जाइल हो गई।”⁽¹⁾

साबिरो शाकिर कौन ?

﴿200﴾....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल आस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने इमामुस्साबिरीन, सय्यिदुशशाकिरीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को येह इरशाद फ़रमाते सुना : “दो ख़स्लतें ऐसी हैं कि अगर किसी बन्दे में पाई जाएं तो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उसे साबिरो शाकिर लिख देता है और जिस में न हों तो उसे साबिरो शाकिर नहीं लिखता। जिस ने दीनी कामों में अपने से बेहतर किसी शख्स को देख कर उस की इक्तिदा की और जिस ने दुन्या के मुआमले में अपने से किसी कमतर को देख कर **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़ल पर उस का शुक्र अदा किया तो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उसे साबिरो शाकिर लिख देता है और जिस ने दीनी उमूर में अपने से कमतर और दुन्यावी उमूर में बरतर को देखा और फिर जिन ने'मतों से महरूम है उन पर अफ़सोस किया तो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उसे साबिरो शाकिर नहीं लिखेगा।”⁽²⁾

जन्नत में घर

﴿201﴾....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि चार ख़स्लतें ऐसी हैं अगर किसी में पाई जाएं तो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ जन्नत में उस के लिये एक घर बना देगा :

①.....الزهد لابن مبارك، باب ماجاء في التوكل، الحديث: ٤٢٧، ص ١٤٣.

②.....سنن الترمذی، کتاب صفة القيامة، باب ٥٨، الحديث: ٢٥٢٠، ج ٤، ص ٢٢٩.

- (1)....जो अपने मुआमले की हिफ़ाज़त के वक़्त ﴿لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ﴾ कहे ।
 (2)....जब मुसीबत पहुंचे तो ﴿إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ﴾ कहे ।
 (3)....जब कुछ मिले तो ﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ﴾ कहे या'नी शुक्र अदा करे ।
 (4)....जब कोई गुनाह कर बैठे तो ﴿اسْتَغْفِرُ اللَّهَ﴾ कहे या'नी तौबा करे ।⁽¹⁾

हर फ़ैल का शुक्र

﴿202﴾....हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد** फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना नूह **عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** **اَللّٰهُمَّ** के इन्तिहाई शुक्र गुज़ार बन्दे थे, आप जब खाते **اَللّٰهُمَّ** का शुक्र बजा लाते, जब पीते **اَللّٰهُمَّ** का शुक्र अदा करते और जब एक क़दम चलते उस पर भी **اَللّٰهُمَّ** का शुक्र अदा करते और जब कोई शै पकड़ते तब भी **اَللّٰهُمَّ** का शुक्र अदा करते । चुनान्चे, **اَللّٰهُمَّ** ने उन की ता'रीफ़ फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाया :

﴿اِنَّهُ كَانَ عَبْدًا شَكْرًا﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इमन : बेशक वोह

(प १०५, १०६, १०७)

बड़ा शुक्र गुज़ार बन्दा था ।⁽²⁾

हर काम के बा'द **اَلْحَمْدُ لِلَّهِ** कहते

﴿203﴾....हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन का'ब क़रज़ी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना नूह **عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** जब खाना तनावुल फ़रमाते तो **اَلْحَمْدُ لِلَّهِ** पढ़ते, जब पानी नोश फ़रमाते तो **اَلْحَمْدُ لِلَّهِ** पढ़ते, जब कपड़ा पहनते तो **اَلْحَمْدُ لِلَّهِ** पढ़ते, जब सुवार

①.....माहो رواة نعيم بن حماد في نسخة عن ابن المبارك، باب في التهليل.....الخ، الحديث:

②.....الزهدي لابن مبارك، باب ذكر رحمة الله تبارك وتعالى، الحديث: ९४, ३२९.

होते तो ﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ﴾ पढ़ते। बस **اَللّٰهُ** ने उन का नाम ही शुक्र गुज़ार बन्दा रख दिया।⁽¹⁾

शुक्रानए ने'मत में ना फ़रमानी न की जाए

﴿204﴾...किसी हकीम व दाना शख़्स का कौल है कि अगर **اَللّٰهُ** अपनी ना फ़रमानी पर अज़ाब न दे तो उस की ने'मत के शुक्राने में उस की ना फ़रमानी भी न की जाए।⁽²⁾

تمت بالخیر



۷۸۶
مدینه
۹۲

﴿ ग़ीबत के ख़िलाफ़ जंग ! जारी रहेगी ﴾

﴿ न ग़ीबत करेंगे न सुनेंगे ﴾

إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ

1.....الزهد للامام احمد بن حنبل، قصة نوح عليه السلام، الحديث: ۲۸۱، ص ۸۹.

2.....شعب الايمان للبيهقي، باب في تعديد نعم الله، الحديث: ۴۵۴۸، ج ۴، ص ۱۳۰.

माخذومراجع

مطبوعه	مصنف / مؤلف	کتاب
مکتبه برکات المدینہ	کلام باری تعالیٰ	قرآن مجید
مکتبه برکات المدینہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۱۳۴۰ھ	ترجمہ قرآن کترالایمان
دارالفکر بیروت ۱۴۰۳ھ	امام جلال الدین سیوطی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۹۱۱ھ	تفسیر الدر المنثور
دارالکتاب العلمیہ ۱۴۲۰ھ	ابو جعفر محمد بن جریر طبری رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۳۱۰ھ	تفسیر الطبری
دارالفکر بیروت ۱۴۲۰ھ	ابو عبداللہ محمد بن احمد قرطبی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۶۷۱ھ	الجامع الاحکام
دار السلام ریاض ۱۴۲۱ھ	امام مسلم بن حجاج قشیری نیشاپوری رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۶۱ھ	صحیح مسلم
دار السلام ریاض ۱۴۲۱ھ	امام ابو داؤد سلیمان بن اشعث سجستانی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۷۵ھ	سنن أبي داود
دار السلام ریاض ۱۴۲۱ھ	امام محمد بن عیسیٰ ترمذی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۷۹ھ	سنن الترمذی
دار السلام ریاض ۱۴۲۱ھ	امام احمد بن شعیب نسائی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۳۰۳ھ	سنن النسائی
دار السلام ریاض ۱۴۲۱ھ	امام محمد بن یزید القزوی ابن ماجہ رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۷۳ھ	سنن ابن ماجه
دارالکتاب العلمیہ ۱۴۱۱ھ	امام احمد بن شعیب نسائی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۳۰۳ھ	السنن الكبرى
دارالمعرفہ ۱۴۲۰ھ	امام مالک بن انس رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۱۷۹ھ	الموطأ
دارالفکر بیروت ۱۴۱۴ھ	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۴۱ھ	المسند
دار الغد الحدید ۱۴۲۶ھ	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۴۱ھ	الزهد
المکتب الاسلامی ۱۴۰۸ھ	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۴۱ھ	العلل ومعرفة الرجال
دار احیاء التراث ۱۴۲۲ھ	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۳۶۰ھ	المعجم الكبير
دارالکتاب العلمیہ ۱۴۲۰ھ	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۳۶۰ھ	المعجم الاوسط
دارالکتاب العلمیہ ۱۴۲۱ھ	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۳۶۰ھ	کتاب الدعاء
دارالکتاب العلمیہ ۱۴۲۱ھ	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۴۵۸ھ	شعب الایمان
موسوالکتاب الثقافیہ ۱۴۱۷ھ	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۴۵۸ھ	الزهد الكبير للبيهقي
مکتبہ السوادی جلد ۱۴۱۳ھ	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۴۵۸ھ	الاسماء والصفات
دارالکتاب العلمیہ ۱۴۱۸ھ	امام الحافظ ابو نعیم اصفہانی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۴۳۰ھ	حلیۃ الاولیاء
دارالمعرفہ ۱۴۱۸ھ	امام ابو عبداللہ محمد بن عبداللہ الحاکم رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۴۰۵ھ	المستدرک
دارالکتاب العلمیہ ۱۴۲۱ھ	امام حافظ ابوبکر عبدالرزاق بن ہمام رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۱۱ھ	المصنف
دارالفکر بیروت ۱۴۱۴ھ	حافظ عبداللہ محمد بن ابی شیبہ العیسیٰ رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۳۵ھ	المصنف
دارالکتاب العلمیہ ۱۴۱۸ھ	امام ابویعلیٰ احمد بن علی موصلی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۳۰۷ھ	مسنن ابی یعلیٰ
دارالکتاب العلمیہ ۱۴۱۸ھ	امام عبداللہ بن المبارک مرزوی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۱۸۱ھ	الزهد

الزهّد	هندابن سرى كوفى رحمة الله عليه متوفى ٢٤٣هـ	دارالعلماء للكتاب الاسلامى ١٤٠٦هـ
الفردوس بماثور الخطاب	حافظ شيرويه بن شهر داربن شيرويه ديلمى رحمة الله عليه متوفى ٥٠٩هـ	دارالكتب العلمية ١٤٠٦هـ
كتاب الجامع لمعمر	امام حافظ معمر بن راشد اذدى رحمة الله عليه متوفى ١٥٣هـ	دارالكتب العلمية ١٤٢١هـ
تاريخ مدينة دمشق	امام ابن عساکر رحمة الله عليه متوفى ٥٧١هـ	دارالفکر بیروت ١٤١٥هـ
جمع الجوامع	امام جلال الدين عبدالرحمن بن ابى بكر سيوطى رحمة الله عليه متوفى ٩١١هـ	دارالكتب العلمية ١٤٢١هـ
الطبقات الكبرى	محمد بن سعد بن منيع هاشمى بصري رحمة الله عليه متوفى ٢٣٠هـ	دارالكتب العلمية ١٤١٨هـ
الکامل فى ضعفاء الرجال	امام ابو احمد عبد الله بن عدى جرجاني رحمة الله عليه متوفى ٣٦٥هـ	دارالكتب العلمية ١٤١٨هـ
تاريخ بغداد	امام ابو بكر احمد بن على خطيب بغدادى رحمة الله عليه متوفى ٤٦٣هـ	دارالكتب العلمية ١٤١٧هـ
طبقات حنابلة	امام ابو الحسن محمد بن محمد الحنبلى رحمة الله عليه متوفى ٥٢٦هـ	دارالكتب العلمية ١٤١٧هـ
جامع بيان العلم وفضله	الامام الحافظ ابن عبد البر قرطبي رحمة الله عليه متوفى ٤٦٣هـ	دارالكتب العلمية ١٤٢٨هـ
صفة الصفوة	امام ابو الفرج ابن جوزى رحمة الله عليه متوفى ٥٩٧هـ	دارالكتب العلمية ١٤٢٣هـ
بهجة المجالس	امام يوسف بن عبد الله بن محمد ابن عبد البر رحمة الله عليه متوفى ٤٦٣هـ	الکتاب الشاملة
فضيلة الشکر	ابو بكر محمد بن جعفر بن محمد بن الخطيب رحمة الله عليه متوفى ٣٢٧هـ	دارالفکر دمشق ١٤٠٢هـ
المجالسة وجواهر العلم	ابو بكر احمد بن مروان دینورى رحمة الله عليه متوفى ٣٣٣هـ	دارالكتب العلمية ١٤٢١هـ
ماهو رواة نعيم بن حماد	ابو عبد الله نعيم بن حماد رحمة الله عليه متوفى ٢٢٨هـ	دارالكتب العلمية



مَدَنِي क़ाफ़िलों और फ़िक्रे मदीना की बहारे

“दा’वते इस्लामी” के सुन्नतों भरे “मदनी क़ाफ़िलों” में सफ़र और रोज़ाना “फ़िक्रे मदीना” के ज़रीए “मदनी इन्आमात” का रिसाला पुर कर के हर मदनी (इस्लामी) माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के (दा’वते इस्लामी के) ज़िम्मादार को जम्अ करवाने का मा’मूल बना लीजिये ।
 اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से “पाबन्दे सुन्नत” बनने, “गुनाहों से नफ़रत” करने और “ईमान की ह़िफ़ाज़त” के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा ।

नेक नमाजी बनने के लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाजे मगरिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ﴿﴾ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आशिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ﴿﴾ रोज़ाना जाएज़ा लेते हुए नेक आ'माल का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक्सद : “मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है। اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ ” अपनी इस्लाह के लिये “नेक आ'माल” पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये “मदनी क़ाफ़िलों” में सफ़र करना है। اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ

